

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180928

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University

Call No. H S 1.6

Accession No.

Author R L Z

G. H. 25 44

Title

This book should be returned on or before the date marked below

--	--	--	--

झंकार

[दूसरे महायुद्ध (१९३९) से १९५० तक की
प्रसिद्ध उर्दू कविताओं का संकलन]

सम्पादक

रघुपति महाय 'फ़िग़क़'

हिन्दुस्तानी कलचर .सोसाइटी
इलाहाबाद.

मेक्रेटरी
हिन्दुस्तानी कलचर सौसाइटी
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

पहली बार, 1951
क्रीमन तीन रुपया

नया हिन्द प्रेस,
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

बड़ शायरी

हिन्दी पढ़े लिखे लोगो में जितनी बेचैनी थी जितना शौक उर्दू कविता और उर्दू साहित्य पढ़ने के लिये आज पैदा हो गया है उतना शायद पहले कभी नहीं हुआ था हिन्दी वालों पर यह बात खुलती जा रही है कि जिस खड़ी बोली की बुनियाद पर वह हिन्दी का महल खड़ा करना चाहते हैं उस खड़ी बोली का सब से जगमगाता हुआ रूप उर्दू वालों ही की रचनाओं में नज़र आता है. संस्कृत शब्दों के सवाल को अगर हम थोड़ी देर के लिये भुला दें तो लगभग पचास हजार शुद्ध हिन्दी (तद्भव और देशज) शब्द और अनगिनत हिन्दी मुहावरे और टक्काली हिन्दी की जैसी मिसालें और जितना ज़्यादा प्रयोग में पाते हैं उतना हिन्दी में भी नहीं पाते. लोग यह समझने लगे हैं कि हिन्दी जानने के लिये उर्दू जानना ज़रूरी हो गया है. आज अगर सलाह से उर्दू कविता और उर्दू गद्य के वह हिस्से चुने जायें जो सहल और टक्काली हैं तो चार पाँच सौ किताबें नागरी हफ़ों में छापी जा सकती हैं. इसके अलावा उर्दू शायरी और नज़्म में जो अरबी फ़ारसी शब्द आ जाते हैं उनमें भी आधे ऐसे हैं बल्कि आधे से बहुत ज़्यादा जो अनपढ़ आदमी भी समझते और बोलते हैं. उर्दू के ज़रिये हिन्दी किस आसानी से आ जाती है इसकी मिसाल पंजाब के वह दस लाख शरणार्थी हैं जिनकी अपनी भाषा पंजाबी है लेकिन जिन्होंने उर्दू सीख ली थी. यह दस लाख मर्द, औरत, बूढ़े, बच्चे और हर हँसियत और पेशे वाले पंजाबी हमारे सूबे में आते, ही, जहाँ तक बोली का सवाल है, हम लोगों में घुल मिल गए. हमारे सूबे के अनपढ़ आदमी और ग़ाली हिन्दी जानने वाले सब के सब उनकी पूरी बात चीत समझने लगे और यह लोग भी हमारी पूरी बात चीत

समझने लगे. अगर यह लोग हिन्दी सीखते, पन्त, निराला, प्रसाद और महादेवी वर्मा की हिन्दी से या हिन्दी के मशहूर गद्य लेखकों से, तो यह किसी तरह किताबी हिन्दी बोलकर अपना काम हमारे सूबे में चला नहीं सकते थे. हिन्दी वह नहीं है जो हिन्दी के बड़े साहित्यकार लिखते हैं और जो किताबों में दफ़न है. असली हिन्दी साहित्य वह है जो किसी लिपि में लिखा जाय लेकिन जिसे पढ़कर वह लोग जिनकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं है, उन करोड़ों आर्दामथों में बेखटके हर तरह की बात चीत कर सकें जिनकी मातृ भाषा हिन्दी है

इसमें शक नहीं कि उर्दू साहित्य में ठेठ हिन्दी का ठाठ नज़र आने हुए भी कई अवसर पर कठिन अरबी फ़ारसी शब्द आ जाते हैं और कहीं कहीं ख़याल और बयान का साँचा भी फ़ारसी का सा होता है. लेकिन इसके खिलाफ़ उर्दू साहित्यकारों में शुरू से एक बगावत का भाव भी काम रहा है. इधर एक और बात हो गई है जिसने उर्दू को बोल चाल

...सा से बहुत करीब कर दिया है. वह बात यह थी की उर्दू साहित्यकारों ने मुट्ठी भर उर्दू पढ़े लिखे लोगों से ही अपना नाता रिश्ता बनाए रखना नहीं चाहा बल्कि उन करोड़ों किसानों, मज़दूरों और दूसरे श्रम जीवियों तक भी अपनी आवाज़ को पहुँचा देना चाहा जो शीन काफ़ और ऐन ग़ैन वाली उर्दू न बोलते हैं न समझते हैं. भाषा, भाव, विचार और विशय उर्दू साहित्य में बदलने लगे. आए दिन की ज़िन्दगी उर्दू साहित्य में उजागर होने लगी. यहाँ भी उर्दू हिन्दी से बाज़ी मार ले गई. हिन्दी में सादा और टक्साली बोली बहुत अटक अटक कर आई और आ रही है. उर्दू में देखते देखते काया पलट हो गई. उर्दू के जन्म दिन ही से सादगी के लिये एक हुमक उर्दू साहित्यकारों में थी ही और अगरचे कई अवसरों पर अरबी फ़ारसी उर्दू का दामन पकड़ लेती थी लेकिन उर्दू साहित्यकार रह रह कर किताबी उर्दू फ़ारसी से अपना दामन छुड़ाने की भी कोशिश करते रहे. बोल चाल की अरबी फ़ारसी की तो बिलकुल वही हैसियत है जो शुद्ध हिन्दी शब्दों और मुहावरों की है.

हाँ तो पिछले दस बारह बरसों से हिन्दुस्तान के जीवन में क्रान्तिकारी शक्तियाँ काम करने लगीं और साथ ही उर्दू शायरी ने भी करवट बदली. सन् २० से लगभग चौथाई सदी तक के ज़माने को गांधी युग कहा जा सकता है. इस पचीस बरस में जहाँ तक साहित्य की उपज का सवाल है गांधी युग और गांधीवाद लगभग बंजर साबित हुए. इस युग में बहुत जानदार साहित्य पैदा हुआ लेकिन गांधी युग गांधीवाद के सहारे नहीं पैदा हुआ. सन् ३० से दस बारह बरस तक हमारे साहित्य में गांधीवाद सुधारवाद के रूप में कुछ कुछ काम करता हुआ नज़र आता है. लेकिन इसके बाद से जो सबसे अधिक शक्ति और प्रेरणा भारतीय साहित्य में जोर मारती हुई दिखाई देती है वह साम्यवाद और रूस की क्रान्ति है. अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ इसके बाद ही देश भर में स्थापित हो गया जिसका पहला इजलास लखनऊ में अब से १५ सोलह बरस पहले हुआ प्रेमचन्द के नेतृत्व और सभापतित्व में, दूसरा इजलास कलकत्ते में हुआ जिनके सभापति संसार के महान साहित्यकार श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर थे.

यह बात विचारनीय है कि लगभग इसी ज़माने में कांग्रेस के सभापति के आसन से श्री जवाहर लाल नेहरू और उनके बाद नेता जी मुभाश चन्द्र बोस जो भाशन देते हैं उसमें रूस की क्रान्ति और साम्यवाद के आदर्श आद्योपान्त सराहे जाते हैं. गांधी जी अन्तिम समय तक देश के एक मात्र नेता ज़रूर रहे लेकिन गांधीवाद का एक मात्र सहारा हमारे दिल और दिमाग नहीं ले सकते थे. सन् ३६ में जब दूसरा महायुद्ध छिड़ा, उसके पहले ही से एक क्रान्तिकारी यथार्थवाद और आदर्शवाद हमारे साहित्य में नई तड़प और नया उभार पैदा करने लगा था. वर्गों का संघर्ष और महाजनी प्रथा या जागीरदारी प्रथा के विरोध में जनता की प्रतिक्रिया हमारे साहित्य में प्रकट होने लगी थी. किसानों का व्यवसायिक जीवन, उनका घरेलू जीवन, उनकी जिन्दगी की वीरानी, उनके बच्चों औरतों की दारुन दशा, मज़दूरों के कारख़ानों, चालों और कुटुम्बों का विवरणपूर्ण चित्रण,

मध्यवर्ग के जीवन की नाजुक हालतें, उच्चवर्ग के जीवन की ऐसी तस्वीरें जिनसे दूसरे वर्ग वालों पर जो जुल्म हो रहे हैं वह उजागर हो जायें या उनकी तरफ़ तीव्र संकेत होते रहे, यह सब बातें एक बाढ़ की तरह भारतीय साहित्य में आने लगीं। जब दूसरा महायुद्ध सन् ३६ में शुरू हो गया तो हमारे साहित्य का मैदान और भी फैल गया और उसमें एक विश्व चेतना आने लगी। अब हमारे साहित्यकार ससार भर की प्रगतिशील शक्तियों से अपना सम्बन्ध समझने लगे और संसार की हानिकारक और घातक शक्तियों से अपना विरोध समझने लगे। साथ ही साथ भारत के जनसाधारण का जीवन और उसका ऐतहासिक महत्व और गहरे रूप से हमारे साहित्य में प्रकट होने लगा। कितनी कविताएँ और कहानियाँ रूस, मार्क्स, लेनिन, चीन, कोरिया, नाज़ीवाद, साम्राज्यवाद और समाजवाद ऐसे विषयों पर रची जाने लगीं। किसी विशेष सीमित और साधारण विषय पर भी अगर कोई रचना इस ज़माने में की गई तो उसमें विश्व शक्तियों के संघर्ष की अनेक भूलकियाँ नज़र आ जाती थीं।

एक भारी नतीजा इस सब का यह हुआ कि हिन्दी और उर्दू की शब्दावली बहुत तेज़ी से मादगी की तरफ़ और जनता की बोल चाल की तरफ़ (जहाँ उर्दू हिन्दी का भगड़ा कभी नहीं रहा है) बढ़ने लगी। उर्दू शायरों की रचनाएँ हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में छपने लगीं और हिन्दी वालों ने उन्हें सौ फीसदी हिन्दी समझा और माना। कुछ हिन्दी लेखकों की रचनाएँ उर्दू वालों में प्रचलित हो गईं। आज एक ऐसी सूरत पैदा हो गई है कि दरजनों उर्दू और हिन्दी लेखकों की रचनाओं में तमीज़ करना मुश्किल हो गया है कि इन्हें उर्दू रचना समझा जाय या हिन्दी रचना। बात यह है कि जब उर्दू या हिन्दी के साहित्यकार ऐसी रचनाएं करेंगे जिन्हें करोड़ों अनपढ़ लोगों तक पहुँचना है और जिन्हें करोड़ों दिलों में घर करना है तो किताबी उर्दू या हिन्दी से काम चल ही नहीं सकता। यह बात भी प्रकट होने लगी कि अच्छे साहित्यकारों और अनपढ़ों की बोल चाल

में भी चकाचौध पैदा कर देने वाली जगमगाहट पैदा की जा सकती है और उच्च साहित्यिकता या अलंकार कूट कूट कर भरा जा सकता है भाषा गँवारों की और चमत्कार कालिदास का, दोनों का एक ही रचना में मौजूद होना मुमकिन हो गया है. यह बात भी जाहिर हुई कि जिसे हम अब तक ऊँची साहित्यिक भाषा समझते थे उसमें थका देने वाला एक मुरा पन आ जाता था और जनता की भाषा में अनगिनत अद्भुत शैलियों के पैदा होने की सम्भावना रहती है. आप इस किताब की एक एक कविता को जब पढ़ेंगे तो देखेंगे कि उर्दू शायरों ने ऐसी भाषा लिखी है जो आपके लिये हिन्दी शायरों की रचनाओं से सौ गुना ज़्यादा सहज, सुगम, सुन्दर और उच्च कोटि की है. इन कविताओं में जितने शब्दों को आप न समझेंगे उनके अर्थ देदिये गए हैं. लेकिन इन से कहीं अधिक शब्द हिन्दी कविताओं में ऐसे आते हैं जिन्हें आप नहीं समझते और तब भी वह कविताएँ न इन कविताओं की तरह मुहावरेदार होती हैं न प्रभावशाली होती हैं और न इतनी सुन्दर या महान होती हैं. इन कविताओं में शैलियों की रंगा रंगी इन्द्रधनुष या बसन्त में भी बढ़कर है. स्वर और ध्वनियाँ और कला की अनेक छटाएँ ससार के ऊँचे साहित्य की याद दिलाती हैं. पिछले पन्द्रह बरस में उर्दू साहित्यकारों ने जो काव्य रचना की है उसके सुन्दर हिस्से को अगर सब का सब छपा जाय तो लगभग पाँच हजार पृष्ठों में वह छप सकेगी और हिन्दी से भी बढ़कर उनकी भाषा हिन्दी होगी. हिन्दी के बहुत से साहित्यकार, शिक्षक और अध्यापक और लेखक भी यह कहने लगे हैं कि उर्दू की ऐसी रचनाएँ सरासर हिन्दी हैं और इन्हें नागरी लिपि में न छापना हिन्दी को असाधारण हानि पहुँचायगा. यह किताब इस सिलसिले की पहली कड़ी है और इसके छपने के बाद ही इस सिलसिले की दूसरी कड़ियाँ आपके सामने आयेंगी. दूसरी बात जो इस किताब में आप पाएँगे वह विषयों और शीर्षकों का नया पन और उनकी भरमार है. देखिये तो, कैसे कैसे विषय सुन्दर कविता बनकर ज़िन्दगी को आईना दिखा रहे हैं. यह खयाल हमेशा के लिये मिट जायगा कि कविता उसी जीवन की

चित्रकारी है जो फूलों की सेज पर विश्राम करता है. खून पसीने की ज़िन्दगी, धूल में अटी हुई ज़िन्दगी, भूक और दुख की ज़िन्दगी और अपमान की ज़िन्दगी, कड़ी मेहनत की ज़िन्दगी, कान्ति की ज़िन्दगी और उसके साथ ही प्रेम और मुहब्बत की ज़िन्दगी सब की सब इन कविताओं में अपने जलवे दिखा रही हैं. इन कविताओं में आप पिछले दस बारह बरस के ज़माने की हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी और उसकी राम कहानी और आत्म-इतिहास देखेंगे. शायद इस ज़माने का अगर कोई इतिहास लिखा जाय तो इस युग के भारत का वह इतना जीता जागता दिग्दर्शन न करा सकेगा जितना यह कविताएँ कराती हैं. यों तो यह संकलन दूसरे महायुद्ध के शुरू (सन् ३६) से १९५० तक की कविताओं का है लेकिन इससे पहले की भी कुछ कविताएँ दे दी गई हैं ताकि वर्तमान उर्दू साहित्य ने जो नया मोड़ लिया है उसका पता आपको लग जाय. नई शायरी फ़ारसी छन्दों और तुकान्त कविता के फ़ारसी सॉचो को अक्सर छोड़ कर और तोड़ कर आगे बढ़ती है. नए छन्दों, अतुकान्त छन्दों और मुक्त छन्दों में दूसरी भारतीयता भाषाओं में जो नई शायरी हुई है बल्कि संसार भर के काव्य रूप में जो नई तब्दीलियाँ आई हैं उन सब की झलक नई उर्दू शायरी में नज़र आती है. प्रगतिशील और साम्यवादी साहित्य पर यह झूटा दोश भी लगाया जाता है कि उस पर विदेशी पन की छाप है, और उसमें भारतीयता नहीं है. यह कविताएँ इस इलज़ाम का कल्ला-तोड़ जवाब देती हैं. 'वज्द' की नज़्म "अजन्ता" और अली सरदार जाफ़री की नज़्म "एशिया जाग उठा" और ऐसी ही कई और नज़्में इस संग्रह में मिलेंगी जिनमें सच्ची भारतीयता कूट कूट कर भरी हुई है. विश्व विस्तार आजाने से हमारा साहित्य अभारतीय न होगा बल्कि और भी अधिक भारतीय हो जायगा. अब इन कविताओं को आपके हाथों में देकर मैं आपसे विदा होता हूँ

८/४ बैंक रोड, इलाहाबाद.

—रघुपति सहाय 'फ़िराक'

१-१-१९५१ ई०



देश की नई चेतना के नाम

—फिराक़

क्या कहाँ

		सफ़ा
१. ताजपोशी	‘जोश’ मलीहाबादी	•• १
२. खूनी बैड	” ”	••• ५
३. जेल टूटने का ख़ाब	” ”	••• ७
४. ईस्ट इंडिया कम्पनी के फ़रज़न्दों के नाम	” ”	••• ८
५. हीया हीया	‘मुत्तलबी’ फ़रीदाबादी	•• १३
६. पागल कौए	‘सलाम’ सैदीलवी	••• १५
७. जाग ए हिन्दोस्ताँ	अली सरदार जाफ़री	••• १८
८. मैं साज़ू ढूँडती रही	श्रीमती ‘अदा’ बदायूनी	••• २०
९. जीवन राग	इन्द्रजीत शर्मा	••• २३
१०. अजन्ता	‘वज्द’ हैदराबाद दकन	••• २४
११. सड़क बन रही है	‘सलाम’ मछली शहरी	••• २८
१२. आवारा	असरारुलहक ‘मजाज़’	••• ३०
१३. मे डे	मुहम्मद सफ़दर	••• ३४
१४. मेरे गीत तुम्हारे हैं	‘साहिर’ लुधियानवी	••• ३७
देश के बँटवारे पर ग़ज़ले—		
१५. (१)	‘हफ़ीज़’ होशियार पुरी	••• ३९
१६. (२)	‘नासिर’ काज़िमी	••• ४०
१७. (३)	‘मुख्तार’ सिद्दीकी	•• ४३

		सफ़ा
१८. (४)	‘साहिर’ लुधियानवी ...	४४
१९. (५)	‘अख़्तर’ होशियार पुरी ...	४४
२०. इन्कलाब की आवाज़	‘साहिर’ लुधियानवी	४६
२१. अदब की जागीर	अहमद रियाज़ ...	४६
२२. तिलंगाना	‘कैफ़ी’ आज़मी	५१
२३. साजन रूप पुजारी निकले	‘बिस्मिल’ शेख़पुरी ...	५३
२४. ग़ज़ल	अब्बास अहमद ‘अब्बास’	५४
२५. बिखरी पंखड़ियाँ	जमीलुद्दीन ‘आली’ ...	५५
२६. रसमसाहट	‘शमीम’ किरहानी	५६
२७. छोटी साइकिल वाली	परोपकार ‘पयाम’ ...	५७
२८. काफ़ले	‘मजरूह’ मुलतानपुरी	५६
२९. चली मशीन चली	अहमद नदीम कासिमी ...	६०
३०. लाल सवेरा	तख़्त सिंह ..	६२
३१. किश्तियाँ और रेत	मुहम्मद सफ़दर	६४
३२. सूखे हुए बेले	‘वामिक’ जौनपुरी ...	६६
३३. मेट्रो होटल	‘मख़मूर’ जालंधरी	७०
३४. गीत	अब्दुल मजीद भट्टी ..	७२
३५. अकेली	बलराज कोमल	७३
३६. किसानों का इन्कलाबी गीत	मसऊद अख़्तर ‘जमाल’ ...	७५
३७. ये कैसे कहूँ	इमरान अन्सारी ...	७६
३८. ग़ज़ल	जमील मलिक	७६

३६.	ग़ज़ल	‘अफ़्मर’ आज़री		८०
४०.	मां	हबीब तनवीर	...	८१
४१.	फ़ील के किनारे	मसऊद अली ‘ज़ाकी’	...	८४
४२.	नए भिकारी का गीत	विश्वमित्र ‘आदिल’	...	८६
४३.	अमन किसके लिये	‘राही’ मासूम रज़ा	...	८८
४४.	जंग न होने पाए	नरेश कुमार ‘शाद’	...	९४
४५.	जंग न होने पाए	‘मुज़फ़्फ़र’ शाहजहाँ पुरी	...	९७
४६.	पुकार	सैयदा फ़रहत	...	१००
४७.	सौभाग्य	‘ताजवर’ सामरी	...	१०२
४८.	जय जय कार	‘क़तील’ शिफ़ाई		१०३
४९.	कृषक बिन्ती	‘स्वामी’ मारहरवी		१०५
५०.	खिलौने	यूसुफ़ ज़फ़र	...	१०७
५१.	पंचों हाथों पिटा दिवाला	‘स्वामी’ मारहरवी	...	१०९
५२.	महामारी	कैवल प्रसाद ‘कैवल’	...	१११
५३.	बापू की कुरबानी	प्रेम धवन	...	११३
५४.	रात मर रही है	‘ताजवर’ सामरी	...	११५
५५.	ग़ज़ल	ज़हूर नज़र	...	११७
५६.	राज महल	अब्दुल मजीद भट्टी		११८
५७.	दुलहन	‘क़तील’ शिफ़ाई		११९
५८.	एक गीत	मीराजी		१२०
५९.	ग़ज़ल	नरेश कुमार ‘शाद’	...	१२१
६०.	देवता	विलियम फ्रान्सिस बर्नर्ट	...	१२३

		पृष्ठा
६१. नई दुनिया	कुमारी ज़हिदा .	... १२५
६२. मल्लाह	प्रोफ़ेसर 'शोर'	... १२६
६३. बोल ! अररी ओ धरती बोल !	असरारुलहक 'मजाज़'	 १२८
६४. वीरान गली	'अशअर' मलीहाबादी	... १३०
६५. इन्क़लाबे-चीन	'कैफ़ी' आज़मी	... १३३
६६. कोरिया के जाँबाज़ो से	गुलाम रब्बानी 'ताबॉ'	... १३८
६७. मैक आर्थर का सच्चा ख़्वाब	जाँनिसार 'अख़्तर'	 १४०
६८. एशिया जाग उठा	अली सरदार जाफ़री	... १४४
६९. सब गीत मेरे	जमीलुद्दीन 'आली'	... १७२
७०. सोवियत यूनियन	अली सरदार जाफ़री	.. १७४
७१. धरती की करबट	रघुपति सहाय 'फ़िराक़'	.. १७५
७२. १६ जनवरी	सैयद मुत्तलबी	.. १९७



‘जोश’ मनोहास

ताजपोशी

ताजपोशी का सुवारक दिन है ए आलम पनाह
ए गुर्गो के अमीर, ए मुक़ान्तो के बादशाह
ए गदा पेशों के मुल्ता, जाहिलों के नज़्द
बेजरा के शाह, दरयूज़ा गरों के शह्यार
ए हमारे आलमों के “हामिये-दीने मुवा”
दोरे मेयद के “ओलुलअम्र-ओ-अमीरुल मोमिनी”

ए रईये-पाक-दिल ए शहयारे नेक नाम
भूक की मारी हुई मख़लूक का लीज मलाम
राम कल आई थी जमे आपके मा बाप को
योही रस्मे-ताजपोशी हो सुवारक आप को

दिल के दरिया नुत्क की वादी में बह सकते नहा
आप की हैबत से हम कुछ गुलके कद सकते नहा
लेकिन इतना डरते डरते अर्ज़ करते हैं ज़फ़र
हिन्द से वाकिफ़ निया जाते नहीं शायद हुज़ूर

आपके हिन्दोस्तों के जिस्म पर बोटी नहीं
तन पर एक धज्जी नहीं है बेट को रोटी नहीं

आलम पनाह = संसार को शरण देने वाले गदा पोशो = भिख मंगो.
दरयूज़ा गर = भिखारी. शहयार = सम्राट हामिये-दीने-मुवा = धर्म के
संरक्षक. ओलुलअम्र = बादशाह अमीरुल मोमिनी = ईमानवालों का
बादशाह. मख़लूक = जनता. नुत्क = बोल, वाणी. हैबत डर.

ताजपोशी ने जो दी है भीक मैं दो रोटियाँ
शुकरिया उन रोटियों का ए शहे-गरदूनिशों

रोटियाँ लेकिन जो दी है आपके खुदाम ने
आसकेगी क्या ये कल की इशतिहा के सामने ?

आज की दो रोटियों से चैन हम पाएँगे क्या
खा भी लेंगे आज अगर डट कर तो कल खाएँगे क्या ?

सिर्फ सड़कों पर चिरागों से नहीं चलता है काम
कुछ दिलों की रोशनी का भी किया है एहतमाम ?

आपके परचम के नीचे है जो कौमे-नामुराद
खाए जाता है उसे खुदामे-आली का एनाद

मेदा महलमे-गिजा है, केसा है महलमे-ज़र
आपके उम्माल ने लूटा है हमको इस कदर

आपके फर्के-मुबारक को दिया है जिसने ताज
आज उस भारत का सर है और तेग-एहतियाज

हर जर्बा पर है शिकन इस कज कुलाही की कसम
हर मर्को एक मक़बरा है, कब्र शाही की कसम

आपके सर पर है ताज ए फ़ातहे-रूए-ज़र्मा
और हम अहले-वफ़ा के पाँव में जूती नहीं

हम वफ़ा केश. आपकी नज़रो से भी गिर जायेंगे ?
आप भी हम से खुदा की तरह क्या फिर जायेंगे ?

शहे-गरदूनिशों = आकाश के समान ऊँचे बादशाह. खुदाम = सरकारी
कर्मचारी. इशतिहा = भूक एहतमाम = आयोजन एनाद = दुशमनी.
मेदा = पेट. केसा = जेब. उम्माल = सरकारी अमला. फर्क = सर. एहतियाज
= ज़रूरत कजकुलाही = बादशाही. कस्र = महल. फ़ातहे-रूए-ज़र्मा = विश्व
विजयी.

हम से बागी किस्म के अफ़राद कहते हैं ये बात
सिर्फ़ मूसा बनके फिरआनों से मुमकिन है निजात

हम तो मूसा बन नहीं सकते किसी तदबीर से
फिर भी ख़ायफ़ है सियासी ख़्वाब की ताबीर से
नौजवाँ बिफरे हुए हैं, भूक से दिल तंग है
ज़रें ज़रें से अयाँ आसारे-हर्ब-ओ जंग है

किद्वरे-हिन्दोस्तॉ में रात को हंगामे-ख़्वाब
करवटे रह रह के लेता है फ़िज़ा में इन्क़लाब !
गर्म हैं सोज़े-बगावत से जवानों का दिमाग़
आँधियाँ आने को हैं ए वादशाही के चराग़ !!

हम वफ़ादाराने-पेशी, हम गुलामाने कुहन
कब जिनकी खुद चुकी तैयार है जिनका कफ़न
तुन्द रौ दरिया के धारे को हटा सकते नहीं
नौजवानों की उमंगों को दबा सकते नहीं
मदह अब डर डर के हम करते हैं यो मरकार की
जैसे कोई धार छूटा हो उपी तलवार की
वो सुरंगे खुद रही हैं, अलहफ़ीज़-ओ-अलअर्माँ
सिर्फ़ इंगलिस्तान क्या, योरप समाजाए जहाँ

अफ़राद = लोग, व्यक्ति. मूसा एक पैग़म्बर. फिरआन = एक
अन्यायी ज़ालिम वादशाह जिसे हज़रत मूसा ने मारा था. ख़ायफ़ = भयभीत.
ताबीर = स्वप्नफन. हर्ब-ओ-जंग = हथियार व लड़ाई. किद्वर = देश,
राज्य. सोज़े-बगावत = विद्रोह की आग. वफ़ादाराने-पेशी = वफ़ादारी में
आगे रहने वाले. कोहन = पुराने. तुन्द रौ = तेज़ बहने वाले. मदह =
तारीफ़. उपी = तेज़. अलहफ़ीज़ = रक्षा चाहना. अल अर्मा = शरण
चाहना.

नौजवाँ करते हैं जब सरगोशियाँ पैकार की
 साफ़ आती है सदा चलती हुई तलवार की
 आपके ऐवान में रक्त्ताँ है लपटे ऊद की
 हिन्दियों की साँस से आती है बू बाहद की

गौर से मृन लीजिये ए ख्वाजए-आली नजाद
 आपको थोके में रख सकते नहीं हम खाना जाद
 कीजिये दरमाँ में उजलत, वरना दिल डर जायेंगे
 हाकिम अपने घर चले जायेंगे हम मर जायेंगे

चौकिये जल्दी, हवाए-तुन्द-ओ-गर्म आने को है
 ज़रा ज़रा आग में तब्दील हो जाने को है



सरगोशियाँ = काना फूसी, पैकार = लड़ाई, ऐवान = महल रक्त्ताँ =
 नाचती हुई ख्वाजा = मालिक, बादशाह, आली नजाद = ऊँचे कुल के,
 खानाजाद = घर के नौकर, दरमाँ = इलाज, उजलत = जलदी,

‘जाश’ मलीहाबादी

खूनी बैँड

रूठ बैचैन है, खामोश हो ए फाँज के बैँड
 इस तरह सुवह की मखमूर हवाओं में न ऐंड
 तुझ स आवाज़ है फाँलाद-शिकन तीरों की
 सनसनाहट हें लचकती हुई शमशीरों की
 कितनी माओं के कलेजे की हें काशे तुझमें
 कितने मह पारा जवानों की हें लाशे तुझमें
 कितनी रौंदी हुई लाशों की हें सदा तुझमें
 कितनी बेवाओं के चेहरे की हें ज़र्दा तुझमें
 कितनी ख़्वाबीदा है मायूस निगाहें तुझमें
 कितने मासूम यतीमों की हें आहें तुझमें
 तेरा हर राग हें हवा हुआ चश्मे-नम मे
 रक्से खूनी की धमक है तेरे ज़ीर-ओ-बम में
 सिसकिया तुझ में हें गुलतीदा दिल अफ़ग़ारों की
 करवटे माँत की हें गत में तेरे तारों की

मखमूर = मदभरी, फाँलाद शिकन = लोहें का तोड़ने वाली, मह पारा =
 चाँद के टुकड़े, ख़्वाबीदा = सुप्त, चश्मे-नम = सजल आँख रक्से-
 खूनी = ताड़व नृत्य, गुलतीदा = व्याकुल, दिल अफ़ग़ार = दल फटा हुआ,

तेरी हर तान में पोशीदा है लाखों आँसू
तेरी आवाज़ में गलता है जवानों का लहू

गुम है रिसते हुए ज़ुल्मों की बहारे तुझमें
खंजरो की है मचलती हुई धरे तुझमें

नगमा है लय में तेरी खून के फ़ावरो का
जमजमा तुझमें है चलती हुई तलवारों का

तेरी आवाज़ जब एहसास पे छा जाती है
मौत के दिल के धड़कने की सदा आती है

‘जोश’ मलीहाबादी

जेल टूटने का ख़ाक

क्या हिन्द का ज़िन्दों काँप रहा है, गूँज रही है तकबीरे
उकताए हैं शायद कुछ कैदी और तोड़ रहे हैं ज़ंजीरे

दीवारों के नीचे आ आकर यो जमा हुए हैं ज़िन्दानी
सीनो में तलातुम बिजली का, आँखों में झलकती शमशीरे
भूको की नज़र में बिजली है, तोपों के दहाने ठंडे हैं
तकदीर के लब को जुबिश है, दम तोड़ रही है तदबीरे

आँखों में गदा की मुखा है, बेनूरा है चेहरा मुलता का
तख़्खरीब ने परचम खोला है, सजदे में पड़ी है तामीरे
क्या उनको ख़बर थी, ज़ंरो ज़बर रखते थे जो रुहे-मिल्लत को
उबलेंगे ज़मा गे मारे सियह वरसेंगी फ़लक से शमशीरे

क्या उनको ख़बर थी, सीनो से जो खून चुराया करते थे
एक रोज़ इसी बेरगी से झलकेंगी हज़ारों तक्बीरे
क्या उनको ख़बर थी, हाँठों पर जो कुफ़ल लगाया करते थे,
एक रोज़ इमी ख़ामोशी से टपकेंगी दहकती तकरीरे

सभलो कि वो ज़िन्दों गूँज उठा, झपटो कि वो कैदी छूट गए
उट्टो कि वो बैठी दीवारें, दौड़ो कि वो टूटी ज़ंजीरें

ज़िन्दों = कारागार. तकबीरे नारे, जयनाद. तलातुम जोश.
लब = होठ जुबिश हिलना. गदा = भिकारी. तख़्खरीब = तोड़ फोड़.
तामीर = रचना मिल्लत = जाति. मारे सियह = काले साँप. कुफ़ल ताला.
तकरीरें = भाषण.

‘जाश’ मलीहाबादी

ईस्ट इंडिया कम्पनी के फ़रज़न्दों के नाम

किस ज़पों से कह रहे हैं आज तुम सांदागरो ।
‘दह में इन्सानियत के नाम को ऊँचा करो।
जिस को सब कहते हैं हिटलर भेडिया है भेडिया’
भेडियों को मारदो गोली पाए अमन-ओ-वका
बागे-इन्सानी में चलने ही को है बाँटे-खिज़ाँ
आदमीयत ले रही है हिचकियों पर हिचकियाँ
हाथ है हिटलर का रक़्शे-खुदसरी की बाग पर
तेग का पानी छिड़क दो जरमनी की आग पर”
मखन हँरां हूँ कि महफ़िल में तुम्हारी और ये ज़िक्र
नौए-इन्सानी के मुस्तकबिल की अब करते हो फ़िक्र
जब यहाँ आए थे तुम सांदागरी के वास्ते
नौए-इन्सानी के मुस्तकबिल से क्या वाकिफ़ न थे ।
हिन्दियों के जिस्म में क्या रूहे-आजादी न थी ।
मच बताओ क्या वो इन्सानो की आबादी न थी ॥

दह = जग, पाए अमन-ओ-वका = शान्ति और बाकी रहने के लिये
बाद-खिज़ा = पतझड़ की हवा, रक़्शे-खुदसरी = उदङ्कता का घोड़ा,
नौए-इन्सानी = मानव जाति मुस्तकबिल भविष्य,

अपने जुल्मे-बेनिहायत का फ़माना याद है ?
 कम्पनी का फिर वो दौरे मुजरिमाना याद है ?
 लूटते फिरते थे जब तुम कारवा दर कारवा
 सर बरहना फिर रही थी दाखने-हिन्दोस्ता
 दस्तकारों के अँगूठे काटते फिरते थे तुम
 सर्द लाशों से गढ़ों को पाटते फिरते थे तुम
 सनअते हिन्दोस्ता पर मौत थी छाई हुई
 मौत भी कैसी, तुम्हारे हाथ की लार्ई हुई
 अल्ला अल्ला किस कदर इन्साफ़ के तालिब हो आज
 मीरजाफ़र की कसम क्या दुश्मने-हक था सिराज ?
 क्या अवध की बेगमों का भी मताना याद है ?
 याद है भाँसी की रानी का ज़माना याद है ?
 हिजरते-मुलातने-देहली का समा भी याद है ?
 शेर दिल टीपू की खूनी दास्ताँ भी याद है ?
 तीसरे फ़ाँके में एक गिरते हुए को थामने
 किसके सर लाए थे तुम शाहे-ज़फ़र के सामने ?
 याद तो होगी वह मटिया बुर्ज की भी दास्ता ?
 अब भी जिसकी खाक से उठता है रह रहकर धुआँ
 तुमने कैसर बाग़ को देखा तो होगा बारहा
 आज भी आती है ज़िमसे 'हाय अग़तर' की सदा

बे निहायत = बे अन्त, सरबरहना = सर खुले, तालिब = इच्छुक,
 हक = सत्य, 'अग़तर' = वाजिद अली शाह का उपनाम,

सच कहो क्या हाफूज़ में है वह जुल्मे-बे पनाह ?
 आज तक रात में एक कत्र है जिमकी गवाह
 ज़ेह में होगा ये ताज़ा हिन्दियो का दाग़ भी
 याद तो होगा तुम्हें जलियानवाला बाग़ भी
 पूछ लो उस से तुम्हारा नाम क्यों ताबिन्दा है
 'डायरे' गुर्गे-दहन आनन्द अब भी जिन्दा है
 वो भगत सिंह, अब भी जिम के ग़म में दिल नाशाद है
 उसकी गरदन में जो डाला था वह फन्दा याद है ?
 अहले-आज़ादी रहा करते थे किस हंजार से
 पूछ लो ये कैद खानों के दरो दीवार से
 अब भी है महफूज़ जिन में तन्तना सरकार का
 आज भी गूँजी हुई है जिम में कोठों की सदा
 आज ग़शनी अमन की अमवाज पर खेते हो क्यों ?
 सख्त हैरा हूँ कि अब तुम दमे-हक देते हो क्यों ?
 अहले-क़वत दामे-हक में तो कभी आते नहीं
 'बैकी' एख़लाक को ख़ानिर में भी लाते नहीं
 लेकिन आज एख़लाक की तलकीन फ़रमाते हो तुम
 हो न हो अपने में अब क़वत नहीं पाते हो तुम

हाफ़ूज़ा - स्मृति, ज़ेह = दिमाग, गुग = भेड़िया, हंजार ढंग, तरीका.
 महफूज़ = सुरक्षित, तन्तना = शान, अमवाज = लहरो, दर्स पाठ, शिक्षा.
 अहले-क़वत - शक्ति वाले दामे-हक = साच्चाई का जाल, एख़लाक =
 सदाचार, तलकी = नउपदेश.

अहले-हक रोशन नज़र है अहले-बानिल कोर है
 ये तो हैं अकवाल उन कौमो के जो कमज़ोर है
 आज शायद मज़िले-क़वत में तुम रहते नहीं
 जिस की लाठी उमकी भैस अब किस लिये कहते नहीं ?
 क्या कहा, “इन्साफ़ है इन्माँ का फ़र्ज आँवला”
 क्या फ़साद-ओ-जुल्म का अब तुम में कस बाकी नहीं ?
 दर मे बैठे हो नरुले-रास्ती की छाँव में
 क्या खुदा नाक़्दा कुछ मोच आगई है पाव में ?
 गूँज टापों की न आवादी न वीराने मे है
 खैर तो है अस्पे-ताज़ी क्या शफ़ा ख़ाने में है ?
 आजकल तो हर अदा में रह्य का अन्दाज़ है
 कुछ तबीयत क्या नर्मावे-दुशमनाँ नामाज़ है ?
 साम क्या उग्वड़ी कि हक के नाम पर मरने लगे
 नौए-इन्माँ की हवाख़्वाही का दम भरने लगे
 जुल्म भूले रागनी इन्माफ़ की गाने लगे
 लग गई है आग क्या घर में कि चिल्लाने लगे ?
 मुजरिमों के वास्ते ज़ेबा नहीं यह शोर ओ-शैन
 कल यज़ीद-ओ-शिम्न थे और आज बनते हो हुसैन

अहले-हक = सच्चाई वाले. अहले-बानिल = असत्य वाले. कोर =
 अंधे. अकवाल = कथन. नरुले रास्ती = सत्य-वृत्त. खुदा नाक़्दा = ईश्वर न
 करे. अस्पे-ताज़ी = ताज़ी घोड़ा. हवाख़्वाही उग़ार शोर-ओ-शैन रोना
 धोना यज़ीदवशिम्न = हज़रत हुसैन के हत्यारे.

खैर ए सौदागरो अब है तां वस इस बात में
 वक्त के फ़रमान के अगे मुक्का दो गरदने
 एक कहानी वक्त लिखेगा ना, मज़मून की
 जियकी मुर्ग्यां को ज़हरत है तुम्हारे खून की
 वक्त का फ़रमान अपना रुख बदल सकता नहीं
 मात टल सकती है अब फ़रमान टल सकता नही।

— — — — —

‘मुत्तलबी’ करीदाबानी

हीया हीया

(महल बन रहा है उसकी छत के लिये मजदूर गडर चढ़ा रहे हैं)

गाटर लेना, कैसे भाई ऐसे भाई, हीया हीया
बोझ उठाओ, बोझ उठाया महल रारा का, हाँ हाँ भाई
महल मराका, हाँ हाँ भाई बोझ उठाओ, बोझ उठाया
ऊँचा करलो, हीया हीया बोझ उठाओ, हीया हीया

बोझ उठाया, हीया हीया

हाथ बचाके, हा हा भाई पैर बचाके, हाँ हाँ भाई
बोझ उठाओ, बोझ उठाया ऊँचा करलो, हीया हीया
शेर बहादुर, हीया हीया ऊँचा करलो, महल मरा को
बोझ उठाओ, बोझ उठाया कैसे भाई, हीया हीया
शेर बहादुर, हीया हीया आगे सरके, हीया हीया

शेर बहादुर, हीया हीया

हाँ हाँ भाई, हीया हीया

पेट पलेगा, म्हार त्हारा महल बनेगा, राजा जी का
पेट पलेगा, म्हार त्हारा बाग बनेगा, राना जी का
फूल खिलेगे, हाँ हाँ भाई जश्न उड़ेगे, हाँ हाँ भाई
पेट पलेगा, म्हार त्हारा चार महीने, म्हार त्हारा

पेट पलेगा, म्हारा त्हारा म्हारा त्हारा, म्हारा त्हारा
 हाँ हाँ भाई, म्हारा त्हारा शेर बहादुर, हीया हीया
 कैसे भाई, हीया हीया

पेट पलेगा, हीया हीया

आंग उठाओ, हीया हीया	आंगे सरके, हीया हीया
आठ महीने, भूक लगेगी	शेर बहादुर, भूक लगेगी
बिन कपड़े के, बिन लने के	आठ महीने, बिन रोंटी के
जोर लगाओ, हीया हीया	भूक लगेगी, भूक लगेगी
कैसे भाई, हीया हीया	शेर बहादुर, हीया हीया
हाँ हाँ भाई, हीया हीया	पेट भरेगा, हीया हीया
आँर उमारो, हीया हीया	हाथ बचाके, हीया हीया
शेर बहादुर, हीया हीया	दाम मिलेंगे, हीया हीया
सूद भरेगे, हीया हीया	आँर उमारो, हीया हीया

पैर बचाके,

हीया हीया



‘सलाम’ सदैलवा

पागल कौए

पागल कौए मत बोल यहाँ, है कौन यहाँ आने वाला
मुझमे तो खूफा है सारा जहा, है कौन यहाँ आने वाला

मेरी दीवार पे तू बैठा क्यों पापी शोर मचाता है
क्यों भूली बिसरी बातों को परदेस में याद दिलाता है
क्यों कानों को झुटलाता है क्यों नज़रों को बहकाता है
मेरा दुनिया में कोई नहीं, किसका सन्दस सुनाता है

जा छेड़ न दुखती रग नादा, है कौन यहाँ आने वाला
पागल कौए मत बोल यहा, है कौन यहा आने वाला

वहके कौए, मुन बात मेरी, घबरा के डगर क्या भूल गया
कुछ ग़ौर तो कर, कुछ सोच तो ले, जल्दी में नगर क्या भूल गया
जिसके घर तुझको जाना था तू उसका घर क्या भूल गया
क्या नज़्मशा तुझको याद नहीं दीवार-ओ-दर क्या भूल गया

वह होगा कोई और मका, है कौन यहा आने वाला
पागल कौए मत बोल यहाँ है कौन यहा आने वाला

इक बाप था ‘बेला बाग़’ में है जो ज़ेरे तुरबत बरसों से
इक मा जो गाँव में रहती थी है साकिने जन्नत बरसों से
इक भाई कहीं परदेस में है जिससे है अदावत बरसों से
इक दूर का मामूँ है जिसको मुझसे है शिकायत बरसों से

ज़ेरे तुरबत - कब्र के नीचे. साकिने जन्नत - स्वर्गवासी.

फिर किस के आने का हो गुमां, है कौन यहां आने वाला
पागल काँए मत बोल यहा, है कौन यहा आने वाला

तेरी बोली से ऐ पंछी, डक ताजा चोट उभर आई
वो हाथ शरीके जीस्त अपनी जो थी गमग्वारे तनहाई
जिसकी हर सांम में बजती थी उल्फत की मुरीली शहनाई
वो जन्नत की जाबिब चलदी लेती हुई माँ की अँगड़ाई

टटी मी लहद है जिसका निशा, है कौन यहा आने वाला
पागल काँए मत बोल यहा, है कौन यहा आने वाला

इक छोटी बहन है साथ अपने और दो बहने समुरान में है
बरसों से ख़बर उनकी न मिली, क्या जाने वो किस हाल में है
आना चाहें तो आ न सके कुछ ऐसे वो जंजाल में है
उनके शौहर मुझ से बदज़न और वो शौहर के जाल में है

फिर कौन आएगा मेरा मेहमां, है कौन यहा आने वाला
पागल काँए मत बोल यहा, है कौन यहा आने वाला

भोले काँए, खुद अपना चचा है मिस्ले बेगाना दुश्मन
जो पहले राज़ के महरम थे वो अब है दर पर्दा दुश्मन
दुश्मन है वतन में हमसाया परदेस में हम पेशा दुश्मन
बस और ज़ियादा कौन कहे खुद अपना है सामा दुश्मन

सब ही दुनिया है दुश्मने जां, है कौन यहा आने वाला
पागल काँए मत बोल यहा, है कौन यहा आने वाला

शरीके जीस्त = जीवन साथी. गमग्वारे तनहाई = तनहाई का गम
मिटाने वाली. लहद = कब्र. बदज़न = बदगुमान बेगाना = पराया, अपरिचित.
महरम = जानकार. हमपेशा = सहकारी.

भूटे कौए, अब उड़ भी जा, या आवनहारा कोई नहीं
 अब मैं न किसी का प्यारा हूँ, अब मेरा प्यारा कोई नहीं
 साथी है 'मलाम' अपना ही दम, बस और सहारा कोई नहीं
 गिर्दाब, समुन्दर, तारीकी, तूफ़ान • किनारा कोई नहीं

मंझधार में अब कशती है रवां, है कौन यहां आने वाला
 पागल कौए मत बोल यहां, है कौन यहां आने वाला



अली सरदार जाफरी

जाग ए हिन्दुस्तान

रुसी जागे चीनी जागे जाग ए हिन्दुस्तान
पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन उट्टा है तूफ़ान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

चीड़े चकले तेरे दरिया गहरी तेरी वादी
ऊँची तेरे कोह की चोटी, ऊँची तेरी शान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

गंगा जमुनी तेरे मैदां धानी तेरे खेत
फिर भी नंगे भूके रहकर जीते हैं दहकान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

तेरी सरहद पर बैठे है डाकू और लुटेरे
इस जन्नत में घुस आया है फ़ाशिस्ती शैतान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

सारी दुनिया देख रही है आज़ादी के ख़्वाब
ज़ंजीरों को तोड़ रहे है मज़दूर और किसान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फ़िरदौस निशान

फ़ाशिस्ती = फ़ासिस्ट.

झूब रहे हैं सदियों लम्बी रात के फीके तारे
सुर्ख सितारा बनकर चमका सबहे-नौ का निशान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फिरदौस निशान
तेरी कूवत तेरी शक्ती कौन है वह जो रोके
चढ़ता दरिया, बहता धारा, उठता हुआ तूफ़ान

जाग ए हिन्दुस्तान, ए फिरदौस निशान



श्रीमती 'अदा' बदायूनी

मैं साज़ ढूँडती रही !

बहार खिलखिला उठी

जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में

जुनूं नवाज़ बदलियों की छांव में बहार खिलखिला उठी

हर एक शाखे लाला ज़ार सजदा रेज़ हो गई

हर एक सजदा रेज़ शाख़सार पर तयूर चहचहा उठे

हवाए मुर्गज़ार गुनगुना उठी

फ़िज़ाए नौ बहार लहलहा उठी

हवाए मुर्गज़ार में, फ़िज़ाए नौ बहार में हयात मुस्करा उठी

जुनूं नवाज़ियाँ बढ़ीं

फ़साना साज़ियाँ बढ़ी

अदाये नाज़ की कुछ और बेनियाज़ियाँ बढ़ीं

कुछ इस अदाए नाज़ से बहार खिलखिला उठी

जुनूं नवाज़ ऊदी-ऊदी बदलियों की छांव में

जुनूं नवाज़ = जूनू (पागलपन) को बढ़ाने वाली, शाखे लाल ज़ार = लाला के फूलों की ढाल, सजदा रेज़ = सजदा करने वाली, तयूर = चिड़ियाँ, मुर्गज़ार = हरियाली, बाटिका, फ़साना साज़ियाँ = कहानियाँ बनाने की क्रियाएँ, बेनियाज़ियाँ = उपेक्षाएँ.

मगर बहार को अभी तक आरजूए नगमा थी
 शहीदे कैफे इन्तज़ार-ओ-जुस्तजूए नगमा थी
 मैं साज़ ढूँडने लगी
 नवाए शोख-ओ मस्त-ओ-दिल नवाज़ ढूँडने लगी
 बसद गुरुर-ओ-इफ्तख़ार-ओ-नाज़ ढूँडने लगी
 मैं साज़ ढूँडती रही
 बहार की फ़ज़ाओं में
 जुनून नवाज़ बदलियों की भीनी-भीनी छाँव में
 मैं महवे जुस्तजू रही
 मगर यह मेरी भूल थी
 हयात अपनी रसभरी कहानिया सुना चुकी
 हवाय नों बहार लोरियां सुना के जा चुकी
 फ़िज़ाए मुर्गज़ार जामे अरग़वा लुँढा चुकी
 बहार की नशीली अँखड़ियों में नींद आ चुकी
 मगर मैं ढूँडती रही
 मुझे वह साज़े दिल नवाज़ आज तक न मिल सका
 वह ऊदी-ऊदी बदलियाँ कि फ़ख़्से सद बहार थी

शहीदे कैफे इन्तज़ार व जुस्तजूए नगमा थी = बहार को इन्तज़ार की मस्ती और संगीत की तलाश थी. नवाए शोख़ व मस्त व दिल नवाज़ ढूँडने लगी = चंचल, मस्त दिल को आनन्द देने वाला राग ढूँडने लगी. बसद गुरुर व इफ़्तख़ार व नाज़ = सैकड़ों घमंडों उमंगों तरंगों के साथ. महवे जुस्तजू = ढूँडने में तल्लीन. जामे अरग़वा = लाल शराब से भरा हुआ प्याला. फ़ख़्से सद बहार = जिन पर सौ बहारे घमंड करे.

फलक की चरमे खूँफ़शां से अश्क वनके ढल गई
 दिखाई दे रही है कायनात कुछ लुटी-लुटी
 धुएँ की बू से है फ़ज़ा की सांस भी घुटी-घुटी
 ज़मी पे शोला बारियाँ, फ़लक पे गड़गड़ाहटें
 कि सुन रहे है चरम-ओ-दिल निज़ामे नौ की आहटें
 बहार बीत ही चुकी ख़िज़ां भी बीत जायगी
 मगर मैं एक सोच में पड़ी हुई हूँ आज भी
 वो मेरी आरजू की नाव खे सकेगा या नहीं
 निज़ामे नौ भी मुझको साज़ दे सकेगा या नहीं



चरमे खूँफ़शां = खूँब रोने वाली आँखें. निज़ामे नौ = नया ज़माना,
 नई सभ्यता, नवयुग.

इन्द्रजीत शर्मा

जीवन-राग

किसने यह मीठी बीन बजाकर तान ने तान उड़ाई
अन्धकार में किरनें फूटी केशी जोत जगाई
जाग उठे ब्रह्मांड के कन-कन ले लेकर अंगड़ाई
हर दिल में आग लगाई

किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

धरती घूमी अंबर घूमा घूम गए सब तारे
चांद और सूरज अपने पथों पर घूमे न्यारे न्यारे
एक चक्कर में फँस कर रह गए लोक लोकान्तर सारे
हर लोक पे माया छाई

किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान उड़ाई.

रंग रूप की माया फैली प्रेम का मन्दिर साजा
सिंहासन पर क्यूपिड देवता मन्दिर बीच बिराजा
सुख का सागर उमँड पड़ा आनन्द का बाजा बाजा
जीवन की कली मुस्काई

किसने ये मीठी बीन बजाकर तान पे तान सुनाई.

क्यूपिड देवता = कामदेव.

‘वज्र’ हैदरावाद दकन

अजन्ता

जहा खूने जिगर पीते रहे अहले हुनर बरसो
जहा घुलता रहा रंगों में आहों का असर बरसो
जहा खिंचता रहा पत्थर पे अक्से खैर-भो-शर बरसो
जहा कायम रहेगी जन्मते कल्ब-ओ-नज़र बरसो

जहा नग़मे जनम लेते है, रंगीनी बरसती है
दकन की गोद में आवाद वो ख़्वाबों की बमती है

शराबे-कुहना की तासीर है ठंडी हवाओ में
बहारे-ज़िन्दगी गुलता है मब्जे की अदाओ में
नवाये-सरमदी आती है भरनों की सदाओ में
बया मुमकिन नहीं वो लुफ़् आता है दुआओ में

यहां सदियों से रायज पुर सुकूं शीरी मकाली है
यहा का ज़रा ज़रा मज़हरे-शाने जमाली है

तजल्लीज़ार-इरफ़ां, शाहकारे - इब्ने - आदम है
सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे-हुस्न में ख़म है

सौरी शर = भलाई-बुराई, सुख-दुख. कुहना = पुराना, पुरानी. गुलता है = लुढ़क रही है. नवाये सरमदी = स्वर्गीय संगीत. पुर सुकूं शीरी मकाली = शानि पूर्ण मधुर वचन. मज़हरे शाने जमाली - सौन्दर्य को प्रकट करने वाला. तजल्ली ज़ारे इरफ़ां = सत्य के साक्षात् दर्शन का प्रकाश स्थल. शाहकारे इब्ने आदम = मनुष्य की सर्वोत्तम कृति सरे फ़ितरत अमल की बारगाहे हुस्न में ख़म है प्रकृति का सिर कर्म के सुन्दर स्थल में भुका हुआ है.

तमद्दुन मुनअकस हो जिसमें ऐमा सागरे-जम है
जमाले-जिन्दगी रेहने-जलाले-अज़मे. गौतम है

उमीदे-जाने-ताज़ा फिर दिले-विस्मिल में आई थी
तलाशे-अम्न में तहजीब इस मंज़िल में आई थी

हरीमे-काबये फ़न मोबदे- नाजुक ख़यालां है
जहाने-नूर-ओ-नकहत मसकने-आशुप्ता हाला है
जुनूँ अफ़शा फ़ज़ा में मस्तिये-चरमे-ग़ज़ालां है
लबे-जूए-कुहिस्ता जलवा - गाहे-ख़ुश जमाला है

मिली है बांकपन की दाद जिनको कजकुलाहो से
नज़र वालो पे शमशीरें बरसती है निगाहो से

कहाँ पैदा है सारी कैफ़ियत महने-गुलिस्तां की
कहाँ रौनक नज़र आती है बाज़ार-ओ-शविस्ता की
कहीं हैरत ज़वाने-हाल है हाले-परीशां की
लकीरें है कि शिरियाने दिले इन्सान-ओ-हैवा की

तमद्दुन - सभ्यता, मुनअकस = प्रतिविम्बित सागरे जम = जमशेद
बादशाह का वह प्याला जिसमें त्रिभुवन प्रतिविम्बित होता था, रेहने जलाले
अज़मे गौतम = महात्मा बुद्ध के उच्च आदर्शों के तेज के हाथों बिका हुआ,
हरीमे काबए, फ़न = कला के पूजा-स्थल का अन्तःकरण, माबदे नाजुक
ख़यालां = सूक्ष्म कल्पना वालों का आराधना स्थल, नकहत = सुगंध,
मसकन = शान्ति देने वाली जगह, आशुप्ता हालां = परीशान लोगो,
जुनूँ अफ़शां = जुनून बरसाने वाला, ग़ज़ाला = हिरन, लबे जूये कुहिस्ताँ =
पहाड़ों की घाटी में बहने वाली नदी का किनारा, ख़ुश जमालां = रूपवानों,
दाद = प्रशंसा, कज कुलाहो = टेढ़ी बाकी टोपी देने वाले हसीन, शिरियानें =
रंगे, नसे'.

कहीं जुम्मत के पीछे रोशनी महसूस होती है
कहीं तो मौत में भी जिन्दगी महसूस होती है

जिगर के खून के खांचे गए हैं नक्शे-लासानी
तसद्दुक जिनके हर खून पर तहेयुर खानए-मानी
मुशक्कल हैं शबाब-ओ-हुस्न में तखईले-इन्सानी
तकद्दुस के सहारे जी रहा हैं जौके-उरियानी

गुलिस्ताने-अजन्ता पर जुनू का राज है गोया
यहां जज़्बात के इज़हार की मेराज है गोया

बहाना मिल गया अहले-जुनू को हुस्नकारी का
असामा लूट डाला शौक में फस्ले-बहारी का
चटानो पर बनाया नक्श दिल की बेकरारी का
मिखाया गुर उसे जज़्बात की आईनादारी का

दिले-क्रोहमार में महफूज़ अपनी दास्तां रख दी
जिगरदारो ने बुनियाद-जहाने-जामिदां रख दी

हुनरमन्दो ने तस्वीरो में गोया जान भर दी है
नस्बू दिल में हो जाती है वह कार्फ़र नज़र दी है
अदाओं से अयां है, लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर दी है
खुलेंगे राज़ इम डर से दहन पर मोह कर दी है

ये तमवीरे बज़ाहिर ~~सक्ति~~ ओ-ख़ामोश रहती हैं
मगर अहले-नज़र पूछें तो दिल की बात कहती हैं

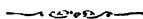
तसद्दुक = निछावर. खून = रेखा. तहेयुर खानए-मानी = प्रसिद्ध
ईरानी चित्रकार और महात्मा मानी की चित्रशाला. मुशक्कल = साकार.
तखईल = कल्पना. तकद्दुस = पवित्रता, सतीत्व. जौके-उरियानी = नग्न
अवस्था की मस्ती. मेराज = चरम सीमा. असामा = सर्वस्व. जहाने
जमविदां = अमर सृष्टि. दहन = मुख. साकित = चुप.

करिश्मा है ये अरबाबे-हमम की सइय पैहम का
जिन्हें अहसास तक बाकीन था कुछ शादी-ओ-ग़म का
दिलो पर अक्स खिंच आया था जिनके हुस्ने-अल्लम का
कलम को नक्श अज़वर हो गया था इस्मे आज़म का

चटानो पर शबाब-ओ-हुस्न की मौजे रवां कर दी
फ़ूसूँ कारो ने रंगो में मुक़्तयद बिजलियां कर दीं

जहां छोड़ा खुशी से जाविदां पैग़ाम की खातिर
खुशामद अहले-दौलत की नहीं की नाम की खातिर
न छानी खाक दर दर की किसी इनआम की खातिर
जिये भी काम की खातिर मरे भी काम की खातिर

जमाने की जबी पर अक्स छोड़े है निगाहो के
रहेगे नक्श इनके, नाम मिट जाएँगे शाहो के



अरबाबे हमम = ग़म वालो, सइ = कोशिश, अज़वर = ज़बानी याद,
इस्मे आज़म = परमात्मा का नाम, मुक़्तयद = बन्द, इनआम = इनाम.

सलाम मछलीशहरी

“सड़क बन रही है—!”

मई के महीने का मानूस मन्ज़र
गरीबों के साथी ये कंकड़, ये पत्थर
वहां शह से एक ही मील हट कर

सड़क बन रही है !

ज़मी पर कुदालों को बरसा रहे हैं
पसीने पसीने हुए जा रहे हैं
मगर इस मशक्कत में भी गा रहे हैं

सड़क बन रही है !

मुसीबत है, कोई मुसरत नटी है
उन्हे सोचने की भी फ़र्सत नहा है !
“जमादार” को कुछ शिकायत नहीं है

मड़क बन रही है !

जवां, नाँजवा और ख़मीदा कमर भी
फ़ुर्दा जबी भी बहिश्ते नज़र भी
वही शामे ग़म भी, जमाले सहर भी

मड़क बन रही है !

मानूस = परिचित. ख़मीदा = मुकी हुई. ख़मीदा कमर = बूढ़े लोग.
फ़ुर्दा जबी = जिनके ललाट उदाम है, निडाल. बहिश्ते नज़र = सुन्दर.
वही शामे ग़म भी जमाले सहर भी = दुख मुख, अंधेरा उजाला, बुढ़ापा
जवानी एक ही स्थान में.

“जमादार” साये में बैठा हुआ है
 किसी पर उसे कुछ अनाब आ गया है
 किमी की तरफ़ देख कर हँस रहा है

सड़क बन रही है !

ये बेबाक उत्फ़ुल्ल ये अलहद इशारा,
 ‘बसन्ती’ से ‘रामू’ तो ‘रामू’ से ‘राधा’
 “जमादार” भी है ‘बसन्ती’ का शैदा

सड़क बन रही है !

जो सर पर है पगड़ी तो हाथों में हंटर
 चला है ‘जमादार’ किस शान से घर
 ‘बसन्ती’ भी जाती है नज़रे बचाकर

सड़क बन रही है !

समझते हैं लेकिन हैं मसरूर अब भी
 इसी तरह गाते हैं ‘मज़दूर’ अब भी
 बहर हाल वा हस्बेदस्तूर अब भी

सड़क बन रही है !



असराखलहक 'मजाज'

आकार

शह की रात और में नाशाद-ओ-नाकारा फिरूँ
जगमगाती जागती सड़कों पे आवार फिरूँ
गैर की बस्ती है कबतक दर बदर मारा फिरूँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

ये रुपहली छाँव, ये आकाश पर तारो का जाल
जैसे सूफ़ी का तसौचुर, जैसे आशिक का खयाल
आह ! लेकिन कौन जाने कौन समझे दिल का हाल

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

भिलमिलाते कुमकुमो की राह में जंजीर सी
रात के हाथों में दिन की मोहिनी तसवीर सी
मेरी छाती पर मगर चलती हुई शमशीर सी

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

तसौचुर = कल्पना. कुमकुमों = बिजली के लट्ठुओं.

रात हँस हँस कर यह कहती है कि मैखाने में चल
फिर किसी शहनाज़ लाला रुख के काशाने में चल
यह नहीं मुमकिन तो फिर ए दोस्त वीराने में चल

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियाँ रानाइयाँ
हर कदम पर इशारतें लेती हुई अंगड़ाइयाँ
बढ़ रही है गोद फैलाए हुए रुसवाईयाँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फिर वो दूटा एक सितारा फिर वो छूटी फुलभङ्गी
जाने किसकी गोद में आई ये मोती की लङ्गी
हूक सी सीने में उट्टी, चोट सी दिल पर पङ्गी

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

एक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब
जैसे मुल्ला का अमामा, जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मैखाने = शराबखाने. काशाने = रंग भवन. रानाइयाँ = सुन्दरताएँ
इशारतें = भोग विलास. माहताब = चाँद. अमामा = पगड़ी. बेवा का
शबाब = विधवा की जवानी.

रास्ते में रुक के दम लेलूँ, मेरी आकत नही
लौट कर वापस चला जाऊँ, मेरी फ़ितरत नही
और कोई हम नवा मिल जाय यह किस्मत नही

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

मुंतज़िर है एक तूफ़ाने-बना मेरे लिये
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा मेरे लिये
एक मुसीबत है मेरा अहद-वफ़ा मेरे लिये

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

जी में ठानी है कि अब अहदे-वफ़ा भी तोड़ दूँ
उनको पा सकता हूँ मैं ये आसरा भी छोड़ दूँ
हाँ मुनासिब है ये ज़ंजीरे-हवा भी तोड़ दूँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

दिल में एक शोला भड़क उठा है आख़िर क्या करूँ
मेरा पैमाना छलक उठा है आख़िर क्या करूँ
ज़ख़्म सीने का महक उठा है आख़िर क्या करूँ

ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ए वहशते-दिल क्या करूँ

फ़ितरत = स्वभाव, प्रकृति. हम नवा = संगी साथी, सुर में सुर मिलाने
वाला. मुतज़िर = प्रतीक्षा कर रहा. वा = खुले. अहद-वफ़ा = वफ़ा करने
का वचन.

जौ में आता है ये मुर्दा चांद तारे नोच लूँ
इस किनारे नोच लूँ और उम किनारे नोच लूँ
एक दो का जिक्र क्या सारे के सारे नोच लूँ

ए ग़मे-दिल क्या कहूँ, ए वहशते-दिल क्या कहूँ

ऐश-ओ-दाँलत के मज़ाहिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों मुलताने-जाबिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों खंगेज़-ओ-नादिर हैं नज़र के सामने

ए ग़मे-दिल क्या कहूँ, ए वहशते-दिल क्या कहूँ

लेके एक खंगेज़ के हाथों से खंजर तोड़ दूँ
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूँ
कोई तोड़े या न तोड़े, मैं ही बढ़कर तोड़ दूँ

ए ग़मे-दिल क्या कहूँ, ए वहशते-दिल क्या कहूँ

बढ़के इस इन्दर-सभा का साज़-ओ-सामों फूँक दूँ
इसका गुलशन फूँक दूँ, उसका गुलिस्ताँ फूँक दूँ
तख्ते-मुलताँ क्या है सारा क़त्ल मुलताँ फूँक दूँ

ए ग़मे-दिल क्या कहूँ, ए वहशते-दिल क्या कहूँ



मज़ाहिर = प्रदर्शन, जाबिर = ज़बरदस्ती करने वाला, ज़ालिम.

मे डे

[सन १८८६ ई० में शिकागो (अमरीका) के मज़दूरों ने सरमाया-
दारों से माग की कि काम का वज़न चौदह घंटे से आठ
घंटे कर दिया जाय. हुक्मरान तबके ने इसका जवाब गोलियों
से दिया. बेशुमार मज़दूर खाक-ओ-खून में तड़प कर रह गये
आर उनका सफ़ेद भांडा उन्हीं के लहू में मुर्ग हो गया. मे डे उन्हीं
मेहनतकश शहोदों की याद में दुनिया के हर उस हिस्से में
मनाया जाता है जहा मज़दूर बेदार हो रहे हैं. पहली मई सन्
१९४६ ई० को अन्जुमन तरक्की पसन्द मुसलमानी पच्छिमी पजाब
ने भी यीमे मई (मे डे) मनाया. यह नाम उसी जलसे में पड़ी
गई थी.]

मिटे हुए, खाक में मिले, धूल बनके उड़ते हुए
नज़ारों को भूल भी जाओ शायरो हुस्न के ख़ुदाओ
नई बहारों के गीत गाओ
जो हर तरफ़, हर उफ़क पे लहराते सुख़े भाड़ों
के फूल बिखराती आ रही है
लहू से भीगे हुए नज़ारों के गीत गाओ
कि आज यीमे मई है-तिरसठ बरस से जलती हुई सदा है
लहू की

मज़दूर के लहू की

जिसे शिकागो के अहले सरमाया की रऊनत की रहगुज़र पर
गुलाब की पत्तियों सा बिखरा दिया गया था

वही तो है जिसकी याद इक मशअले तमन्ना बनी

चमकती रही हमारे दिलों की तारीक वादियों में

वही तो है जिसने सबसे पहले हमें बताया

कि हम अलग एक आलमे नौ है, इक नई रागिनी है

हम वक़्त के तलातुम की इक नई मौज है

वही तो है जिमने सबसे पहले हमें बताया

कि आलमे नौ कोई फ़माना नहीं

हकीकत है और हकीकत है

इसलिये दर्द है, लहू है

वही तो है जिससे आज चिल्ली रो चीन तक

एक सैले खूँरंग है कि हरसू उमंड रहा है

मेरे रफ़ीको, अज़ीम फ़नकारो, शायरो, हुस्न के खुदाओ

लहू से भीगे हुए नज़ारे पुकारते है

बताओ कब तक

निज़ामे सरमाया की लबे मर्ग फ़ाहशा की

रऊनत = घमंड, अहंकार, आलमे नौ = नया संसार, लबे-मर्ग

फ़ाहशा = मरने वाली व्यभिचारिणी.

तुम अपने दिल के चिराग से, अशके खूंसे, आहै सहरगही से
हरारत और नूर और रंग के खज़ीने दिया करोगे ?

बताओ कब तक

इसी तरह अपनी अपनी शहसीयता के महबस में बन्द रहकर

फ़लक पे खिलती हुई सहर को तका करोगे

बताओ कब तक ?



आहै सहरगही = वह आह जो सुबह को खीची जाय.

महबस = कैदखाना.

‘साहिर’ लुधियानवी

मेरे पित तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी पसपाई भी
माँत के कदमों की आहट भी, जीवन की अंगड़ाई भी
मुस्तकबिल की किरनें भी थीं, हाल की वोमिल जुलमत भी
तूफ़ानों का शोर भी था, और ख़्वाबों की शहनाई भी

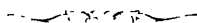
आज मे मैं अपने गीतों में आतिशयारे भर दूँगा
मद्धिम लचकीली तानों में जीवट धारे भर दूँगा
जीवन के अधियारे पथ पर मिशअल लेकर निकलूँगा
धरती के फैले आँचल में मुख़ सितारे भर दूँगा

आज मे ए मज़दूर किसानो ! मेरे राग तुम्हारे हैं
फ़ाका करा बेबस इनमानो ! मेरे भाग तुम्हारे हैं
जब तक तुम भूके नंगे हो, ये शोले ख़ामोश न होंगे
जब तक वे आराम हो तुम, ये नग़मे राहत कोश न होंगे

पसपाई = हार की भावना. मुस्तकबिल = भविष्य. हाल = वर्तमान.
जुलमत = अंधेरा. आतिशयारे = आग के टुकड़े. मिशअल = मशाल.
राहत कोश = सुखी, आराम से रहना.

सुझको इमका रंज नहीं है, लोग मुझे फ़नकार न माने
 फ़िक्र-ओ-मुखन के ताजिर, मेरे शेरों को अशआर न माने
 मेरा फ़न, मेरी उम्मीदे, आज से तुम को अरपन है
 आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दरपन हैं

तुम मे क़वत लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊंगा
 तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊंगा
 आज मे मेरे फ़न का मक़मद ज़ंजीरे पिघलाना है
 आज मे मैं शवनम के बदले अगारे बरसाऊंगा



फ़नकार = कलाकार. अशआर = शेर का बहुवचन. परचम - झंडा.
 बरबत = मिनार की तरह का एक साज़.

‘वकील’ होशियार पूर्ण (पाकिस्तान)

देश के बँटवारे पर गुज़ले

(इन राजलों के लेखकों के घर हिन्दुस्तान में थे. मगर
काट के जमाने में इन्हें अपनी जान बचाकर पाकिस्तान
भागना पड़ा. इन का भारत प्रेम इन राजलों में देखिये)

(१)

जुनूं में येन्-ओ-बरहमन है किस कदर कामिल
हज़ार काफ़लए बेनशान ओ बेमंज़िल
कुछ इग तरह से बढ़ार आई है कि बुझने लगे
हवाए-लाना-ओ-गुल में चिराग़ दीदा-ओ-दिल
रवां है काफ़लये बेदरा-ओ-बेमकसूद
जो दिल गिरफ़्तार है राही, तो रहनुमा गाज़िल
ये उज़्जराव, ये शौके-उरुसे-आज़ादी
उठा के देख तो लेना था परदा-महमिल
हदीमें दर्दे बजुज़ कल महज़ कुछ भी नहीं
न छेड़ किस्मा, ‘मक़तूल’-ओ-‘मक़तूल’-ओ-‘क़ातिल’

चिराग़-दीदा-ओ-दिल = आग़ और दिल के चिराग़. दरा = बिगुल.
शौके-उरुसे-आज़ादी = आज़ादी की दुलहन के लिये शौक. महमिल = घर
स्थान ज़िमें दुलहन या मुन्दरी पर्दे में छुपी हुई हो.

ये बात कहके हुआ नागनुदा अलग मुझसे
 ये है सफीना, ये गिर्दाव है, वो है साहिल
 मैं अपने हल की माजी से क्यों कहूँ बेहतर
 अगर वो हामिले ग़म था तो ये ग़मे हामिल
 मुना रहा हूँ वरंगे ग़ज़ल ज़माने को
 हिकायते ग़मे दारां, फ़ग़ानये-ग़मे-दिल
 चले गये जो हरीफ़ाने दिलनवाज़ 'दफ़ीज़'
 अब उन का ज़िक्र है और याद-गर्मिये-महफ़िल

कई चिगाग़ जलाए उमीदे-फ़रदाने
 उजड़ के वम न गके फिर दिलों के वीराने
 सदा ये अती है मानस रहगुज़ारों में
 कभी तो गुज़रेगे फिर इस तरफ़ से दीवाने

(२)

‘नामिह’ काज़िमी

शह दर शह खूँ बहाए गए यो भी ज़िने तरब मनाए गए
 क्या कहूँ किस तरह सरे बाज़ार अस्मतों के दिये बुझाए गए

हरीफ़ = सखी, संगी, जानकार, प्रेमी, और लागडाट रखने वाले.
 याद-गर्मिये-महफ़िल = सभा की चहल-पहल की याद. उमीदे फ़रदा = आने
 वाले कल की आशा.

रहनुमाओ की गुफ़लतो के तुफ़ैल	काफ़िले राह में लुटाए गए
आह वो खिल्वतो के सरमाये	मजमा-ग-आम में लुटाए गए
इक तरफ़ भूम कर बहार आई	इक तरफ़ आशियां जलाए गए
इक तरफ़ खूने-दिल न था बाकी	इक तरफ़ ज़ने जम मनाए गए
और भी ऐसे हादसे हैं जो	परदा-राज में छिपाए गए
वज़न के साथ हम भी ए 'नासिर'	ख़ार-ओ-ग़ुग की तरह बहाए गए

वो ज़िन्दगी के गहारे नज़र नहीं आते
 कहा है दोस्त हमारे नज़र नहां आते
 न जाने मंज़िले ग़ुरबत में उन पे क्या गुज़री
 तेरे फ़िराक के मारे नज़र नहीं आते
 हज़ूमे-याग हैं और मंज़िलो अवेरा है
 वो रात है कि मितारे नज़र नहीं आते

यहा तक बढ़ गए आलामे हस्ती	कि दिल के हौसखे शल हो गए हैं
कहां तक ताब लाए नातवा दिल	कि सदमे अब मुसलसल हो गए हैं
उन्हे सदियां न भूलेगा ज़माना	यहा जो हादसे कल हो गए हैं
जिन्हे हम देखकर जीते थे 'नासिर'	वो लोग आँखों से ओझल हो गए हैं

तुफ़ैल = कारन. मंज़िले ग़ुरबत = परदेस की मंज़िल शल = चूर, थकित.

न आँखे ही बरसी न तुम ही मिले
न जाने कहा ले गए काफ़िले
जहाँ कोई बस्ती नज़र आ गई
हमें भी करे याद अहले चमन

बहारों में अबके अजब गुल खिले
मुसाफ़िर बड़ी दूर जाकर मिले
बढ़ी रुक गए अजनबी काफ़िले
चमन में अगर कोई गुँचा खिले

आँखों में छुपाए फिर रहा हूं
देते हैं मुराग़ फ़स्ले-गुल का
मंज़िल न मिली तो काफ़िले ने
जंगल में हुई है शाम हम को
रुदांद सफ़र न छेड़ 'नागिर'

यादों के बुके हुए सवरे
शाखों पे जले हुए बग़रे
रस्ते में जमा लिये हैं डरे
बस्ती में चले थे मुंह अंधेरे
फिर अदक न थम सकेगे मेरे

कैसे देखे कहां, देखा न जाए
दर-ओ-दीवार वीरा, शमअ मद्धिम
पुरानी सोहबते याद आ रही है
कहां ग़ु और कहीं लाशों के अंवार
सफ़र है और गुबरत का सफ़र है
कहीं तुम और कहीं हम क्या गुज़व है

वो देखा है जहा देखा न जाए
शबे ग़म का समा देखा न जाए
चिराग़ों का धुआं देखा न जाए
बरा ऐ दौरे-ज़मां देखा न जाए
ग़मे हर कारवां देखा न जाए
फिराक़े जिरम-ओ-जां देखा न जाए

फिराक़े जिस्म-ओ-जा = प्राण और शरीर का वियोग.

(३)

‘मुख्तार’ भिद्वीकी

जो जो सदमे हम पे गुज़रे कैमे उनका वयान करे
कान सा दाग़ निकाल के दिल से सबन मरे-दीवान करे
आठ पहर आशुफ़ता ख़याली, किमको भला खुश आती है
जी मने तो हम भी कुछ दिलजमई का सामान करे
जब से कफ़स का गोशा छूटा, एक ही दुविधा रहती है
जीना मुश्किल, मरना मुश्किल, क्या मुश्किल आसान करे

क्यों बैठ गए गुबार मे हम कुछ कह न सके बहार से हम
तूफ़ां था, हजूम था, ये क्या था गुज़रे है ये किस दयार से हम
हंसते है कि हंस सके ज़माना खुश है तो इस एतबार से हम

कैसे कैसे लोग थे जिनसे बस्ती बस्ती गुलशन थी
गुलशन गुलशन वीराने है, देख लिया इन्सानो को
बिजलियों को भी ताब न थी जिनकी वो नशेमन खुद फूँके
पर मारे न परिन्द जहा छूटा ऐसे काशानो को
शायद अब तामीर की लड़कत पा न सकेंगे जीते जी
जैसे चाहे बहलाए बरवादी के अरमानो को

सब्त करना = जड़ना या छाप लगाना. खुश आना = अच्छा लगना.

(४)

‘साहिर’ लुधियानवी

तरबज़ारों पे क्या बीती मनमग़ानों पे क्या गुज़री
 दिले ज़िन्दा तेरे मरहूम अग़म'नों पे क्या गुज़री
 ज़मी ने खून उगला, आस्मा ने आग बरसाई
 जब दुस्सानों के दिन बदले तो दुस्सानों पे क्या गुज़री
 हमे ये फ़िक्र उनकी अज़ुमन किम हाल में होगी
 उन्हें ये ग़म कि उन में छुट के दीवानों पे क्या गुज़री
 मेरा इल्हाद तो ख़ैर एक लानत था सो हूँ अब तक
 मगर इस आलमे बदशात में ईमानों पे क्या गुज़री
 ये मंज़र कौन गा मंज़र दे, पहचाना नहीं जाता
 सियहख़ानों से कुछ पूछें, शबिस्तानों पे क्या गुज़री
 चलो वो कुफ़्र के घर में मलामत आ गए लेकिन
 खुदा की भमलकत में मंगना जानों पे क्या गुज़री

(५)

‘अख़्तर’ होशियाग़पुरी

जाने किस किम पे वार है हम लोग
 कि ग़रीबुद्दयार है हम लोग
 हम लहू में नहा के आए है
 किस कदर पुर बहार है हम लोग

इल्हाद = धार्मिक कट्टरपन का विरोध भमलकत = राज, सोख़ता = जले हुए.

थे कभी काफ़ले की रूहे-रवां
 अब तो गर्द-ओ-गुवार है हम लोग
 हमने देखी है ज़िन्दगी की बहार
 याद गारे-बहार है हम लोग
 ग़ौर से अहले दह हम को सुनें
 बेकसों की पुकार है हम लोग
 किस को मालूम कब बुझे ये विराग
 कि सरे रहगुज़ार है हम लोग
 दिल के अजज़ाये-ग़म रसीदा के
 आप ही ग़मगुसार है हम लोग
 कोई बतलाए रोशनी है किधर
 बुल्मतां के शिकार है हम लोग
 सर भी अब हम उठा नहीं सकते
 कितने बे अख़्तियार है हम लोग
 अब न छोड़ो हमें खुदा के लिये
 कि बहुत दिलफ़गार है हम लोग
 क्या कहें और अपना हाल 'अख़्तर'
 हसरतो के मज़ार है हम लोग



ग़रीबद्वार = परदेसी. रूहे-रवां = प्राण. अहले दह = दुनिया बाले.
 अजज़ाये ग़म रसीदा = ग़म पाये हुए हिस्से.

‘समहिर’ लुधियानवी

इन्क़लाब की आवाज़

मेरे जहां में समन ज़ार हूँ ढने वाले
यहो बहार नहीं आतशी बगूले है.
धनक के रंग नहीं—सुर्मई फ़िज़ाओ में
उफ़क मे ता-ब-उफ़क फॉसियों के भूले है.
फिर एक मंज़िले खूबार की तरफ़ है रवाँ
वह रहनुमा जो कई बार राह भूले हैं.

बलन्द दावए-जम्हूरियत के परदे में
फ़रोगे महबस-ओ-ज़िन्दो है ताज़ियाने है.
वनामे अमन है जग-ओ-जदल के मन्सूबे
बशोरे-अदल तफ़ावुत के कारख़ाने है.
दिलो पे ख़ौफ़ के पहरे लबों पे कुफ़ले-सकूत
सरों पे गर्म सलाखों के शामियाने है.

समन ज़ार = चंबेली के बाग़. आतशी बगूले = आग के बवंडर,
गर्म हवाएँ. उफ़क से ता-ब-उफ़क = क्षितिज से क्षितिज तक. खूबार =
रक्त पूर्ण. फ़रोग = वृद्धि. महबस = कारागार. ताज़ियाने = कोड़े. जग-ओ-
जदल = लड़ाई, मार काट. अदल = न्याय. तफ़ावुत = असमानता, वर्ग भेद.

मगर मिटे है कभी ज़ब्र और तशद्दु से
 वो फ़लसफ़े कि जिला दे गए दिमागो को.
 कोई सिपाह सितम पेशा चूर कर न सकी
 बशर की जागी हुई रूह के अयागो को.
 कदम कदम पे लहू नज़्र दे रही हैं हयात
 सियाहियों से उलझते हुए चरागो को.

रवा है काफ़लए-इरतकाए-इन्सानी
 निज़ामे-आतश-ओ-आहन का दिल हिलाए हुए.
 बगावतो के दुहल बज रहे है चारों तरफ़
 तिल रहे हैं जवा मिशअले जलाए हुए.
 तमाम अर्ज़-जहा खोलता समन्दर है
 तमाम कोह-ओ-बयाबा हैं तिलमिलाए हुए.

मेरी सदा को दबाना तो ख़ैर, मुमकिन है
 मगर हयात की ललकार कौन रोक़ेगा ?
 फ़सीले-आतश-ओ-आहन बहुत बलन्द सही
 बदलते वक़्त की रफ़्तार कौन रोक़ेगा ?
 नए ख़ायल की परवाज़ रोकने वालो
 नए अवाम की तलवार कौन रोक़ेगा ?

ज़ब्र = ज़बरदस्ती. तशद्दु = हिंसा. जिला = चमक. अयाग = प्याला.
 इरतका = विकास. निज़ाम = व्यवस्था. आहन = लोहा. दुहल = नगाड़े.
 अर्ज़ = धरती. कोह = पहाड़. परवाज़ = उड़ान. अवाम = जनता.

पनाह लेता है जिन महवसां की तीरा निजाम
 वही से मुबह के लशकर निकलने वाले है.
 उभर रहे है फ़िज़ाओ में अहमरी परचम
 किनारे मशरिक-ओ-मगरिब के मिलने वाले है.
 हजार बर्क गिरे लाख आधियाँ उट्टें
 वो फ़ुल खिलके रहेंगे जो खिलने वाले है.



तीरा निजाम = अंधेरी व्यवस्था, अहमरी परचम = लाल झंडा, मशरिक
 = पूर्व, मगरिब = पच्छिम, बर्क = बिजली.

अहमद रियाज (पाकिस्तान)

अदब की जागीर

साथियो हाथ बढ़ाओ कि है हम आज भी एक
कौन कर सकता है तकसीम अदब की जागीर
कौन अफ़कार की कन्दील बुझा सकता है
कौन कर सकता है एहसास की शिद्दत को असीर

(२)

शह बाँटे गए तकसीम हुई गलियां भी
बुलबुल-ओ-गुल की मुहब्बत का फुसूं खत्म हुआ
कितने चेहरे हैं जिन्हे देख न पाऊंगा कभी
कितनी आँखों की लताफ़त का फुसूं खत्म हुआ

(३)

सुब्हे-आज़ादीये-नौ फूट चुकी है लेकिन
हाल-ओ-माज़ी के धिरौदो में अधेरा है वही
बर्के-ख़िरमन, कहीं कांटे, कहीं दस्ते-गुलची
फ़िक्रे-जानां, ग़मे-इन्सां, ग़मे- दुनिया है वही

अफ़कार = विचारों, कल्पनाओं, असीर = कैदी, फुसूं = जादू, सुब्हे-
आज़ादीये-नौ = नई आज़ादी की सुबह, हाल = वर्तमान, माज़ी = भूत,
बर्के ख़िरमन = खलियान पर गिरने वाली बिजली, दस्ते गुलची = फूल
तोड़ने वाले का हाथ, फ़िक्रे जानां = प्रिया के लिये चिन्ता,

(४)

अब भी बदले नहीं आदाब जहांदारी के
 अब भी इन्सान की परवाज़ में हायल है गुबार
 अब भी है गर्म हवादिस की हवा के भोंके
 अब भी मौजों के तलातुम में छिपे हैं मंभधार

(५)

आज भी जीस्त के दोराहे पे बैठे हैं उदास
 मुश्तरक दर्द के मारे हुए घबराए हुए
 हम न काफ़िर हैं, न मोमिन हैं, न अप्रलाक नशी
 कहन-ओ अप्रलास के रौंदे हुए ठुकराए हुए

(६)

साथियो आओ अधूरे हैं अभी यह सपने
 साथियो आओ अभी काम बहुत बाकी है
 अपने बेदार तक्काजों का फिर एलान करें
 ज़िन्दगी अब भी हमें, सिर्फ हमें, तकती है

(७)

साथियो हाथ बढ़ाओ कि है हम आज भी एक
 क़ान कर सकता है तक्सीम अदब की जागीर
 क़ान अफ़कार की कन्दील बुझा सकता है
 क़ान कर सकता है एहसास की शिद्दत को असीर

आदाब = नियम. जहांदारी = साम्राज्य. हवादिस = हादसों, दुर्घटनाओं.
 मुश्तरक दर्द = मिले हुए दर्द; वह दर्द और मुसीबते जिन्हें हिन्दुस्तान
 के बेटवार के बाद हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों को मिलकर उठाना पड़ा.
 मोमिन = मुसलमान. अप्रलाक नशी = आकाश पर रहने वाले, देवता या
 फ़रिश्ते. अप्रलास = दारिद्र्य-

‘कैफी’ आचमी

तिलंगाना *

जईफ़ माएँ, जवान बहने भुके हुए सर उठा रही है
मुलगती नज़रो की आँच में भीगी भीगी पलके मुखा रही है
लहू भरी चोलियों, फटे आँचलो से परचम बना रही है

तराना, जंग गा रही है

सफ़ेद पलकों, खिंची हुई भुर्रियों में शोले मचल रहे हैं
जवां निगाहो, जवां दिलों से हज़ारो तूफ़ां उबल रहे हैं
भरे हुए दामनो में पत्थर घरों से बच्चे निकल रहे हैं

सब एक ही समत चल रहे हैं

चमक रहे हैं गठीले शानों पे फावड़े, बेलचे, कुदाले
उड़ा रही है हवा में चिनगारियां तफ़ंगो की गर्म नाले
ये गोलियां बे फ़िफ़क लहू में जो बादशाहों के भी नहाले

ये गोफने ताज जो गिराले

ये ताजदारी ये शहयारी ज़मीन पर बार हो गई है
जफ़ा की खूगर ग़रीब दुनिया जफ़ा से बेज़ार हो गई है
ज़मी पे हर छावनी निगलने को आज तैयार हो गई है

कि भूक बेदार हो गई है

शानो = कन्धों, [तफ़ंगों = बन्दूका, गोफने = एक तरह का हथियार,
खूगर = अभ्यस्त,

* तिलंगाना के किसानों पर रज़ाकारों ने बड़े जुल्म ढाए थे, उसी मौक़े पर यह कविता कही गई,

अवाम का इज़तराब है ये अवाम का पेच-ओ-ताब है ये
सितम से दबना है ग़ैर मुमकिन कि हर सितम का जवाब है ये
समझते हो सत्तियागरह इसको ? इरतक्का का अताब है ये

भुका दो सर इन्कलाब है ये

ये दोस्ती की मुहिम कहाँ तक ये जेहदे-कौल-ओ-करार कब तक
सुनेगा फ़रियाद अहले-ग़म की न जाने जागीरदार कब तक
रहेगी दस्ते-जमूद में यूँ ही नब्जे-लैलो निहार कब तक

करेगा वक्त, इन्तज़ार कब तक

हयात अँगड़ाई लेके अपना निज़ाम अब खुद संभालती है
जली हुई बस्तियों पे तामीर अक्स शहरों का ढालती है
रविश रविश की शगूफ़ाकारी चमन को सांचे में ढालती है

कली कली रंग उछालती है

उभरती इन्सानियत की तौहीन है तशहूद की हुकमरानी
जबीने-तारीख़ पर है इक दाग़ आज की मुतलकुलअनानी
तुम्हारे हमराह फ़तह-ओ-नुसरत तुम्हारे कदमों में कामरानी

मुजाहिदो वह है राजधानी



इज़तराब = बेचैनी, तड़प. इरतक्का = विकास, उन्नति. अताब = कोप.
मुहिम = संघर्ष जेहद = कोशिश, खीचा-तानी. दस्ते जमूद = जड़ता के हाथ.
लैलो निहार = दिन और रात. शगूफ़ाकारी = कलियों का खिलना. तशहूद =
हिन्सा. मुतलकुलअनानी = निरंकुशता. नुसरत = विजय. मुजाहिदो = धर्म,
अधिकार और सत्य के लिये लड़ने वाले.

‘बिस्मिल’ शेखूपूरी

साजन रूप पुजारी निकले

भौरे ने भी कहा था ऐसा

पी को जान न अपने जैसा

लोग जिन्हें कहते थे योगी

अक्सर वह ससारी निकले

साजन रूप पुजारी निकले

मैंने समझा प्यार करेगे

औरों का न ध्यान धरेगे

जितने नैन थे भोले भाले

उतने अत्याचारी निकले

साजन रूप पुजारी निकले

प्रेम पुजारी कहने वाले

प्रेम नगर में रहने वाले

दो दिन इस दुनिया में आकर

जोबन के व्योपारी निकले

साजन रूप पुजारी निकले

अब्बास अहमद 'अब्बास'

गजल



क्या जानिये क्या कुछ दिखलाए सीने की दुखन आँखों की जलन
रुमबा भी हुए शहरो शहरो कम हो न सकी पर दिल की लगन
ख़्वाबों की हर्मी दुनिया पे भी है बीते हुए लमहों का साया
तड़पाती है दिल को रह रह कर नाकाम तमन्नाओं की चुभन
हम यों तो गवारा कर लेते ए जाने-तमन्ना दूरी भी
बेचैन मगर कर डंती है रह रह के तेरी खुशबूए-बदन
अब इसकी शिकायत क्या और क्यों तुमको ही तो था तज़ई का जुनूं
ए अहले-चमन इस कोशिश में खुद तुमने उजाड़ा अपना चमन
अब दिल में कोई ख़्वाहिश ही नहीं अब हमको किसी का गुम भी नहीं
दुनिया से हुए है देगाने बरा दग चुके दुनिया का चलन
यों कहने को लाखों बातें है अशआर में जो ढल सकती है
जिस बात का दिल से रब्त नहीं वह मंग नहीं मौजूए-मुखन
वह आम के बाग़ और ठंडी हवाएं साँवले चेहरे गोरे बदन
उस देस की यादें डसती है जो दग नहीं अब अपना बतन

तज़ई = ख़ैराने, मौजू = विषय रब्त = सम्पर्क.

जमीलुद्दान 'आली'

विखरी पंखड़ियां

धरती से आकाश पहुंचते धनक ने क्या बल खाए,
कोई देखे कोई सोचे मन सब का लहराए,

तह में भी है हाल वही जो तह के ऊपर हाल
मछली बच कर जाय कहाँ जब जल ही सारा जाल

'आली' अब के कठिन पड़ा दीवाली का त्योहार
हम तो गए बड़े छेला बनकर भैया कह गई नार

घनी घनी ये पलकें तेरी ये गरमाता रूप
तू ही बता ओ नारि मैं तुझको छांव कहूं या धूप

मैंने कहा कभी सपनों में भी शकल न मुझको दिखाई
उसने कहा भला मुझ बिन तुझको नींद ही कैसे आई



नार = नारी.

‘शमीम’ किरहानी

रसमसाहट

दिल के गोशों में एक तमन्ना	रंगी शमर्ग जला रही है
दिल की रग रम में खून की रौ	मीठे सरगम बजा रही है
जो वर्ग है ताल दे रहा है	जो मौज है गुनगुना रही है
सूरज बरसा रहा है सोना	शबनम मोती लुटा रही है
चलते चलते ठिठक रहा हूँ	कोई आवज़ आ रही है
धुंदले धुंदले से आँमुआ में	तसवीर सी मुस्करा रही है
मुंह बन्द कली खिली नहीं है	खिलने ही को रममसा रही है
रह रह के हवाए-सैरे-सहरा	दर शौक का खटखटा रही है
भौरा रस पी रहा हूँ छिप कर	तितली खुशबू चुरा रही है
मस्ती जुलमत की वादियों में	सीमी तारे लुटा रही है
फ़र्श उम्मीद पर तमन्ना	कच्ची कलिया बिछा रही है

मुनसान गली में खिलखिला कर
हँसने की सदा सी आ रही है

हवाए-सैरे-सहरा = जंगल की सैर करने की इच्छा. दर = द्वार.
जुलमत = श्रंखकार. सीमी = रुपहले.

परोपकार 'पयाम'

छोटी साइकिल वाली

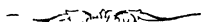
लहराती कतराती जाती
उम्र कोई बारह चौदह की
बालों को खोले लहराए
लाल फराक सुनहरे मोजे
घंटी देती चौकाती है
गुज़र गई तेज़ी से ऐमे
बंगलो में होकर जाती है
उजली उजली चौड़ी सड़के
सड़को पर तेज़ी से रवा है
मुड़ी तो लचकी कौस कज़ह सी
डूब गई बंगले में जाकर
फूलों के तख्तों पर पहुँची
घूम के तेज़ी से मुड़ती है
मुड़ी साइकिल कलब में पहुँची
वो देखो अब कितनी हसी है

सन सन साइकिल वाली जाती
भोली भाली बहकी-बहकी
शाम घटा का रंग चुराए
दूर सड़क पर कौधा लपके
उड़ती हुई कहां जाती है
चमक गई चपला-सी जैमे
बंगलों से होकर आती है
नीची ऊंची तिरछी सड़कें
कभी यहा है कभी वहां है
बढ़ी तो भूमी मस्त घटा-सी
निकल पड़ी फिर लान पे आकर
फौवारों के गिर्द भी घूमी
वो देखो तितली उड़ती है
कलब से निकली सड़क पे चमकरी
हाथों में हैडिल भी नहीं है

कौस कज़ह = इन्द्र धनुष.

हैडिल अगर निकल जाए तो पहिया कहीं फिसल जाए तो
 ये जाती है वो जाती है हवा में नागिन लहराती है
 लम्बे पेगों भूल रही है ज़ालिम खुदको भूल रही है
 जीवन इतना हसी नहीं है इसको इसका यकी नहीं है
 बचपन और जवानी बाहम देते है आलम पर आलम

काश ! कोई ये राज़ बतादे
 इसको मेरी नज़्म मुनादे



‘मजरूह’ सुल्तानपुरी

काफ़ले

हे चार सन्त खल्क का हजूम-बेकरा रवां
मिलां से वह उठा धुआं
यह सहमे सहमे काफ़ले यह खोए खोए कारवा
मैं क्यों खड़ा हूँ राह में

फ़ज़ाए बाम-ओ-दर पे आतर्शा गुवार छा गया
नज़र को ग़श-सा आ गया
कोई निज़ार-ओ-नातवा सड़क पे लड़ खड़ा गया
मैं क्यों खड़ा हूँ राह में

जली वह शमाण, मुनइमों की अंजुमन सँवर गई
सियाही और निखर गई
यह कौन थी जो यों मेरे करीब से गुज़र गई
मैं क्यों खड़ा हूँ राह में

सिमट के हर मका में रुहे-इज़्तराब सो गई
फ़ज़ा ख़मोश हो गई
अभी जो शमअ जल रही थी तीरगी में खो गई
मैं क्यों खड़ा हूँ राह में

हजूम बेकरां = अनगिनत भीड़, मुनइमों = अमीरों, तीरगी = अधकार.

अहमद नदीम क़ासिमी

चली मशीन चली

एक बटन कुछ कह कर तड़पा, सारा ढांचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुर्ज़ा पुर्ज़ा भागा
रेशे रेशे रस दाँड़ा कर चटकी एक कली
चली मशीन चली

लोहा जब लोहे को काटे ठना ठना ठन बोले
उचक उचक कर चोटे मारे शोलों के पर तोले
“मिल” के चारों खूंट बिखेरे ताने भली भली
चली मशीन चली

हम तपते फ़ीलाद के टुकड़े इक राँ में दाँड़ाएँ
जैसे एक कतार में सजकर दिये दमकते जाएँ
जैसे चांद बहे भरने में बन कर डली डली
चली मशीन चली

धात के इक तूदे को हमने गाला और उछाला
अपनी जवानी देकर हमने उसका रंग उजाला
एक किया जब खून पसीना तब यह कील ढली
चली मशीन चली

री = लहर. तूदा = ढेर. गाला (पंजाबी शब्द) = गलाया.

कील ढली तो सोना बनकर मिल-मालिक तक पहुँची
अपनी उजरत बढ़ते बढ़ते आखिर दिक्कत तक पहुँची

जल को जगाने वाली मछली तेल में आन तली
चली मशीन चली

हम मजदूर, किसान, कुली, शायर, मुन्शी, हरकारे
जग की रौनक हम से, हम ही जग में फिर बिचारे

बिकती हैं सौ रूप बना कर मेहनत गली गली
चली मशीन चली

इक धुरें से उड़ा शरारा, इक चक्कर में घूमा
इस चक्कर ने धन-दाँलत के अंगारों को तूमा

अंगारों से फूल भड़े-कुछ ऐसी आग जली
चली मशीन चली

माज़ी की “तारीख़” का सारा धोका आँखे झपके
दुनिया भर के मेहनत कश इक लश्कर बन कर लपके

कोई पुकारे “हैया हैया”—कोई “अली अली”
चली मशीन चली

एक बटन कुछ कह कर तड़पा, सारा ढाँचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुरा कर पुर्ज़ा पुर्ज़ा भागा

रेशे रेशे रस दौड़ा कर चटकी कली कली
चली मशीन चली



उजरत = मजदूरी. शरारा = चिनगारी. तूमा = किया.

तख्त सिंह

लाल सवेरा

वह देखो ! गुलरंग उफ़क से
भाँका लाल सवेरा
छूट चली है रात की नब्ज़
कॉपा घोर अंधेरा
मन-मन में हे जीवन भर के
मुख-मपनो का डेरा
लहराएगा पल दो पल में
हर जा मुख फरेरा
वह देखो ! गुलरंग उफ़क से
भाँका लाल सवेरा

(२)

एकाएकी फूट पड़ेगे
नूर के सीमा धारे
शोले बन कर नाच उठेंगे
चर्ख के ठंडे तारे
हो जाएंगे राख भुलस कर
मदियों के अधियारे

उठने को है जीवन पथ से
दुख का टांडा-डेरा
वह देखो ! गुलरंग उफ़क से
भाँका लाल सवेरा

(३)

वह कांटों की शमशीरों को
देख के गुल गुराए
वह नाच उठे खाक के ज़रें
वह गुन्चे मुस्काए
वह भागे किरनों के आगे
ढलती रात के साए
वह आज़ादी के सूरज ने
हर सू नूर बिखेरा
वह देखो ! गुल रंग उफ़क से
भाँका लाल सवेरा

गुलरंग उफ़क = लाल क्षितिज. फरेरा = झडा. सीमा = स्पहले.
हर सू = हर तरफ़.

(४)

एका एकी करवट लेकर
 वह मेहनत कश जागे
 वह सैलाब-सा उमडा हर सू
 वह ज़ालिम उठ भागे
 काप रहे है धनियों के दिल
 मज़दूरों के आगे
 वह लाखों भूको ने मिलकर
 महलो को जा घेरा
 वह देखो ! गुलरंग उफ़क से
 भांका लाल सवेरा

('५)

धरती पर सबका हक होगा
 मुख के दिन आएंगे
 मेहनत कश अपनी मेहनत का
 खुद ही फल खाएंगे
 आज़ादी के मधुर तराने
 सब मिल कर गाएंगे
 रहगीरों को छू न सकेगा
 कोई चोर लुटेरा
 वह देखो ! गुलरंग उफ़क से
 भांका लाल सवेरा

मुहम्मद सफ़दर

किश्तियां और रेत

(१)

यहां सैकड़ों साल से कहकशां के
सितारो की मानिन्द, मौजो
पे बिखरी हुई किश्तियां, पाल खोले
गुज़रती रही है
जहां धान की खेतियों के किनारे
मधुर मस्त दरिया बहे जा रहा है
कभी उस की तारीक चादर पे चलते हुए
किसी नाव के चप्पुओं पर
धनुष खेलती है
कभी चोदनी नाचती है
दरख्तों के घेरे
में खोए हुए गाँव तक इस की मद्धिम तरंगों
की आवाज़ जाती नहीं है
मगर सैकड़ों साल से किश्तीबानों
का गीत इस फ़िज़ा की घनी ख़ामुशी में
छलकता रहा
गूँजता ही रहा
गूँजता ही रहेगा।

कहकशां = आकाश गंगा, किश्तीबानों = मल्लहों.

(२)

सितारों की शमएं
 खमोशी के साए, लिये शाम आई
 सियह पानियो पर
 हवा की जगाई हुई सिलवटें काँपती है
 अभी धान के सरसराते हुए खेत कुहरे में खो जायगे
 किनारों पे जंगल में दुबके हुए गाँव सो जायगे
 हर एक चीज़ सो जायगी
 मगर किस्ती बानों का गीत इस घनी खामोशी में
 गगन के तले गूँजता ही रहेगा.

(३)

सरकते धारे
 मचलते धारे के उस किनारे
 बसे हुए शह की पुरानी
 इमारतों की कद्दीम आँखों
 ने सैकड़ों साल किस्तियों को गुज़रते देखा है
 और उनके कानों ने सैकड़ों साल से सुनी है
 यही सदाएं, बुलन्द तानें
 ये किस्ती बानों का गीत स्टीमरों के तारीक शोर में भी
 छलक रहा है.
 उमंड रहा है

(४)

गरजते धारे को चीरती किश्तियों के कड़ियल चलाने वालों
 के बाजुओं में वही थकन से भरा सुकू है
 जो तेज़ दरिया की मस्त गम्भीर चाल में है
 सियाह जिसमो के गर्म उमड़ते हुए लहू में
 वही भटक है जो तुन्द मौजों के वहशियाना निरित्य में है
 यह नाव वाले
 उन्हीं समुन्दर के शहसवारों के पूत हैं
 जिनको, सदियां गुज़री, कि तम्रलिप्ती की गोदियों से
 सफ़ेद पालों की राजहंस ऐसी किश्तियों पर
 निकल के नीले उफ़क को छूने चले गए थे
 उन्हीं के शंखों की गूँज से सैकड़ों बरस की
 ख़मोशियां थरथरा रही हैं
 उन्हीं के जयकारों से अभी तक
 सियाह घने जंगलों में खोए
 तबाह कम्बोज के शिकस्ता खंडहर लरज़रहे हैं

(५)

सत्हे दरिया पे है मौजों के नक़ूश
 नहीं दरिया नहीं — यह सिलसिला मौज नहीं
 रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

सुकू = शांति, आराम. निरित्य = नृत्य, नाच, तम्रलिप्ती = ताम्रलिप्ति
 में एक स्थान. नुक़ूश = रेखाएँ, चिन्ह.

अरक आलूदा जबीनों पे शफ़क की बारिश
 और कोहसार में बल खाती हुई राहगुज़र
 यहां पानी नहीं और राहगुज़र—
 इन्तदा ? इन्तहा ? इक मौजे ख़यालात का गुमग़स्ता राग

रेत उड़ती है कभी तेज़ हवा चलती है
 ख़ारज़ारों में हवा—खुश्क़ दरख़्तों में हवा
 सूने माबद में हवा
 मौत के राग धुंदलके में बिखर जाते हैं
 दूर से माओं के नौहे की सदा आती है
 यहां पानी नहीं यह सिलसिलए मौज नहीं
 रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

खुश्क़ बादल कभी कोहसारों में
 खुश्क़ चेहरे सुए गरदूँ निगरां
 खुश्क़ बादल भी गरजते तो हैं— बरसेगे कभी ?
 गूँज की लर्ज़िशें, बेआब चटानों में रवां
 गूँज की लर्ज़िशें हैं, पानी की आवाज़ नहीं
 यहां पानी नहीं, यह सिलसिलए मौज नहीं
 रेत पर बन के बिगड़ती है हवा की तहरीर

अरक आलूदा जबीनों = पसीने से भीगे हुए ललाटों, शफ़क - लालिमा.
 गुमग़स्ता = खोया हुआ. ख़ारज़ारों = काटों की भाड़ियां. माबद = पूजा या
 इबादत करने का स्थान. सुए गरदूँ निगरां = आकाश की ओर देखते हुए.
 लर्ज़िशें = लरज़ना, कंपन.

कभी आएगी यहां दस्त में पानी की सदा ?

कभी आएगी यहां दस्त में पानी की सदा ?

ए खुदा ! ए मेरे अजदाद के रब

ए मेरे अजदाद के रब !

(६)

तने हुए-चरचराते रस्ते

लरज़ते आसाब

तुन्द सांसे

भुके हुए जिस्म, कांपते थरथराते बाजू.

यही ख़मोशी-यही मशक्कत

सदा ख़मोशी-सदा मशक्कत

सदा सुहागिन ज़मी के बेटों की आज तक है यही कहानी

यही है किस्मत.

यही रहेगी, सदा रहेगी

नही, दहकता लहू शफ़क है

जो शाम के नीले आसमानों पे खिल रही है

यही पसीने के सर्द क़तरें सिजिल सितारे हैं

सुबह की मांग के सितारे.



दस्त = जंगल. अजदाद के रब = पूर्वजों के पालन हार. आसाब =
रग-पट्टे. सिजिल = सजे हुए.

‘वामिक’ जौनपुरी

“सूखे हुए बेले”

तुमने सूखे हुए बेले भी कभी सूँचे है ?

उनको मसला न करो

कितनी आजुर्दा मगर भीनी महक देते है

उनको फेंका न करो

खाक में लुथड़े हुए चेहरों को समझा भी करो

सिर्फ देखा न करो

हाथ और पैर के जख्मों का मदावा भी करो

सिर्फ छेड़ा न करो

तुमने सूखे हुए बेले भी कभी सूँचे है ?



आजुर्दा = दुखी हुई, उदास. मदावा = दवा, इलाज.

‘मखमूर’ जालन्धरी

मेट्रो होटल

खुश तरतीबी—————लूट खसोट

फूलों-पत्तों का दरवाज़ा और मेजों पर हैं गुलदस्ते
दरियों पर कालीन रँगीले सोफ़ों पर कमख़वाब के गद्दे
दूर नशिस्तो तक जाने के टेढ़े मेढ़े हैं कुछ रस्ते
दो पल इस माहौल के अन्दर महुँगे दामो भी हैं सस्ते

गहमा गहमी—————रस्मी भीड़

दो सौ मेज़े, छे सौ सोफ़े बाहर सौ मेहमां आए हैं
सब्ज़ी मंडी में वीरानी हर सब्ज़ी का भाव है तेज़
जनता भूकी रह के भी खुश है आज उस के परधान आए हैं
चिकनी-चुपड़ी तकरीरो के उसके लिये पकवान आए हैं

लफ़फ़ाज़ी का—————भाषन नाम

अपने अनदाता जगदाता देस में है ग़ूरक का तोड़ा
दूध और फल, मछली और अंडों को आटे का बदल बना लो
सच्चे सेवक का नारा हो—करो ज़ियादा, खाओ थोड़ा
और भाषन में बोल रहा है भुने हुए चूज़ों का जोड़ा

नशिस्तो = बैठकों, माहौल = वातावरण, लफ़फ़ाज़ी = शब्दावली

बैरे ————— बावर्दी तज़लील

जो कुछ उनसे माँगा जाए भाग दौड़ कर ले आते हैं पानी तक लाते हैं सजाकर ऐसी नफ़ासत दिखलाते हैं नज़र बचाकर रख सकते हैं जेबों में जो चीज़ भी चाहे लेकिन घर में प्याज़ की गाँठें रोटी पर रख कर खाते हैं

संगों पहरा ————— रोब-ओ-जलाल

सूखे मुँह और मँले कपड़े भाँक रहे हैं दीवारों से उनकी तरफ़ सोंटों, संगीनों और बन्दूकों का खूब कर दाँ रक्खो हंगामे का ग़दशा ऐसे बहशी खूँख़ारों से हर्गिज़ ग़फ़िल होके न बैठो दृष्टे, हारो, दुखियारों से

बेदारी ————— बेबाक जलूस

नारे लगाते पागल लड़के ज़ख़्म हरे सीने नहीं देते जाने इनको क्या मिलता है डाल के याँ ही रंग में भग अपने नेताओं को मुख से चाय तलक पीने नहीं देते जाओ जहाँ भी आजाते हैं यह लड़के जीने नहीं देते

लड़के ————— है भी तो नादान

इतना भी इदराक़ नहीं आख़िर सरकार मचल सकती है नीचों के क्यों दोस्त है बनते भूकों का क्यों साथ है ढंटे सर पर लाठी पड़ सकती है दिल पर गोली चल सकती है ताकतवर सरकार कहीं अपनी नीयत से टल सकती है

ख़्बशा = आशंका, डर. बेबाक = निडर. इदराक़ = समझ. बावर्दी तज़लील = वदी पहने हुए अपमान.

अब्दुल मजीद भट्टी

गीत

बेटी गांव भर की बेटी
बेटी सब की लाज
नगर-नगर में कौड़ी-कौड़ी बेटी बिक गई आज
आया अपना राज

अब तक मेरे रिश्ते क्या थे
बेटी बहन और मां
रिश्ते गिनवाते-गिनवाते छुट गई मेरी लाज
आया अपना राज

खेती बाड़ी महल दो महले
सब कुछ हो गया राख
खाती-पीती दुनिया हो गई मुफ़लिस-और मोहताज
आया अपना राज

वो सतजुग था ये कलजुग है
सब से कहते-कहते
हम किस जुग में आ पहुंचे है ? कहते आए लाज
आया अपना राज

बलराज कोमल

अकेली

अजनबी ! अपने कदमों को रोको ज़रा
जानती हूँ तुम्हारे लिये ग़ैर हूँ
फिर भी ठहरो ज़रा
सुनते जाओ ये अड़को भरी दास्ता
साथ लेते चलो ये मुजस्सिम फुग़ां
आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं

मेरी अम्मी नहीं
मेरे अब्बा नहीं
मेरी आपा नहीं
मेरे नन्हे से मासूम भैया नहीं
मेरी असमत की मग़रूर किरने नहीं
वह धरौदा नहीं जिसके साए तले
लोरियों के तरजुम को चुनती रही
फूल चुनती रही
गीत गाती रही
मुस्कराती रही
आज कुछ भी नहीं

मुजस्सिम फ़ुग़ां = साकार कराह. असमत = सतीत्व. मग़रूर किरनें =
अपने ऊपर धमक करने वाली चमक. तरजुम = तराने, संगीत.

आज कुछ भी नहीं.

मेरी नज़रो के सहमे हुए आइने

मेरी अम्मी के, अब्बा के, आपा के, और मेरे नन्हे से मासूम भय्या
के खूँ से हैं दहशत ज़दा

आज मेरी निगाहों की वीरानिया चन्द मजरूह यादों से आबाद है

आज मेरी उमंगों के सूखे बँवल मेरे अदक़ों के पानी से शादाब हैं

आज मेरी तड़पती हुई सिसकियाँ एक साज़े शक़स्ता की फ़रियाद है
और कुछ भी नहीं

भूक मिटती नहीं

तन पे कपड़ा नहीं

आस मादूम है

आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं

आज दुनिया में मेरा कोई भी नहीं

अजनबी ! अपने कदमों को रोको ज़रा

मुनते जाओ ये अदक़ों भरी दास्ता

साथ लेते चलो ये मुजस्सिम फ़ुग़ां

मेरी अम्मी बनो,

मेरे अब्बा बनो,

मेरी आपा बनो,

मेरे नन्हे से मासूम भैया बनो

मेरी अस्मत की मगरूर किरने बनो

मेरे कुछ तो बनो !

मेरे कुछ तो बनो !!

मेरे कुछ तो बनो !!!

मजरूह = घायल. साज़े शक़स्ता = टूटे हुए साज़. मादूम = ग़ायब.

मसऊद अखतर 'जमाल'

किसानों का इन्क़लाबी गीत

यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

अमृत बादल बन के उठे है परबत से टकराएंगे
खेतों की हरियाली बनकर छबि अपनी दिखलाएंगे
दुनिया का दुख सुख अपना कर दुनिया पर छा जाएंगे

हम खुद ही तकदीर हैं अपनी अब अपना ही सहारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

दुनिया अब चोला बदलेगी जीवन रंग दिखाएगा
मिट्टी अब सोना उगलेगी बादल हुन बरसाएगा
मेहनत पर है जिसका भरोसा मेहनत का फल पाएगा

अपने ही कस बल का समुंदर वक्त्र का बहना धारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

सुंदर सपनों के घूँघट से आशा रूप दिखाती है
अपनी ही आवाज़ की लय पर सारी दुनिया गानी है
तलवारों की तेज़ चमक में बिजली-सी लहराती है

एक ही वार में अब ए साथी दुश्मन से छुटकारा है
यह धरती, यह जीवन-सागर, यह संसार हमारा है

इमरान अन्सारी

ये कैसे कहें

ये कैसे कहूं ए जाने चमन
आज़ाद नहीं है अपना वतन
भूके तो अभी तक भूके हैं नंगे हैं अभी तक लाखों बदन

मैखाना वही, पैमाने वही
ऐवान वही, काशाने वही
आसार वही, वीराने वही
अफ़लास के ताने बाने वही
पिन्दार वही, दीवाने वही
जमशेद वही, जमख़ाने वही
कुछ साक़ी ने चोला बदला है कुछ रिन्दों ने बदले पैराहन !

एहसास वही, जज़्बात वही
आकाश वही, दिन रात वही
है ऊंची नीची ज़ात वही
आलाम वही आफ़ात वही

पिन्दार = घमंड. जमशेद = ईरान का बहुत बड़ा बादशाह. जमख़ाना =
जमशेद का महल और दरबार. रिन्दों = शराब पीने वालों. पैराहन = कपड़ा
लत्ता. भेष. आलाम = ग़म, दुख. महक़ूमी = गुलामी, परतंत्रता.

महकूमी के सदमात वही
है पर्दे के पीछे हात वही
जो होली थी वो होली है, है, खून में डूबे गंग-ओ-जमन !

ज़रदार वही, खूँख़ार वही !
हैं चोरो के बाज़ार वही
सदियों के इजारादार वही
ऐयार वही, मक्कार वही
बेकार मगर पुरकार वही
हो जिन पे खुदा की मार वही
जीने को नहीं इक नाने-जवीं, मरने को नहीं दो गज़ भी कफ़न !

है तख़्त नया, पर ताज वही
राजे तो नए है, राज वही
जो कल तक था, है आज वही
जमहूर के काम-ओ-काज वही
ताख़्त वही, ताराज वही
मफ़्ज़क वही मोहताज वही
रोना है यही फिर रोते है, क्यों आज नहीं हम ख़न्दा दहन !

जब वो भी वही है हम भी वही
फिर क्यों न रहे दम ख़म भी वही
बागी भी वही बरहम भी वही
हम में है अभी तक दम भी वही

गंग-ओ-जमन = गंगा-जमुना. नाने जवीं = जौ की रोटी. ताख़्त और
ताराज = लुटमार, बरबादी. ख़न्दा दहन = हँसते हुए.

सुरदरपन के सरगम भी वही

मन मंदिर में चमचम भी वही

ये जुल्मत भी छूट जाएगी, है दिल में हमारे चंद्र किरन !

बदलेगा ज़माना बदलेगा उम्मीद का क्यो छोड़े दामन !!



जमील मलिक, पकिस्तान

गजल



छोड़ो भी नफरत की बातें आओ कोई काम करें
मुल्को मुल्को अमन-ओ-मुहब्बत के अप्साने आम करें

वक्त की ज़िन्दा कदें हमसे कुरबानी की तालिब हैं
आज ये अपना काम नहीं है जिक्रे-मए-गुलफ़ाम करें

हम अपने आदर्श की खातिर जान भी अपनी दे देंगे
आपको इसकी फ़िक्र ही क्यों हो आप हमें बदनाम करें

आकाशो पर रहने वाला धरती पर कब आता है
कब तक हूँ 'ते' उसका सहारा आप ही अपना काम करें

हमको तो मैदान में आकर तूफ़ानों से लड़ना है
जुल्फ़ों की ठंडी छाँवों में आप अभी आराम करें



कदें = मान. जिक्रे-मए-गुलफ़ाम = गुलाबी शराब का जिक्र.

‘अफसर’ आज़री, पाकिस्तान

गजल



जुल्मत से सवेरा फूटेगा, पस्ती से उभारे उभरेगे
कुछ और उमीदे टूटेगी, कुछ और सहारे उभरेगे
रूहों के सरकश नमो से जब सुर्ख सवेरा फूटेगा
नींदों के माते जागेगे, फाकों के मारे उभरेगे
किश्ती की तलब कैसी साथी मल्लाह से क्या लेना है हमें
मौजों के भरोसे डूबे है, तूफ़ान के सहारे उभरेगे
वो दिन भी कोई अब दूर नहीं, वो वक़्त भी आने वाला है
आकाश से शोले बरसेगे, धरती से शरारे उभरेगे
कुछ और निगाहे सँवरेंगी, कुछ और इरादे मुलभेगे
कुछ और शुआएँ निखरेंगी, कुछ और सितारे उभरेगे
औकात की अंधी मौजों ने, शिकनों में लपेटा है जिनको
गिर्दाब के खूनी आँचल पर इक दिन वो किनारे उभरेगे
इन मुर्दा मुर्दा रूहों पर सदियों से गुलामी छाई है
ए दोस्त ! किंभोड़ ज़रा इनको, ये लोग उभारे उभरेगे

शरारे = चिनगारियां. गिर्दाब = भँवर.

हबीब तनवीर

माँ

माँ !

मैं तेरी हालते ज़ार से बेख़बर तो नहीं हूँ

तेरा नूरे नज़र हूँ

तेरा ज़ख़्मे जिगर तो नहीं हूँ

सैदे-अफ़्लास हूँ

मायले कर-ओ-फ़र तो नहीं हूँ

मैं, कि लड़ता हूँ ज़रदारियों के खिलाफ़

मैं ग़दाए-दरे-अहले ज़र तो नहीं हूँ

आज बेबस हूँ और सख़्त मजबूर हूँ

बे हुनर तो नहीं हूँ

तेरी नज़रो से मैं दूर हूँ

पर तेरे हाल से बेख़बर तो नहीं हूँ.

साजिशें हो रही है

सारी दुनिया के ताजिर

ढाकुओं के गिरोह

सर से सर जोड़ कर देख सरभोशियां कर रहे है

सैदे अफ़्लास = म़रीबी का शिकार, कर-ओ-फ़र = शान और घमंड
और दिखावा पसन्द करने वाला, ग़दाए-दरे-अहले-ज़र = अमीरो के दरवाज़े
का भिखमंगा,

फेंक कर चन्द डालर के दाने
और फैलाके इक जंग का दाम

मजदूरों की बोटियों से

भोलियां भर रहे है
आज ये सब कदम जोड़ कर
अपने हाथों में रेशम के फन्दे लिये
कातिलाना इरादों से मेरी तरफ बढ़ रहे है
और तेरी तरफ बढ़ रहे है
तू, कि मां जिसको कहती है दुनिया
कोख से जिसकी शायर, कलाकर
दीदावर, अहले-दानिश, जरी दिल, सिपाही जनम लेते है
तेरे आगोश, अमन-ओ-मसरत का गुलशन
जिन्दगी की बहारों का मस्कन, तेरी गोद है.

× × × ×

और ये दो चार जूर के गुलाम
सिर्फ दो चार सिक्कों की खातिर
नम-ओ-शेर के मस्कनों को
राहत-ओ-अमन के गुलशनो को
फूंक देने पे आमादा है
नन्हे मासूम बच्चों
जवा साल माओ की नन्ही बहारों

हसी खिरमनो को

जंग की आग में

दाम - माया जाल, जरी दिल = बहादुर दिल वाले, आगोश = गोद.

भोक देने को बेताब हैं
फिर मैं खामोश क्योंकर रहूँ ?

× × × ×

माँ !
मैं तेरी हालते ज़ार से बेख़बर तो नहीं हूँ
मैं तो क्या इक जहाँ अब तेरे हाल से बाख़बर है
सामराज और जागीरदारी के सर पर
आज जनता की तलवार है
देख तेरा लड्डू चूसने वाली सरमायादारी की गर्दन
आज जनता के हाथों में है
माँ ! तेरा ख़्वाब
ख़्वाब जूया की माँ का
ख़्वाब हिन्दोस्ताँ का
ख़्वाब सारे जहाँ का
आज पूरा हुआ चाहता है

× × × ×

हर तरफ़ से किसान उठ रहे हैं	हर तरफ़ से अवाम आ रहे हैं
और मजदूर के लश्करो को	हर तरफ़ से सलाम आ रहे हैं
माँ ! तेरी बेटियाँ, तेरे बेटे	आज इन्साँ के काम आ रहे हैं
ईस्तालीन और माओज़े के	सबके होटो पे नाम आ रहे हैं
अब मेरी राह सूनी नहीं है	कारवाँ सुन्ह-ओ-शाम आ रहे हैं
दम ब दम सुख-ओ-रंगीं उफ़क़ से	सुन्हे नौ के पयाँम आ रहे हैं

रात मैदान से लखवाती हुई भाग उठी है.

जूया = रूस की एक बहादुर लड़की जिसे नाज़ियों ने क़त्ल कर दिया.
ईस्तालीन, माओज़े = रूस और चीन के जनतंत्र के नेता,

मसऊद अली 'जौक़ी'

झील के किनारे

कल मुब्ह को ए दोस्त दबे पाँव यहाँ से
चुपके से निकल जाए किसी को न ख़बर हो
बस्ती से निकल कर किसी रस्ते को सिधारे
चलती हुई थम थम के जहाँ बादे-सहर हो
महके हुए जंगल पे अभी नाद हो तारी
हर चीज़ पे कुछ ख़ाब के जादू का असर हो
आसूदा हनोज़ अपने नशेमन में हों तायर
जाती हुई कुछ रात हो, कुछ नूरे सहर हो
आँखे भी न खोली हो अभी "नाद परी"ने
सोया हुआ सबज़ा भी अभी ओस में तर हो
नम घास पे हम दोनों के क़दमों के निशा से
लहराई हुई दूर तक इक राह-गुज़र हो
धिस कुंज में ये राह-गुज़र ख़त्म हो जाकर
फ़िरदौस की इक भील वहाँ पेशे नज़र हो

आसूदा = निश्चिन्त. हनोज़ = अभी. तायर = चिड़ियां.

हैंसती हो मचलती हुई, गाती हुई लहरें
 लहरों में तरहदार कँवल भूम रहे हो
 पानी पे हो मुखौब के उड़ते हुए जोड़े
 लड़ती हुई नर्कुल में खुश अन्दाम चहे हो
 गूँजे कभी उस पार कलंगो की सदाएं
 झाड़ी में इधर मोर कहीं नाच रहे हो
 और दूर, बहुत दूर, फूसू-रंग उफ़क़र
 परवाज़ में भटकी हुई क़ाज़ों के परे हो
 पैरों तले नौख़ेज़, हरी दूब बिछी हो
 और दूब में तारों की तरह फूल खिले हो
 जब चाहे जहाँ जाएं कभी दूब पे लोटें
 चुपचाप कभी फूलों के मुरमुट में पड़े हो
 संसार के दुख दर्द से आज़ाद हो दोनो
 इन्सां के तख़ैयुल की पहुंच से भी परे हो

विश्वमित्र 'आदिल'

नये भिकारी का गीत

कितने आने जाने वाले
माए बनकर रूठ गए है
कितने दुख के काले दरिया
मूने रस्तों पर बहते हैं
कितने ही अनजाने नगमे
बे गाए खामोश हुए है
कितने सपने कितनी आहें
रौदने वाले रौद गए है

मुझ को इस से मतलब बाबा ?
दे जा बाबा, कुछ तो दे जा !

मोहन, रूपा, हामिद, सुगरा
कैसे सुन्दर फूल खिले हैं !
उनकी खुशबूओं के बादल
पल पल छन छन घिर आते हैं
कितनी आँखें जाग उठती हैं
कितने ही लब मिल जाते हैं

मुझ को इससे मतलब बाबा ?
दे जा बाबा, कुछ तो दे जा !

चांद सितारों की ये ज्योती
 कहते हैं ऐसी बन्सी है
 जिसकी डोर से बेबस होकर
 जीवन की मछली लटकी है
 डोर खिंचे तो आँसू ढलकें
 ढील मिले तो नर्म हंसी है
 सच है या है झूट ये सारा
 मन में क्यों ये सोच पड़ी है

मुझको इससे मतलब बाबा ?
 दे जा बाबा, कुछ तो दे जा !

तेरा जीवन मेरा जीवन
 तू भूका तो मैं भी भूका
 तू भिकमंगा मैं भिकमंगा
 ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा
 तेरा जब कुछ हो जाएगा
 मेरा प्याला खो जाएगा

तब तक मेरी पुनले बाबा !
 दे जा बाबा ! कुछ तो दे जा !!



'राही' मामूम रजा

अमन किस के लिये ?

अमन किसके लिये ?

क्या ट्रूमैन के वास्ते ?

एटली के लिये ?

फारमूसा की छाती पे पाले हुए नाग के वास्ते ?

अमन किस के लिये ?

साथियो !

अमन तो उनके थक थक के मर जाने का दूसरा नाम है

अमन मेरे लिये

कृष्ण के वास्ते

जाफरी के लिये

रोब्सन के लिये

आरागों और नरुदा की खातिर हमें अमन दरकार है

अमन घर के लिये

बालकों के लिये

माओ के वास्ते

ताकि छाती का खूँ

बे भिन्नक दूध बनता रहे

ताकि फिर ज़ेरे-तरतीब नस्ल
 इन्तशार और ग़ारतगरी के ख़बीसों से, नफ़रत के आसेब से
 सहम कर चीखने से परे
 नन्हे हाथों से माँओं की छाती दबाती रहे
 गोया कहती रहे
 “मां ! हमें प्यार ही प्यार दरकार है”
 जंग होगी तो ये नन्हे मुन्ने से हाथ
 चिकनी मिट्टी के नन्हे खिलौने
 काँप कर गिर भी सकते हैं और टूट भी सकते हैं
 और जो ये गिर पड़े
 तो हिमालय की ऊँचाइयों की कसम
 माँ की छाती की रफ़अत को फिर कौन बतला सकेगा भला ?
 मन्नतें और माथे पे काजल के टीके उन्हें आज महफूज़ रखने से
 मजबूर हैं
 उनको महफूज़ रखने की खातिर हमें अमन दरकार है
 अमन राखी के ज़िन्दा दियों के लिये
 जंग होनी तो ये रेशमी नर्म-ओ-नाजुक दिये कैसे जल पाएँगे ?
 काँपते हाथों में राखियों को संभाले हुए कितनी बहनें उफ़क़ की
 तरफ़ बस तके जाएँगी
 रहगुज़र पर निगाहें बिछाती चली जाएँगी

इन्तशार = अस्त व्यस्त, ख़बीसों = राक्षसों, आसेब = प्रेत, रफ़अत =
 ऊँचाई, उफ़क़ = क्षितिज रहगुज़र = रास्ते.

और भाई किसी ग़ार में होंगे या फिर किसी खोह में
अपने ज़ख्मों को खाती हुई चिंवटियों और अपने तअफ़्फ़ुन से
भी बेख़बर

और राखी के गुलरंग त्योहार से बेख़र
अपनी बहनों के इस प्यार से बेख़बर
और राखी के नाजुक दिये
प्यारी बहनों की आँखों में तहलील हो जाएंगे
अश्क बन जाएँगे

आँसुओं और ज़ख्मों को फूलों में तब्दील करने की खातिर हमें
अमन दरकार है

अमन दरकार है

बूढ़ियों के लिये

शफ़क्तआमेज़ चेहरों की शिकनों में आबाद परियों के किस्सों की
खातिर हमें अमन दरकार है

बचपने और मासूम किलकारियों के लिये अमन दरकार है

और आँगन के या एक कमरे के मानूस सन्नाटे और लालटेनों की
मोहतात सी

रोशनी और घरेलू फ़िज़ा के लिये अमन दरकार है

अमन दरकार है

क्वाँरियों के लिये

जँग होगी तो आँखों में जलते हुए क्वार पन के मुक़द्दस दिये

ताअफ़्फ़ुन = दुर्गन्ध. तहलील = धुल मिल जाना. शफ़क्त आमेज़ =
ममता मय. मानूस = परिचित. मोहतात = मद्धिम. मुक़द्दस = पवित्र.

रहगुजारा में भटके हुए राहियों की तरह

थक के गिर जायेंगे

लाँबी पलकों के बालू में छिप जायेंगे

इन कुंवारे दिलों के लिये अमन दरकार है

अमन दरकार है

उस दुल्हन के लिये

जिसकी चादर की मुखी में उसकी हया का हसीं रंग है

जिसकी पायल में हैं एक नई नस्ल की आहटें

जिसके नथ में नई जिन्दगी का जवाँ चाँद है

जिसके मलबूस में है शफ़क

जिसके चेहरे में हुस्ने-सहर या ग़रूरे-सरे-शाम है

अमन दरकार है उस दुल्हन के लिये

अमन दरकार है

गाँव के वास्ते

ताकि बरसात की बूंदियाँ

खेतों में अपने पाऊँ के गहरे निशाँ और सोंधी महरु को जगमती रहे

ताकि बैलों के खुर के निशाँ

खेतों को

एक दुल्हन की तरह चेतने ही रहें

और हवाओं की मचली हुई उंगलियाँ

खोशों को गुदगुदाती रहें

मलबूस = लिबास, हुस्ने सहर = प्रभात-सौंदर्य

खेतों के इस मुकद्दस तबस्सुम की खातिर हमें अमन दरकार है

अमन दरकार है

शहर के वास्ते

ताकि सड़कों पे चलती हुई ज़िन्दगी

ताकि शामे-अबध

आग और खून से मैली होने न पाए कभी

अमन दरकार है

मन्दिरों के लिये

मसजिदों के लिये

वेद-ओ-कुरआन के वास्ते

सारनाथ और काशी की खातिर हमें अमन दरकार है

आज अजमेर के वास्ते अमन दरकार है

अमन दरकार है

चाँदनी रात के 'ताज' के वास्ते

आज अजन्ता की खातिर हमें अमन दरकार है

अमन दरकार है

कालिदास

सूरदास

मीर-ओ-ग़ालिब और एकबाल-ओ-टैगोर के वास्ते

गोर्की के लिये

और खैयाम के वास्ते

अमन दरकार है
 ज़िन्दगी के लिये
 खेत मजदूर के वास्ते
 तालिबे-इल्म के वास्ते
 मास्टर के लिये
 शायरों के लिये
 मुतरिबों के लिये

अमन दरकार है
 कोरिया के लिये
 अपने प्यारे तिलंगाना के वास्ते अमन दरकार है
 गाजीपूर और बलिया की खातिर हमें अमन दरकार है
 कुर्रए-अर्ज के वास्ते अमन दरकार है

और ए दोस्तो !

भीक की तरह मागा गया अमन अगर

तो हमें तीसरी जंग मिल सकती है

दायमी अमन के वास्ते

हमको संग्राम करना पड़ेगा—सुनो !

चेहरए-अर्ज के कोढ़ इन द्रूमनो को अपनी नफ़रत के शोलो से
 भुलसाना है

इन दरिन्दों के मर जाने का नाम ही अमन है

मुतरिबों = गायकों. कुर्रए-अर्ज = पृथ्वी.

नरेश कुमार 'शद'

जंग न होने पाए

शीतल धरती के हृदय में अग्नी बान चलाए
निर्दोषों के खून से समशानों में दिये जलाए
नगर नगर में लाशें बोकर जिसने काल उगाए

आज वो अपने सुख की बैरन फिर सर पर मँडलाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

जिसने हीरो शीमा जैसे वसते शहर उजाड़े
परबत परबत वादी वादी मौत के भंडे गाड़े
नोचली हँसती गाती आँखें कोमल सीने फाड़े

अब वह बदली फिर न हमारे जीवन मुख पर छाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

डूब न जाएँ दुख-सागर में बच्चों की आशाएँ
टूट न जाएँ बजते चूड़े माँगें उजड़ न जाएँ
रोएँ न अपने भागों को ममता की मारी माएँ

गली गली में दया धर्म की लाज न फिर लुट जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

हम क्यों मानवता से साथी खून की होली खेले
धनवानों के लाभ की खातिर हम क्यों बिपता भेले
मौत के कांटों से क्यों उलझे हम जीवन की बेले

देकर अपनी जान खरीदे हम क्यों रोग पराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अपनी अग्नी में जल जाएँ ऐटम के अंगारे
पाप की रग रग से बह निकलें सुख लहू के धारे
आओ अपने शत्रू को लत्कारे मिलकर सारे

डगर डगर पर अमन के नीले झंडे को लहराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अपने साथी चीन के मजदूरों ने जिसे उभारा
माओ और सन-यात ने जिसका सुन्दर रूप निखारा
हम भी लेलें उस सूरज से जीवन का उजियारा

उजियारा जो क्रोध कपट की आँधी को खा जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

सोच रहे हैं जग की चाले जो पापी अभिमानी
कौन कहे उनसे किस बिरते पर यह तित्ता पानी
कौन से खलमंडल से होगी अब जनता की हानी

किस में इतना कस कल है जो हम से आँख मिलाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

ये हत्यारे अपनी अंधी ताकत पर मत फूले
गल जाएँ डालर के ढाँचे हम जो उनको छूलें
फाड़ दे उसका पुरजा पुरजा मोड़ दे उसकी चूले

अब जो टैंक हथौड़ों और कुदालों से टकराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

फेर दें मुंह उन दुष्टों का सुख चैन जो अपना लूटे
फूँक दे वह सब शस्त्र जो हम पर बिजली बन कर दूटें
काट दें ऐसी जीभे जिनसे युद्ध की तानें फूटें

तोड़ दे ऐसा हाथ जो अब के जंगी जाल बिछाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

हरे भरे खेतों के खोशे भूमें और लहराएँ
 सर्द हवा के मस्त हिलोरे अमरित रस छलकाएँ
 कलियों चटकें चदमे उबले पंछी नाचें गाएँ

जुग जुग जिये हमारी धरती सदा युँही मस्काए
 जंग न होने पाए साथी, जंग न हाने पाए!



‘मुजफ्फर’ शाहजहाँपुरी

जंग न होने पाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

जंग के कारन बिक गई कितनी मरियम और सीताएँ
खो बैठी अपने नयनों के तारे कितनी माएँ
लाख बलाएँ लाई एक दो हों तो उन्हें गिनाएँ

अब की जंग छिड़ी तो कम है जो न किम्मत ढाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

माग का सेंदूर उजड़ा और कितनों की चूड़ी टूटी
कितनी बाँहों से जौशन उतरे माथों की चेदी छूटी
जंग के खूनी देव ने घर घर शान्ति सब की लूटी

हम पर, तुम पर, सब पर बीती कौन किसे समझाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अब न हो बेवा जवान मुहागिन अब न यतीमी बरसे
धूँधट में घुट घुट के न कोई पिया मिलन को तरसे
भरती होने पेट की खातिर जाय न कोई घर से

जंग किसी साजन को अपनी सजनी से न छुड़ाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

यतीमी = अनाथपन.

इल्म-ओ-अदब, आज़ादी और बच्चों के गालों की लाली
जंग ने फैला रक्खी है हर शोबे पर बदहाली
मुस्तक़बिल पर अब न बरसने देगे हम पामाली

जो बम जहाँ पे रक्खा हो वह पड़े पड़े सड़ जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अब धरती की कोख पे कोई ऐटम बम न गिराए
कहीं न कोई हीरोशीमा नागासाकी बनाए
ज़हरीली गेसो का बादल मौत न अब बरसाए
काल न कोई बोलने पाए भूक न कोई उगाए
जग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

नदी लड़ाई जो फैलाए काल, बिपत, महँगाई
क्यों न बनें धनवान फिर इसके रसिया और सौदाई
लोहे के बदले में कराँदे जो सोने की कमाई

अब न फँसेगे लाख कोई डालर का जाल बिछाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

दोस्त हमारा अब तो वही है जंग का हो जो दुश्मन
ऐटम की ताकत से चलाए ट्रैक्टरों के इंजन
रेगिस्तानों को जो सींचे और बनादे गुलशन

खेती हँसिया काटे, हथौड़ा कारीगरी फैलाए
जंग न होने पाए साथी, जग न होने पाए !

शोबे = विभाग, मुस्तक़बिल = भविष्य.

वेतनाम, मलाया, बरमा, अरब हो या अफ़रीका
 यूनान, इटली, जर्मन, फ़ाल्स, इंगलैंड हो या अमरीका
 दुनिया भर में जंगपसन्दों का है रंग अब फीका

भूके भारत वाले भी दानों से नहीं ललचाए
 जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

भूकी जनता से थरकर यह सरमायादारी
 आड़ में मज़हब की करवादेती है मारा मारी
 खुद तो छिप जाती है मरती है जनता बेचारी

आपस की यह जंग न बढ़कर और तबाही लाए
 जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !



श्रीमती संयदा फरहत

फुकार

धन के लोभी लोभ में धन के चलते हैं फिर चाल
बैठे हैं मक्कार शिकारी फिर फैलाए जाल
पड़ने को है विपता भारी आएगा भौंचाल

धरती पर फिर लग जाएंगे लारों के अंबार
होगी फिर आकाश से साथी, गोलों की बौछार

धन के पुजारी भेट में देगे इन्सानों की जाने
धन की देवी धन से भरेगी फिर उनकी दूकानें
उबल पड़ेगी सोने से फिर उनकी सारी कानें

काल मगर दुनिया में पड़ेगा तड़पेंगे सब भूके
भुलसंगे फिर तन मन सारा पेट से उठके लूके

सर पर फिर मंडलाने लगें हैं जंग के काले बादल
गूंज गरज से ऐटम बम की धरती होगी बेकल
भर जाएंगे खून से साथी, मारे जग में जल थल

सारे जग में छा जाएगा साथी धोर अंधेरा
कोने कोने में दुनिया के होगा मौत का डेरा

खोएँगी अपने हाथों से फिर लाल हज़ारों माएँ
होंगी फिर अनाथ हज़ारों और लाखों बेवाएँ
खून के सागर में डूबेंगी फिर लाखों आशाएँ

भूक और भीक का होगा साथी, सारे जग में राज
मौजे खूब उड़ाएँगे फिर धन वाले महाराज

आ साथी ! हम जान लड़ाकर आई बलाएँ टालें
आ साथी ! मिल जुल के उलट दें सब शैतानी चालें
चलते फिरते फ़ितनों के हम पाँव में बेड़ी डालें

डगमग करती नैया को, आ साथी ! पार लगाएँ
जीवन को जो रोग लगे है उनको खोज मिटाएँ

अफ़रंगी या अमरीकी हों जर्मन या जापानी
मिस्र-ओ-अरब के बासी हों वो तुर्क हों या ईरानी
भारत के हों बसने वाले या हों पाकिस्तानी

जो भी जीवन में बिस धोले इन्साँ को कलपाए
पापी ऐसा सारे जग में कोई न रहने पाए



‘ताजवर’ सामरी

सौभाग्य !

“बस अब रुक जा ए रिक्शा वाले मेरी मंज़िल आ पहुँची यह ले अपनी मज़दूरी—बस, काफी है ना ।”

“बाबू जी !!

दिन भर खून पसीना करके पाऊँ छै आने ही !”

“क्यों बे ! छै आने क्या कम हैं ? और क्या हाथी खुलवा दूँ”

“पर दाता ! कुछ न्याय करो, ये मज़दूरी मैं क्यों कर लूँ !!

पाँच चवन्नी मालिक चाहे पेट मुझे भी भरना है....”

“क्या बकता है ! लम्बा हो—मुझको कुछ और भी करना है”

“बाबू जी !...”

“ए जा भी चुक ! वरना मैं चालान करा दूँगा दारोगा, डिप्टी सब अपने हैं, साले ! फँसवा दूँगा मुझसे तो जो कुछ मिलता है बस तू जान ! ग़नीमत है मैं तेरे रिक्शा पर था, नादान ! बड़ा खुश किस्मत है मैं !! जो कौंसिल का मेम्बर हूँ, ताजिर भी, मिलओनर भी धर्म का सच्चा सेवक भी हूँ ! और जनता का लीडर भी”

‘कत्तोल’ शिकाई

जय जयकार

रात का गहरा सन्नाटा हो या दिन का कोहराम
रोटी रोटी चिल्लाते हैं खाली पेट अबाम

फाँके देकर जंग में भोंके ये तेरा व्योहार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

लन्दन से वार्शिंगटन तक हर मृज़ी तेरे साथ
दाम को साम मिले इस जग में कर कर लम्बे हाथ

भूकी नंगी धरती को पहनाए बमों के हार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

तेरे हाथ में हिटलर और मुसोलीनी की लाज
पालन हार यतीमों के बेवाओं के सरताज

चारों खूँट मची है तेरे दम से हा हा कार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार

क्रहत, वबाएँ, भूक, नंग फैलाए देस बिदेस
दूर दूर तक पहुँचे तेरी ! चाल बदलकर भेस

डाखर तेरी ढाल बना है, जंग तेरी तलवार
कोलम्बस के देस के राजा तेरी जय जयकार

तेरा दिया सब खाते है पर उनमें नहीं हम लोग
अम्म की लास गुलाबी चिड़िना और सोने का चोग

जंग का ईधन बनने से हम करते है इनकार
कोलम्बस के देस के राजा ! तेरी जय जयकार



स्वामी मारहरवी

कृष्ण-विन्ती

करके मेड़ मेरी बाखर तुमने ऊँचे महल बनाए
जगमग मेरे दिये बुझाकर अपने घरके दीप जलाए
मेरे सुनहरे खलिहानों पर आड़े तिरछे दोंव लगाए
छूट लई निर्बल की आशा ऐसे तुमने जाल बिछाए

सूखे खाँखड़ हार है मेरे, लाल फुलरवा गाल तुम्हारे
देह के डंगर बालक मेरे लालों के है लाल तुम्हारे
भूक में हम एक कौर को तरसे घर में हो तर माल तुम्हारे
अपनी कमाई आह लुटा कर हो गए हम कंगाल तुम्हारे

जीवन के इस भौसागर में बनके तुम्हारा खेवन हारा
अपना बेड़ा आप डुबोया तुम को मैंने पार उतारा
अंधियारे के लम्बे पथ पर मैंने तुमको दिया सहारा
जग के तुम अन दाता बाजे मुझी को तुमने भूका मारा

ईश्वर अल्ला राम तुम्हारे — धन के बल भगवान तुम्हारे
धरती मेरी राज तुम्हारा सोंचे है अभिमान तुम्हारे
निर्बल को ठग मूस के खुश हो, कैसे है ईमान तुम्हारे
दुनिया कोई और बतादो जाग बसें ये किसान तुम्हारे

मेरे धन से मिले बनाएँ, भांत भात की कलें लगाएँ
 आप मनेजर, आप डिरेक्टर, आप ही जग दाता कहलाएँ
 मेरी पैदावार से हिर-फिर आप ही सारा लाभ उठाएँ
 कड़ुआ कड़ुआ थू थू करके, मीठा मीठा हप कर जाएँ

मेरे दम से राज सिंहासन, मेरे बल से सोभा उसकी
 मैं भारत का, भारत मेरा, मैंने की है सेवा उसकी
 तुम क्या जानो राम और ईश्वर, तुम क्या जानो पूजा उसकी
 कौड़ी कौड़ी तुमने जोड़ी, खागई आस निराशा उसकी

जो मुख की नैया खेवत हो, वह नाव डुबोकर छोड़ूँगा
 जिस लोहू तुम परवान चढ़े, वह लोहू आज निचोड़ूँगा
 तुम चूर हो जिन अभिमानों में, वो मान तुम्हारे तोड़ूँगा
 सब कस बल तयारे देख लिये अब हर बल लेकर छोड़ूँगा



यूसुफ जफ़र

खिलौने

चुने मैने मौजां से मोती, जवाहर से ज्योती, बहारों से राग
लिये मैने खोशों से खुशबू के तोशे
उलट कर निगाहों से राहों के गोशे
बढ़ा मै, चला मै, लिये साथ सावन की पुरुवा, चनारों की आग
बहारों के राग

न काम आए मौजां के मोती, जवाहर की ज्योती, न खुशबू न राग
मुकद्दर में पैहम नज्म - शब - ग़म
मसरत का मातम, मुसीबत का आलम
वो सारे ख़िज़ीने, ख़िज़ाओ ने छीने कि सीने में है अब चनारों की
न खुशबू न राग

मिली ग़म की मौजें, मसायब की फ़ौजें, रग-ओ-पै के अन्दर समन्दर के राग
हकायक के ज़िन्दाँ में हैराँ परीशॉ
तसौवुर, तख़्बैयुल, तनफ़फ़ुस से नालाँ
मुम्मी को लगाने बुम्माने को पाई जहाँ ने सुहाने चनारों की आग
समन्दर के राग

खोशा = गुच्छा, बाल. गोशा = कोना. पैहम = बराबर, लगातार.
नज्म = तारे. शब = रात. मसायब = मुसीबतें. रग-ओ-पै = रग रग,
नस नस. हकायक = हकीकतों, वास्तविकताओं. तसौवुर = कल्पना में किसी
को देखना. तख़्बैयुल = कल्पना, विचार करना. तनफ़फ़ुस = सांस

मगर तेरे दामन में, फूलों के मसकन में, सुनना हूं अकसर बहारों के राग
 तेरे नर्म खोशे, मुहब्बत के तोशे
 मेरे भोले भाले हसी दिल के गोशे
 मेरे रंज-ओ-गम मेरे फिक्र-ओ-अलम को दिखाते है आकर बनारों की आग
 सितारों की आग



‘स्वामी’ मारहरवी

पंचों हाथों पिटा दिवाला

ठौर न पूछो, गाम न पूछो मुझ से मेरा नाम न पूछो
कहां किया बिसराम न पूछो तुम होगे बदनाम न पूछो

घाव पुराने छुए, रिसेंगे
मत छेड़ो यह फूट बहेगे

राज महल में हँसी गूँसी थी आज़ादी की धूम मची थी
देश की आशा हरी भरी थी घर में मेरे आग लगी थी

सारे काट महार गई मैं
जीती बाज़ी हार गई मैं

दुष्टों के स्थान जहां थे निर्लज के सामान जहां थे
लाखों ही शैतान वहा थे क्या जाने भगवान कहां थे

मात पिता कोई काम न आए
समय पड़ा तो राम न पाए

पंचों हाथों पिटा दिवाला अपने घर मुँह हो गया काला
दुष्ट ने कुछ ना देखा भाला खुले धड़े कुकर्म कर डाला

नंगो संग मैं नंगी घूमी
फाट गई ना भारत भूमी

घर फूँका अड़वाड़ न छोड़े बाकी काठ कबड़ न छोड़े
मात पिता के हाड़ न छोड़े कोई नहीं जो पछाड़ न छोड़े

देह के टुकड़े आग में भूने

हो गए कैसे धर्म के दूने

भारत के ओ पूत सपूतो बगुला भक्तो ! जंगली भूतो
देश के ओ कमबख्त कपूतो अपने तुम करतूत तो देखो

करके नंग धड़ंगी बेटी

देश नरेशी कर गए हेटी

मेरा कलंक अब कौन भरेगा ? दूर यह धब्बा कौन करेगा ?
जीवन स्वारथ कौन करेगा ? स्वागत मेरा कौन करेगा ?

टूटा बासन बजे फटेरा

लेगा मुझ को कौन ठठेरा

‘स्वामी’ जी तुम भूल न जाना अपने कर्मों फूल न जाना
तुमने मेरा मूल न जाना अंग लगा तिरसूल न जाना

भाड़ में जाओ नर्क जलो तुम

चुल्ल जल में डूब मरो तुम



कँवल प्रसाद 'कँवल'

महामारी

यह कौन महामारी आई ?

इसके छूते ही दम भर में इन्साँ हो जाता है पागल
और घर वालों के हाथो ही हर घर बन जाता है मक़तल
ले संग काल की परछाईं यह कैसी बीमारी आई ?

यह कौन महामारी आई ?

कुछ खून भूक ने छोड़ा था, इसने हर बूंद निचोड़ लिया
उड़ने से पहले ही बन्दी पंछी का पंख मरोड़ दिया
आज़ादी का स्वागत करने यह कैसी हत्यारी आई ?

यह कौन महामारी आई ?

सदियों पर सपना देखा था, कुछ फूल खिले हैं आँगन में
जब आँख खुली, देखी हर सू लपटें ही लपटें गुलशन में
फूलों के रंगों से उड़ कर यह कैसी चिंगारी आई ?

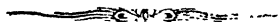
यह कौन महामारी आई ?

लोहू की मौजें चढ़ते ही पंजाब का पानी उतर गया
बंगाल, बिहार, नोआखली, सब का शीराज़ा बिखर गया
बेहोशी बढ़ती जाती है, हम समझे बेदारी आई

यह कौन महामारी आई ?

यह आग जो फैली और तो घर मारा मिट जायेगा छन में
 मिल जुल कर साथी उठ बैठो मजबूत इरादे ले मन में
 कंधों पे तुम्हारे ही अब यह भारी ज़िम्मेदारी आई

यह कौन महामारी आई ?



प्रेम ध्वन

बापू की कुरबानी

धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
भूल बर्हा सकती है दुनिया तेरी अमर कहानी
हम सब तेरे कानिल हैं, हम खूनी तेरे बापू
दाग कभी यह धो न सकेगे सारी कौम के आँसू
पाप कभी यह धो न सकेगा गंगा का भी पानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
यह तेरा ही खून नहीं, यह खून है मानवता का
खून अमन का, आज़ादी का, दुखियारी जनता का
सब की आँख में आँसू है सबके मुख पर वीरानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
तू अंधियारे भारत में उजियाला लेकर आया
घर घर जाकर तूने आज़ादी का दीप जलाया
तुझसे ही हमने अपनी यह कीमत पहिचानी
धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
तूने सीना तान के शाही ताकत को ललकारा
'छोड़ो भारत' 'छोड़ो भारत' गूँजा तेरा नारा

जेलों में बन गई बुढ़ापा तेरी वीर जवानी
 धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
 तेरी कीमत पूछे कोई आज नोआखाली से
 कैसा फूल है टूटा अपने गुलशन की डाली से
 तूने सबका दुख सुख बाँटा, सबकी पीड़ा जानी
 धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
 जलती आग में कूद के तूने फूट की आग बुझाई
 अपनी जान गँवा के लाखों की है जान बचाई
 आखिर सच की जीत हुई, और हार भूठ ने मानी
 धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी
 अमर रहेगा अमर रहेगा, मौत से जो लड़ता है
 आज़ादी के नाम पे मरने वाला कब मरता है
 जब तक दुनिया है गूँजेगी तेरी अमृत बानी
 धन्य धन्य ए गान्धी बापू ! धन्य तेरी कुरबानी



ताजवर सामरी

रात मर रही है

मैं कब तक अपने ही दुख के गीत अपने खोल में रह के गुनगुनाऊँ ?
जमूद है इक जहाँ पे तारी, मैं क्यों न ऐसे में बाहर आऊँ
गरज के बन्दों ने ज़िन्दगानी को एक मरघट बना दिया है
असंख लोगो को केचुओ का ज़लील जीवन अता किया है
मैं अपना फ़र्ज़ आज भी न जानूँ ?
खड़ी है सच्चाई मेरे आगे, मैं अब इसे किस तरह न मानूँ ?
कि सारी इन्सानियत के सुख ही में मेरा मुख है
ये ज़िन्दगी का असीम दुख मेरा अपना दुख है
यहाँ ज़रूरत है रोशनी की
वफ़ा की ईसार-ओ-हमदमी की
में इस जगह तो ज़रूर गाऊंगा दायमी सरखुशी का नज़्मा
उमीद का ज़िन्दगी का नज़्मा
मैं गाऊंगा ऐसे गीत लौ दे उठेंगे साये
मैं गाऊंगा वह तराना जिसको तमाम संसार गुनगुनाए
बड़े ज़माने से आदमी एक ऐसा दीपक है जिस पे लौ मुस्कुरा न पाई

ईसार-ओ-हमदमी = बलिदान और सहानुभूति. दायमी = अमर.

कराहों, आहो ने मस्ख कर दी है उसके जीवन की खुशनुमाई
 सुनाए जाते हैं हर घड़ी उम को गुम के, मायूसियों के किस्से
 बजाए जाते हैं उसके हरसू अलम के बाजे दुखो के नऱमे
 यह आदमीयत का नुक्कता गहना गया ! तो परलय मचेगी हरसू
 उजाड़ धरती, उदास वीरानियों को देखा करेगी हरसू
 नहीं, नहीं, यह न हो सकेगा—मैं गाऊंगा रोशनी के नऱमे
 उमीद के, ज़िन्दगी के नऱमे
 गरज़ ज़ुदा लोग मिश्रअले क्यों बुझा रहे हैं ?
 यह कैसा ऊधम मचा रहे हैं !!
 “कि ज़िन्दगी मर चुकी, अधेरा जवा हुआ है
 दबे रहो ऐ ज़लील कीड़ो, यही तुम्हारे लिये सज़ा है”
 नहीं नहीं, ए असंख दुखियो ! ये शोर तो ग्वांखला है यकसर
 हवा के झोंको से सच का सूरज बुझेगा क्यों कर
 हक्कीकतन रात मर रही है
 उफ़क पे हंगामे-ज़िन्दगी है कि मुब्दे सादिक उभर रही है



मस्ख कर दी है = बिगाड़ दी है. सादिक = सच्ची.

जहूर नज़र, पाकिस्तान

गुज़र

पनवारो को यो लहराओ जग-सागर की सहर न छलके
प्रीत की नैया खेने बाबो धीरे धीरे हलके हलके
बेशानी पर जुल्फें बिखरी रुख़सारी पर आसू ढलके
जिमको जीवन-साथी समझा वह हारा दो गाम ही चलके
तर्क-मुहब्बत सहल नहीं है दिल हिलता है जां जाती है
जब पलके बिखरा देती हैं गालों पर डोरे काजल के
रूह तो उनकी भी काँपी है पाँव तो उनके भी डोले हैं
वह राही जो प्यार की घाटी से गुज़रे है संभल संभल के
प्यार में जलना हो कि जलना दोनों की बुनियाद लगन है
बढ़ी मिला है परवाने की जो पाया है शमअ मे जल के
हाथ थकी आँखों पर धर के रोज़ पुराने अरमां सोए
रोज़ नई आशाएं जागी हँसते रोते नैना मल के
बज़्मे सहर के उजियारो में नाच रही है आधी दुनिया
मेरी नज़र पर फैलाएंगे आखिर कब तक आप घुंदलके

अब्दुल मजीद भट्टी, पाकिस्तान

राजमहल

मैं अलबेली नई नवेली जीवन जोबन रस में
चंचल चितवन, नैन कटीले, राजा का मन बस में

राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा
नैनन जोत बुझी नहीं अब तक फिर से बान चलाऊँ
राजा के चंचल मन में फिर अपनी प्रीत जगाऊँ

राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा
कुल-नारी गुलवन्ती हूं मैं राजमहल की लाज
कुल का सूरज कुल का राजा है मेरा युवराज

राजपाट है मेरा, हां, हा, राजपाट है मेरा
ये कैसे पायल के छुनाके भागी सब घबरा के
नाच नाच कर एक नर्तकी कहती थी लहरा के

राजपाट है मेरा, हां, हां, राजपाट है मेरा

'क़त्ली' शिकाई, पाकिस्तान

दुलहन

बाज रही शहनाई, आई दुलहन नई नवेली
दुलहन नई नवेली

स्वामी समझे घूँघट पीछे होगा चांद का टुकड़ा
घूँघट के पट गुले तो निकला मुरझाया सा मुखड़ा
ढाँप के रोए, मुरझाए से मुखड़े को अलबेली
दुलहन नई नवेली

नई नवेली का ये स्वागत ? नन्द न साम न देवर
मैंके से भी क्या लाई है खोटे पीले ज़ेवर
अब क्या किसी से आँख मिलाए ? सोचे पड़ी अकेली
दुलहन नई नवेली

बैन करे या चैन से सोए ? रोए या मुस्काए ?
आज तो गुज़रा कल क्या होगा ? सोच सोच घबराए
जीवन के इस उलझावे में बन गई एक पहेली
दुलहन नई नवेली

बाज रही शहनाई, आई दुलहन नई नवेली
दुलहन नई नवेली

बैन = विलाप,

स्वर्गीय मीराजी

एक गीत

अनजाने नगर मन माने थे, मन माने नगर अनजाने रहे
अपनी बातों की मन्ती में
सुनते रहे दिल की बन्ती में
वही गीत जो कुछ मन माने रहे, वही राग जो मुख के बहाने रहे
रातें बीता दिन बीत गए
राते भी नई फिर दिन भी नए
मूरख मन ऐसा हटीला है, उसे याद का रंग पुनने रहे
अन होनी का जितने ध्यान रहा
होनी ने उसे चुपके से कहा
जो बातें रहीं न जमाने रहे, जो रहे भी तो बाकी फसाने रहे
अब गीत में रस टपकाते है
यो दिल की आग बुझाते है
अब सबके लिये वही बावले है, जो बीते समय में सबाने रहे

नरेश कुमार 'शाद'

गुज़ल

कौन मुलगते आँसू रोंके आग के दुकड़े कौन चबाए
ओ हमको समझाने वाले कोई तुझे क्यों कर समझाए
बरखा बरसे, नमूने गूँजे, शीशे से शीशा टकराए
कौन इस वक्त अन्जाम की गोचे कौन खिरद के फेर में आए
इस दुनिया के रहने वाले अपना अपना मम खाते हैं
कौन पराया रोग खरीदे कौन पराया दुख अपनाए
प्रेम की अंधियारी राहों में अकल का दीपक जल न सकेगा
ए फर्जानो ! ए फर्जानो ! होश से कह दो हाश में आए
सत्र भी कब तक हो सकता है ज़ब्त की भी दक हद होती है
पल भर चैन न पाने वाला कब तक अपना रोग छुपाए
जीवन के अंधियारे पथ पर जिसने तेरा साथ दिया था
देख कहीं वह कोमल आशा आँसू बन कर टूट न जाए
हाय ! मेरी मायूस उमीदें वाय ! मेरे नाकाम इरादे
मरने की तदबीर न सूझी जीने के अन्दाज़ न आए

खिरद = अकल, बुद्धि. फर्जानो = होशियारो. वाय = हाय, आह, अफ़सोस.

इस दुनिया के ग़मख़ाने में ग़म से इतनी फुरसत कब है
कौन सितारो का मुँह चूमे कौन बहारो में लहराए
‘शाद’ वही आवारा शायर जिसने तुझ से प्यार किया था
नगर नगर में घूम रहा है अरमानों की लाश उठाए



विलियम फ्रान्सिस बर्नर्ड

देवता

सो गए सब देवता

देवताओं के तबस्सुम सो गए

उनके जन्नत और जहन्नुम सो गए

सो गए सब देवता

सो गए सब अपनी हैबतनाक बातों को लिये

और इशरत की हसी बेबाक रातों को लिये

सो गए सब देवता

अ जेह्न इन्सान का जिसने उन्हें पैदा किया

आहनी हाथों से अब हर एक बुत है तोड़ता

उनकी हस्ती कर रहा है बे नकाब

अब नहीं है उनकी पहली आब-ओ-ताब

सो गए सब देवता

हर सनम, हर बुत शिकस्ता है पड़ा

आज बर है आज जेह्न इन्सान का

है शिकोहे-बरतरी जलवानुमा,

है अखूवत हमदमे इन्सान आज

शिकोहे बरतरी = श्रेष्ठता की शान. अखूवत = भाई चारा.

दं के लेकिन फिर किसी को तख्तो ताज
 तोड़ना इर्गिज़ न अब जामे मसावाते जहा
 जाग उठेंगे नए यो देवता
 अज़ सरे नौ होंगे मजनूं देवता
 अम्नने आसाइश् की फिर हस्ती ऋद्धा



कुमारी जाहिदा

नई दुनिया

दरीचो से छनकर

भरोको से छनकर

लरजती लरजती

छनकती छनकती

हवा आ रही है

सदा आ रही है

कि जैसे पलक में फलक घूम लेगी

कि जैसे सितारो का मुंह चूम लेगी

कि जैसे शफ़क ज़ार पर भूम लेगी

ये छन छन-सी क्या है ?

ये कैसी सदा है ?

ये धुन अन सुनी है ?

ये किसने चुनी है ?

ये क्या बज रहा है ?

ये क्या सज रहा है ?

शफ़क ज़ार = लालिमा-स्थल.

प्रोफेसर 'शोर'

मल्लाह

पस मंजर—उठता हुआ तूफान, डूबती हुई किश्तियां, गाते हुए मल्लाह.

ये गाते जलजले, ये नाचते तूफान के धरे
हवा की नीयतों से बेखबर मल्लाह बेचारे !
वो तूफानों के हल चलने लगे सैय्याल खेती में
वो किश्ती आके डूबी गौहर! कतरों की रेती में !!
वो टूटी मौज की शफ़फ़ा दीवारे सफ़ीनों पर
वो फिर लहरें उभर आई इरादों की जबीनों पर !
वो टकराने लगी आवाज़ नीले आस्मानों से
वो ख़त्ते-रह गुज़र पर जल उठी शमए' तरानों से
हवाए' थम नहीं सकती तलातुम रुक नहीं सकते
मगर "मौज-ओ-हवा" के सामने सर झुक नहीं सकते
सफ़ीने हैं कि तूफ़ानों के थपेड़े खाए जाते हैं
मगर मल्लाह गीत अपने बराबर गाए जाते हैं

पस मंजर = पृष्ठभूमि. सैय्याल = पिघली हुई, तरल. गौहरी कतरों =
मोती की तरह चमकने वाले. शफ़फ़ा = भलाभल. सफ़ीनों = किश्तियों.
ख़त्ते-रहगुज़र = मार्ग की लकीर. तलातुम = भ्रम. मय = शराब.

हैं कितने ग़म कि जिन की मय सख़र अंगेज़ होती है
 हैं कितने गीत जिनकी लय हवा से तेज़ होती है !!
 खिंचा हो जिनका ख़त्ते-रहगुज़र तूफ़ान के धारों पर
 बड़ी मुश्किल से उनको नींद आती है किनारों पर



असराखहक 'मजाज'

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिंहासन डाँवा डोल !!

बादल बिजली रैन अविचारी दुख की मारी परजा सारी
बच्चे वूढ़े सब दुखिया है दुखिया नर है दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है सब बनिये हैं सब व्योपारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिंहासन डाँवा डोल !!

कलजुग में जग के रगवाले चादी वाले सोने वाले !
देसी हों या परदेसी हों नीले, पीले, गोरे, काले !
मक्खी, भुनगे, भन भन करते ढूँडते है मकड़ी के जाले

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिंहासन डाँवा डोल !!

अमरीका के ये व्योपारी आँख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी कब तक जनता की बेजारी
कब तक सरमाये के धन्दे कब तक ये सरमायादारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिंहासन डाँवा डोल !!

नामी और मशहूर नहीं हम लेकिन क्या मजदूर नहीं हम
धोका और मजदूरों को दे ऐसे तो मजबूर नहीं हम
मंजिल अपने पाँव के नीचे मंजिल से अब दूर नहीं हम

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिद्धसन डाँवा डोल ॥

बोल ! कि तेरी खिदमत की है बोल ! कि तेरा काम किया है
बोल ! कि तेरे फल खाए है बोल ! कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हथ उठाया बोल ! कि हम से हथ उठा है

बोल ! कि हमसे जागी दुनिया

बोल ! कि हमसे जागी धरती

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

राज सिंहमन डाँवा डोल



स्वर्गीय 'अशअर' मलीहाबादी

कीरान गली

शाहराहों से बहुत दूर कहीं
जगमगाती हुई सड़को से अलग
चांद तारो के तबस्सुम की किरन से महरूम
गम में डूबे हुए पेड़ों के घने साये तले
ऊँघती, रेंगती वीरान गली जाती है

बादए-नूर से लबरेज़ तो है जामे फ़लक
शाहराहों के किनारों पे दमकती है अभी
लालाज़ारों के दिल आवेज़ नज़ारों की बहार
आह लेकिन उसे मतलब ही नहीं
उसके नज़दीक फ़कत गिरियए-शबनम है बहुत
जिसकी बूँदें उसे अफ़लाक के हँसते तारे
माल हा साल से बेनूर है इसका सीना
दाहने बाएँ गली के ये शिकस्ता से मका
जिन मकानों के मकीनों ने कभी

तबस्सुम = मुस्कुराहट. बादए नूर = प्रकाश की मदिरा. दिल आवेज़ = मनोहर. गिरियए-शबनम = शबनम का रोना.

नगमए-ऐश का धुंदला-सा तसव्वुर न किया
 नौहए-गम के सिवा
 खार जारे-गमे-हस्ती है शबिस्ता उनका

ऊँ घती रेंगती वीरान गली जाती है
 इसकी मगमूम फ़ज़ा में कभी गूँजी न हूँसी
 हसरत-ओ-यास से लबरेज़ किनारो पे कभी
 कुमकुमे तक न हुए हैं रोशन
 इससे गुज़रे ही नहीं माह रुख़-ओ-बर्क जमाल
 इन्तज़ार इसके किनारो पे किमी का न हुआ
 इस पे चलते है फ़क़त भूक के मारे मज़दूर
 या कोई रात की अंधियारी में भटका राही
 या फटे हाल में रहते हुए बेचारे किसान
 खुश्क हाँटो बे लिये रज़-ओ-अलम के बादल
 धुंदली आँखें तरब-ओ-ऐश से यकसर महरूम
 जुल्म के तंग भवर में है सफ़ीना जिनका
 ज़िन्दगी जिनकी फ़क़त एक सराब
 दोनों आलम का अज़ाब !
 आह बेचारे ये डम पर भी ाजये जाते है

खारज़ारे गमे हस्ती = जीवन के दुख के काँटो की भाँड़ी. मगमूम =
 शोक प्रद. यास = निराशा. कुमकुमे = बिजली के बल्ब. माह-रुख़-ओ-बर्क
 जमाल = चन्द्रमा और बिजली की तरह रूपवान. तरब = सुख, आराम,
 खुशी. यकसर = सिरे से, नितान्त. सफ़ीना = किस्ती. सराब = मरीचिका.

ज़हर का घूँट समझ कर भी पिये जाते हैं
 वक्रत आयेगा कि दुनिया ही बदल जायेगी
 ज़िन्दगी इक नए अंदाज़ में ढल जायेगी
 और ये वीरान-ओ-सियहपोश गली
 होगी ताबिन्दा सड़क में तबदील
 शहराहों से बहुत दूर कहीं
 जगमगाती हुई सड़को से अलग
 ऊँघती रेंगती वीरान गली जाती है.



‘कैफ़ी’ आज्ञामी

इन्क़लाबे चीन

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,

और जहां पर छा जाओ

आज सदियों की जमी बर्फ़ पे जलता है अलाव

सीनये शर्क की ये आग फ़लक तक पहुँचाओ

हर जगह चीन की जुरअत का फ़साना दोहराओ

कहीं बिजली, कहीं अँधी, कहीं तूफ़ा बन जाओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,

और जहां पर छा जाओ

वीतनाम और मलाया की ज़मी जाग उठी

दफ़अतन चौक के बर्मा की ज़मी जाग उठी

विन्धिया चल की हिमालय की ज़मी जाग उठी

एशिया जाग उठा जिन्दा दिलो ज़न मनाओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,

और जहां पर छा जाओ

शर्क = पूरब. दफ़अतन = यकायक.

खाँच कर दह की पहनाई में चांदी की लकीर
 मंडियां ढूँडते फिरते हैं इजारे के सफ़ीर
 अपनी ही कड़ियों से उलझी है सुनहरी ज़ज़ीर
 अपने मरकज़ ही से टकराता है ज़र का फैलाव
 साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
 और जहां पर छा जाओ

कारखानों का ये भौचाल ये खेतों का जलाल
 खूने-जमहूर में ये जोश ये गर्मी ये उबाल
 ये तफ़्गें, ये दरांती, ये हथौड़े, ये कुदाल
 बढ़ के सोने के हर ऐवान पे लोहा बरसाओ
 साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
 और जहां पर छा जाओ

कशमकश चेहरा-हरती की बढ़ा देती है आब
 ज़िन्दगी जेह्द के मैदान में उलटती है नकाब
 यहीं निखरेगी मुहब्बत यहीं उमडेगा शबाब
 आज जिस राह पे होता है लहू का छिड़काव
 साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
 और जहां पर छा जाओ

दह = दुनिया, पहनाई = विस्तार, चौड़ाई. तफ़्गें = बन्दूकें. ऐवान =
 बड़े मकान, महल. जेह्द = संघर्ष, कोशिश.

नानकिन जिनकी जुदाई में था कल शोला बजां
आज किस शान से पलटे है सफ़ूर से वो जवां
आहनी हाथ में तारीख़ के मरकब की अनां
सैले रफ़्तार में गुम वक्त्र के धारे का बहाव

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहां पर छा जाओ

कुहना दीवार से रुकता हूँ कोई सैले-हयात
अह्द-नौ आ ही गया ले के नए दिन नई रात
भिलमिलाता हुआ पलको पे ये ख़्वाबे सन-यात
मुस्कराती हुई आँखों में यह चालाकिये-माओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहा पर छा जाओ

ये सर अफ़राज़ मशीने ये लहकता हुआ धान
कामगारों से गले मिलते हैं हंस-हंस के किसान
डह गए क़त्ल कभी लगता था जिनमें खलियान
आज हर मोड़ पे हर गाम पे खलियान लगाओ

साथियो ! सुर्ख़ फरेरा लहराओ, सुर्ख़ शरारे भड़काओ,
और जहा पर छा जाओ

नानकिन = च्यांग काई शेक की राजधानी. शोला बजां = आग में
अपने प्राणों की आहुति देने वाला. आहनी = फौलादी. मरकब = घोड़ा.
अनां = लगाम. सैल = बाढ़. कुहना = पुराना. ख़्वाबे सन-यात = चीनी
जनतंत्र के नेता स्व० ड० सन-यात सेन के स्वप्न माओ = कमरेड माओ-ज़े-
तुंग. सर अफ़राज़ = सर उठाने हुए. क़त्ल = महल.

तोड़ देता है रवायात, जेहादे-पैहम
 सरनुगूँ आज है इबलीस हजुरे-आदम
 रख दिये जुल्म के मरकज़ पे दिलेरो ने कदम
 भर गए सीनए गेली के सुलगते हुए घाव
 साथियो ! सुर्ख फरेरा लहराओ, सुर्ख शरारे भड़काओ,
 और जहाँ पर छा जाओ

मुस्कराती हुई बढ़ती है जिधर सुर्ख सिपाह
 फूट, डालर के पहाड़ों में बना देती है राह
 साजिशें चीन के सैलाब की पाती नहीं थाह
 च्याग को लेके उलटती है टुरुमैन की नाव
 साथियो ! सुर्ख फरेरा लहराओ, सुर्ख शरारे भड़काओ,
 और जहाँ पर छा जाओ

चीन, उसरत का महल, राहज़नी का मस्कन
 खानाज़र्गा की कर्मीगाह, गुलामी का घतन
 ज़र्द माथे पे मचलने ही लगी सुर्ख शिकन
 खून खाने ही लगा सीनए अफ़लास में ताव
 साथियो ! सुर्ख फरेरा लहराओ, सुर्ख शरारे भड़काओ,
 और जहाँ पर छा जाओ

रवायात = परंपराएं सरनुगूँ = नत मस्तक. इबलीस = शैतान. हजुरे
 आदम = आध्मी के सामने. गेली = सृष्टि. उसरत = दरिद्रता. मस्कन =
 घर. राहज़नी = डाका. कर्मीगाह = छापामारों के छिपने की जगह

बूँद टपकी है शहीदों के लहू की जिन पर
 आज उन खाक के ज़रों से उबलते हैं शरार
 नदियाँ भागने बालों की पकड़ती हैं कमर
 वादियाँ करती हैं दुश्मन की सफ़ों पर पथराव
 साथियो ! सुर्ख फरेरा लहराओ, सुर्ख शरारे भड़काओ,
 और जहाँ पर छा जाओ

ढल के शोलों में ज़मी तंग हुई जाती है
 सास ऐटम के सपूतों की घुटी जाती है
 तीसरी जंग की इक शक्ल मिठी जाती है
 तीसरी जंग की हर शक्ल हर एक नक्श मिटाओ
 साथियो ! सुर्ख फरेरा लहराओ, सुर्ख शरारे भड़काओ,
 और जहाँ पर छा जाओ



गुलाम रब्बानी 'ताबां'

कोरिया के जां बाज़ों से

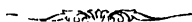
कोरिया के सरफ़रोशो हो कुबूल
एक दूर उफ़तादा साथी का सलाम
राहे आज़ादी में तुम तनहा नही
हम सफ़र है चीन-ओ-बरमा वीत नाम
जाँ बलब मज़लूम महकूमों को आज
दे रहे हो ज़िन्दगी का तुम पयाम
टूट जाता है गुलामी का फुसूँ
ख़्वाब से जब चौक उठते है अवाम

एशिया की लाज रख ली साथियो
सामराजी खा रहे है पेच-ओ-ताब
जुल्मतो की बन्दिशो को तोड़ता
वो उभरता आ रहा है आफ़ताब
सागरे मशरिक में फिर ढलने लगी
जड़बड़ मिल्ली की कैफ़ आवर शराब
टूटी महकूमी की ज़ज़ीरे गरां
हो मुबारक खुल गया ज़िन्दा का बाब

उफ़तादा = दूर पड़ा हुआ. जाँ बलब = जिनकी जान होठों पर आ चुकी है. फुसूँ = जादू-टोना. अवाम = आम लोग, जन साधारण. जुल्मतों = अंधकारो. जड़बड़-मिल्ली की कैफ़ आवर शराब = सामुहिक जीवन के उद्गार की मस्त कर देने वाली शराब. गरा = भारी. बाब = दरवाज़ा.

जंग कैसी ? आज तो तलवार से
 अमन की तुम ढालते हो दाग बेल
 नातवां मुल्को की बेदारी के साथ
 खत्म होगी सामराजी रेल-पेल
 जंग के असबाब जब बाक्ती न हो
 कोई क्या खेलेगा यह मजमूम खेल

मशरिक-ओ-मगरिब का मिट जाणा फ़क
 रास आए तुम को कौमी इत्तेहाद
 इन्कलाबे कोरिया पाईदा बाद !



दाग बेल = कशीदाकारी में जो प्रारम्भिक चिह्न बनाए जाते हैं,
 नातवां निर्बल, असबाब = कारण, मजमूम = निन्दित, निरुद्ध, रास
 आए = मुबारक हो, पाईदाबाद = चिरंजीवि.

जानिसार 'अखतर'

मैंक आर्थर का सच्चा रुकाव

मैं कौन हूँ ? मैंक आर्थर हूँ जानते हो तुम ?

बहुत बड़ा कमाडर हूँ जानते हो तुम ?

मैं डालरो के मुल्क का अज़ल के रोज़ से गुलाम हूँ

इसीलिये तो जंग का इमाम हूँ

बस आज से तमाम कोरिया पे मेरा इक्तरदार है

मैं ईट ईट से बजा भी दूँ, तो क्या है, मुझको अख्तियार है

इसी में ख़ैर है कि मुझ को मौत की तरह से मान लो

मैं आ गया हूँ जान लो

हुज़ूर को तो मुद्दतो से जानते हैं हम

इमाम तो इमाम जंग का खुदा ही मानते है हम

हुज़ूर तो लड़े हुए है हिटलरी सिपाह से

मिला सकेगा अहमन भी क्या निगाह आप की निगाह से

हुज़ूर के कदम के टोकियो के कल्ब पर निशान है

वहा की सरज़मीन के तो आज आप आस्मान है

बस एक बम में हीरोशिमा को तबाह-ओ-पायमाल कर दिया

हकीकतन हुज़ूर ने कमाल कर दिया

हमारी जान-ओ-माल के हुज़ूर ही तो, पासबान हैं

अज़ल = आदिक ल. इक्तरदार = आधिपत्य. अहमन = शैतान.

कल्ब = दिल.

खूदा का फज़ल है कि आप हम पे बेसबब ही मेह्रबान है
 ये कोरिया के लोग तो हुजूर के गुलाम हैं
 ये ख्वाहमख्वाह का फ़साद करने वाले कुछ अवाम हैं

मैं आ गया हूँ, जानते हो मैंक आर्थर हूँ मैं
 बहुत बड़ा कमांडर हूँ मैं
 बढो, बढो सिपाहियो ! डरो नही हममरा नाम लो
 अवाम दुश्मनी से काम लो
 अरे ! ये पुस्त की तरफ़ से कैसे तीर आ रहे हैं, कैसे बार है ?
 हुजूर ! ये तो छापामार हैं
 ये कौन हैं ? अवाम है ?
 हुजूर ही के सब गुलाम है
 बस अब मैं जाऊंगा, सियोल जाऊंगा
 मैं किम पे जाके मोर्चा जमाऊंगा
 न जाइये न जाइये
 हमारे हाल पर न रहम खा सके तो अपनी जान पर तो रहम खाइये
 यह अर्ज भी अजीब है
 तो क्या हुजूर, मौत आपकी बहुत करीब है ?

मगर ये क्या ? मगर ये क्या ??

ज़मीन से ये ज़लज़ले से आज क्यों डबल गये ?

अवाम-दुश्मनी = जनता की दुश्मनी. छापामार = गोरिल्ला. सियोल,
 किम = कोरिया के शहर.

पहाड़ टैंक बन के कैसे चल पड़े ?

ये दस्त-ओ-दर, शजर हजर, ये संग-ओ-खिस्त सब बदल पड़े

कहां से सुख सुख बर्दिया पहन के ये जवां निकल पड़े

बढ़े ही आ रहे है, मानते नहीं, ये सुख नौजवां बढ़े दिलेर है

मगर हुजूर क्यों डरें, ये आदमी है, आप शेर है,

ये क्या ! हमारे पांव के तले से ये ज़मीं खिसक रही है क्यों ?

अरे ये क्या हुआ ! ये चारों ओर आग-सी भड़क रही है क्यों ?

हमारी फौज क्या हुई

वो ऐटलांटिक की मौज क्या हुई

ये फूट का बिगुल बजा रहा है कौन ?

हमारी फूट दूर है, कहो ! अभी मे फूट का तराना गा रहा है कौन ?

“हमारा अज़म कामरां है आज

हमारी सरज़मा पे खुद अलम हमारा ज़रफ़शां है आज

तमाम कोरिया का लाल बाउटा निशां है आज

कहा है मैक आर्थर कहा है आज ?”

ये मेरा नाम भी तो जानते है, हाय क्या करूं !

कहा छिपू ?

अरे मैं घिर गया मैं घिर गया

ये कोरिया तो साफ़ मुझ से फिर गया

दस्त-ओ-दर = जंगल और मैदान. शजर हजर = बनस्पति और पहाड़.

संग व खिस्त पत्थर-भिट्टी. अज़म = इरादा, निश्चय. कामरा = सफल.

अलम = झंडा. ज़रफ़शा = चमकदार लाल बाउटा = लाल झंडा.

बचाइयो बचाइयो

कोई नहीं तो चांम काई शेक तू ही आइबो

तुम्हीं हो दुश्मनों की फौज के कमांडर जवाब दो ?

तुम्हीं हो मैक आर्थर जवाब दो ?

नहीं नहीं मै कोई भी कमांडर नहीं

मै मैक आर्थर नहीं !

मै मैक आर्थर नहीं !!



अली सरदार जाफरी

एशिया जाग उठा

(१)

यह एशिया की ज़मीं, तमदुन की कोख, तहजीब का वतन है
यही पे सूरज ने आँख खोली
यही पे इन्सानियत की पहली सहर ने रुख से नकाब उलटी
यही से अगले युगों की शमश्रों ने इल्म-ओ-हिकमत का नूर पाया
इसी बुलन्दी से वेद ने ज़मज़मे सुनाए
यही से गौतम ने आदमी की समानता का सबक पढ़ाया
यही से मजदक ने अदुल-इन्साफ़ और मुहब्बत के राग छेड़े
हमारी तारीख़ की हवाएँ मसीह के बोल सुन चुकी हैं
हमारा सूरज मुहम्मदे मुस्तफ़ा के सर पर चमक चुका है
और अब हमारे क़दीम आकाश के सितारे
क़दीम आँखों से माउ की सुर्ख़ फ़ौज की शान देखते हैं
यह खाक वह खाक है कि जिसने
सुनहरे गेहूँ के मोतियों को जनम दिया है

तमदुन = संस्कृति. सहर = सुबह. हिकमत = विद्या. क़दीम = प्राचीन.

यह ग्वाक इतनी कदीम जितनी कदीम इन्मों की दास्ताने
अज़ीम इतनी अज़ीम जितनी हिमालिया की बुलन्दियाँ है
हसीन इतनी हसीन जितनी हर्सा अजन्ता की अप्मराएँ
यह अपनी फ़ैयाज़ियो में दरियाए-नील-ओ-गंगा से कम नहीं है
यह गोद बच्चों से और फूलों से और फलों में भरी हुई है

हकीर केलिंग मर चुका है
ज़लील चर्चिल को शायद अब तक ग़बर नहीं है
हमारे खंडरों के नाम भी उनकी सारी बकवास से गराँ है
हमारा विसा मोहजोदाबो से लेके दीवारे-चीन तक है
हमारी नारीख़ ताज और सीकरी से अहरामे-मिल्ल तक है
हमें रवायात के ख़ज़ाने से बाबुल-ओ-नैनवा मिले है
फ़माहता ने हमारे बचपन के होंठ चूमे
बलाग़तां ने बड़ी हर्सा लोरियाँ सुनाईं
ज़बान खोली तो वेद, इंजील और कुरआन बनके बोले
हमारी तख़ईल आसमानो की उस बुलन्दी को छू चुकी है
जहाँ से 'फ़िरदासी' और 'सादी'
'निज़ामी,' 'शैयाम' और 'हाफ़िज़' के चाँद सूरज चमक रहे है
बुलन्दियाँ, जिन पे 'वाल्मीक और पाक 'तुलसी'

अज़ीम = महान. फ़ैयाज़ियो = उदारताओं. हकीर = नीच. गराँ = भारी.
विसा = उत्तराधिकार. अहराम मिल्ल = मिल्ल के परामिड. रवायात =
परम्पराओं. फ़माहतां = सुन्दर बोली. बलाग़तां = सुन्दर वर्णन, वर्णन
कौशल तख़ईल = कल्पना.

‘कबीर’ और ‘सूर’ हुकमरों है
 उन्हीं फ़िज़ाओ की बिजलियों है
 जो साज़े-‘एकवाल’ और ‘टैगोर’ के तरानों में गूँजती है
 जो आज ‘नार्ज़म’ की शायरी में तब्य उठी है
 जो खोह-सो की कहानी बनकर चमक रही है

(२)

गुज़र चुके हैं हमारे सर से
 हज़ारों सालों के तुन्द तूफ़ों
 मुमीबतों की हवाएँ जुलूम-ओ-सितम की आँधी
 न जाने कितने सिकन्दरों की वबाएँ आईं
 हज़ारों चंगेज़ और तैमूर, अनगिनत मान्छू लुटरे
 कहीं से रावन कहीं से जोहाक अपने वालों में साप गूँधे
 कहीं से हेस्टिंगज़ और क्लाइव
 कहीं से डायर कहीं से ववल
 कोई सियह फ़ाम, कोई भूरा, कोई मफ़ेद और कोई पीला
 गरज़ हरेक रंग के भेड़ियों के हमले
 मगर ये अनमोल खाक फिर भी हसीन फिर भी जवाँ रही है
 हमारे रुस्तम हमारे अर्जुन मरे नहीं है
 वो जंगलों और पहाड़ियों में ज़मीन पर काश्त कर रहे हैं

फ़िज़ाओं = वायुमंडलों. वबाएँ = महामारियाँ. जोहाक = ईरान का
 एक ज़ाखिम बादशाह. सियहफ़ाम = कालाभुजंग.

हमारे फूरहाद अब भी तेशे चला रहे हैं
 जवान लैला, हसीन शीरी, कुआरी हीर अब भी गा रही हैं
 शकुन्तलार्ण, घनेरे पेड़ों के मञ्जु गायों में नाचती हैं
 हम एशिया के अवाम सूरज की तरह डूबे हैं और उभरे
 दुखों की अग्नी में तप के निखरे
 हमारी आँखों के आगे कितनी सियाह सदियों की सास दूटी
 न जाने कितने बलन्द परचम
 हमारी नज़रों के सामने सर नुगू हुए हैं
 जलटते देखे हैं तख़्त हमने
 उजड़ते देखे हैं ताज हमने
 हमारे सीने से जाने कितने रथों के पहिये गुज़र चुके हैं
 मगर हम इस भूक, कल, इफ़लास के अंधेरे
 हवादिसे-रोज़गार के तुन्द-आ-तेज़ शोलों में अनगिनत जन्म ले
 चुके हैं
 हम अपनी धरती की कोख में बीज की तरह दफ़न हो गए थे
 मगर नई सुबह की हवा में
 बहार की कोपलों में तब्दील होके बाहर निकल पड़े हैं

(३)

हमारी नज़रों में अगले वक्त्रों के मूरमाओ के कारनामे
 गए युगों के उफ़क धुंधलकों में छिप चुके हैं

काश्त - खेती. परचम = झंडे. सरनुगू = नत मस्तक. इफ़लास =
 दरिद्रता. उफ़क = क्षितिज.

मगर पुराने दिलावरो के पुराने चेहरे
 पुराने गर्दे-ओ-गुबार में जगमगा रहे हैं
 ये बेदिली क्यों
 भिन्नक यह कैसी
 चल ए बनावत के अज़म ए इन्कलाब के आहनी इरादे
 उठादे ए जौक-ओ-शौक तारीख के हक्के-आतर्शा से बढ़कर
 हमारे बीते हुए मह-ओ-साल की नकाबे
 पड़ी वो डंका पे चोट गूँजा वो ढोल की दिल नर्शा सदाए
 हज़ारों तलवारे बिजलियों की तरह से चमकी
 हवा में झंकारे नाच उठ्ठी
 जर्मन की काँपती हथेली पे ज़लजले, ज़लजलो की लहरें
 वो देखो अलमूत की पहाड़ी उभर रही है
 बलन्द चोटी पे एक धोबी
 वो अलमुकन्ना कि जिसकी नज़रो की आग के सुर्ख सुर्ख बादल
 फ़िज़ा में फैले ज़मी पे बरसे
 और अपनी बेताब बिजलियों से
 दयारे बग़दाद में खिलाफ़त की शान-ओ-शौकत को फूँक डाला
 अरब के जागीरदारो भागो
 तुम्हारी फ़ौजो की छावनी पर किसान लश्कर झपट पड़े हैं
 ज़मीन और आसमान शोलो के पैरहन में लरज़ रहे हैं

अज़म = संकल्प, आतर्शा = अग्निमय, मह-ओ-साल = महीना व बरस,
 ज़लजले = भूकंप,

द्वारे-खैबर

जहाँ पठानों के गोल हलकों में नाचते हैं
 और उनकी ढोलक की थाप और गजेब का दिल हिला रही है
 ये आफरीदी हैं और वो मेहमन्द और वो शनवारियों का जिगा
 दफों पे “गैरत” का लफ्ज़ दोर्शाज़ा उंगलियों से लिखा हुआ है
 रबाब के तार “जग और जंग” कह रहे हैं

गुरू कर ए ज़मीने खैबर

कि तुझको खुशहाल खा खतक सा अज़ीम शायर अता हुआ है
 वो ज़िमका हर लफ्ज़ एक रजज़ है

ज़माना और गजेब को भूलता चला जा रहा है लेकिन

वो बागी शायर, वो रहनुमा, सूरमा सिपाही

हरेक सदी में उठेगा खैबर की वादियों से

नई जवानी, नई बहारों, नई तमन्ना का साज़ लेकर

जहाँ कहीं दिल का दर्द होगा

जहाँ कहीं ग़म का सोज़ होगा

जहाँ कहीं हक की बात होगी

किसी भी गोशे में एशिया के

जहाँ कहीं आदमी बगावत का नाम लेगा

वहाँ से खुशहाल खा की ललकार गूँज उठेगी उसके नग़्मे बरम
 पढ़ेंगे

ग़द्दारी के पहाड़ अगड़ाई लेके जागे

दोर्शाज़ा = कुंआरी. गुरू = अभिमान. रजज़ = वीरता के लिये उभारने
 वाले गीत.

जुर्मा का नक्क़ारा तेज़ घोड़ों की तेज़ टापों से बज रहा है

पहाड़ की चोटियों ने तोपों का रूप धारा

चटाने कित्ता की शक्ल लेकर उभर रही है

किमान सैलाब बन के उबले

पलट गईं वक्रत की हवाएँ

उलट गईं सलतनत की चाले

मुग़ल शहंशाहियत को महाराष्ट्र के शेरों ने नोच डाला

किसान, सैलाब, ज़लज़ले, शोर, गीत, तूफ़ान

बगावतें, इन्क़लाब, नारे

ग़दर का हैजान, टाइपिंग का उबाल और बक्सर का तूफ़ान

ये सब दिलेरों के मोरचे हैं

जो तीस सदियों से लड़ रहे हैं

ये सर हमेशा कटा किये हैं

ये दिल हमेशा लुटा किये हैं

ये हाथ गलते रहे हैं लोहे की हथकड़ी में

ये पैर सड़ते रहे हैं ज़िन्दों की बेड़ियों में

जुर्मा अमर है

हवा अमर है

अमर है पानी

अमर अवामी दिलों की धड़कन

जो आसमाँ की खुली फ़िज़ाओं को ढूँढ़ती है

अबाम मरते नहा है सो जाते है ज़मी की मुनहरी मिट्टी में मुह
छिपाकर

वो अपनी मा की मुनहरी छाती में गर लगाकर बहार के रुबाव
देखते है

ज़मीन से काँपले निकलती है और आकाश में मितारे

हवा से वादल-गरज से बिजली

अबाम की राख से बगावत की आग, शोलों में ज़िन्दगानः

सलाम लो एशिया के नाँवें ज़ सरफ़ंगारों की हिम्मतों का

पुराने वक्त्रों के सूरमाओं

गाए युगों के उफ़क से क्यों देखते हो हमको

हम आखिरी जग लड़ रहे है

तुम्हारे हाथों में इब्तदा थी

हमारे हाथों में इन्तहा है

तुम्हारे हाथों में सिर्फ़ तलवार थी, हम

जवान हाथों में वक्त्र-ओ-तारीख़ की अनौ है

हमें तुम अपने जवान शान का ज़ोर अपनी

ओकाबी आँखों का नूर बंदो

बलन्द माथे की रोशनी लेके आओ—आओ

कि हमको मालूम है तुम अब तक मरे नहीं हो

कि तुम कभी भी नहीं मरोगे

अनौ = ललाम. शानो = कन्दो. ओकाबी आँखों = ओकाब पक्षी की
सी आँखों.

किसान फ़ौजों को अपनी अलमूत की पहाड़ी से लेके उतरो
 हिजाज़ और नज्द के खुश आवाज़ सारबानों को साथ लाओ
 हमारे लशकर में आओ तुम अपने ज़र्द दरिया के साहिलों से
 हमारे लशकर में आओ कोहाट और खैबर की वादियों से
 हमारे लशकर में आओ मेरठ के और देहली के मोरचां से
 मुहादरी की चटानें एक बार फिर तरानों से गूंज उठें
 और एशिया के पठार यों कसमसा के जागे
 कि सामराजी दिलों के पत्थर
 लरज़ उठे उनको राजधानी के सारे ऐवान कोप जाएँ

(४)

ये एशिया की ज़मी तमदूदुन की कोख, तहज़ीब का वतन है
 बढ़ाएँ अपनी दुकान पच्छिम के सारे मौदागरों से कहदो
 हमारे बाज़ार में लहू का ज़र्तल ब्योपार बन्द कर दे
 कि उनकी तोपों के और मशीनों के वास्ते अब
 यहाँ से ईंधन नहीं मिलेगा

वह दिन गए, जब

यहाँ तुम आए थे अपनी हस्ती का कोढ़ लेकर
 ज़वान पर बाइबिल थी, हाथों में राइफल थी
 लबों पे मीठी हँसी, निगाहों में ज़हर, दिल में हवस परस्ती
 शिकारी कुत्तों की तरह तुम एशिया की बस्ती में फिर रहे
 ब्रम्हारी रफ़्तार जिस तरह तोप के धमाके

सारबानों = ऊँट चलाने वाले.

तुम्हारी हर साँस जैसे बारूद उड़ रही हो
 तुम्हारी परछाइयाँ वबाओ का पैरहन था
 हमारी आँखों ने फिर यह देखा
 कि बादलों से हमारे आँसू बरस रहे थे
 ज़मीन से कहत, खेत से भूक उग रही थी
 जबान गूंगी थी, उगलियाँ सुन थी, साम बैकैफ़-ओ-वे तरन्नुम
 सितार के तार उंगलियों में उलझ गए थे

वह दिन गए जब
 तुम्हारे हाथों में राइफल थी हमारे हाथों में कुछ नहीं था
 हथेलियों पर फ़कत लक़ारों को गिन रहे थे
 शुमार करते थे आँसुओं का
 मगर गुलामी ने, सैकड़ों साल की गुलामी ने हमको लड़ना सिखा दिया है
 हमारे आँसुओं की बूंदें अब गोलियों में तब्दील हो गई हैं
 तू इस पे फूले हुए हो शायद
 कि च्याग की तरह चन्द भाड़ों के बूँदें टट्टू
 तुम्हारे रथ में जुते हुए है
 कुछ अंधी आँखों के बैल अब भी तुम्हाग कोल्हू चला रहे हैं
 तुम्हारी जंगी मशीन में कुछ
 घिसे हुए टूटे फूटे पुरज़े लगे हुए हैं
 मगर यह ग़द्दार कब तलक काम आरामेंगे

पैरहन = लिबास. कहत = अकाल. बैकैफ़ = बेमज़ा, नीरस. तरन्नुम -
 लय, धुन.

कि एशिया अपनी नींद की कैफ़ियत से बेदार हो चुका है
 हमारी आँखों में आग—तेवर में बिजलियाँ है
 हमारे मीने में दर्द, होंठों पे गीत, हाथों में राइफल है

(५)

यह क्या कहा ! तुमने हमको तहज़ीब और तमदूदन का नूर बख़्शा !
 बजा है, सच है,
 जो तुम न होते तो हम न होते
 नहीं, कोई शक नहीं कि तुमने ज़मीन पर पटरियाँ बिछाईं
 यह दूसरी बात है कि उन पटरियों के नीचे
 हमारी लाशें बिछी हुई थीं
 हमारे साहिल पे तुम दुखानी जहाज़ लाए
 और उन में तोपे खड़ी हुई थी
 हमारे साहिल के ज़रूम अब भी
 लहू के होंठों से दर्द और टीस क़ी ज़बाँ से
 तुम्हारी “तहज़ीब” के कसीदे सुना रहे हैं
 जहाज़ जो तीन सौ बरस से
 समन्दरों पर रवों दवाँ है
 हमारे आँसू करोड़ों आँखों से उन जहाज़ों को देखते हैं
 जो सुबह के नूर से निकल कर अंधेरी रातों में छिप रहे हैं
 वह जिन में हिन्दोस्तान, बर्मा,

साहिल = किनारा. दुखानी जहाज़ = भाप के जहाज़, समुन्दरी जहाज़
 कसीदे = तारीफ़-गीत.

मलाया ईरान, शाम, लघनान, मिस्र, तुर्की, यमन की मेहनत लकी
हुई है

इलायची, जाफ़रान, अगूर, कोयला, टीन, तैल, चावल

रबर, सितारे, कपाम और चादनां भरी हैं

हमे मशीनों से और मिलों में गिला नहीं है

कि जिन पे इन्सानियत की अज़मत की मुर्ग़ मुहरे लगी हुई है

गिला है तुम से

जिन्होंने इन्सान की बनाई हुई मशीनों को डायनों में बदल दिया है

गिला है उनसे

जिन्होंने पहियों में हड्डियाँ एशिया की पीमा

और उनसे चाँदी के ढेर, सोने के ऊँचे ऊँचे पहाड़ उठाए

गिला है उन बूढ़े सूद ख़ोरों से, नफ़ा बाज़ों की साज़िशों से

जो सूत के तार और रेशम की ढेरियों को

निगल के अपने बदन की चर्बा बढ़ा रहे हैं

मगर यहाँ हम

किसान, मजदूर, मोची, धोबी,

कुम्हार, लोहार अपने जिस्मों पे खाल पहने हुए खड़े हैं

हमारी आँखें, जले हुए ख़ाब—और चेहरे

उड़े हुए रंग हैं—दिलों में

सुनहरी आशाओं की चिताएँ भड़क रही हैं

तुम्हारी “तहज़ीब” सब चुकी है

तुम्हारा भूटा “तमदकुन” अपने फ़रेब में दफ़न हो गया है

तुम्हारी 'तहज़ीब' कल-ओ ग़रत का नाच कोड़ो की रागिनी है
 तुम्हारी 'तहज़ीब' भूके बच्चों की माँत मम्रा की खुदकुशी है
 तुम्हारी 'तहज़ीब' दस्तकारों के खून आलूद हाथ दूटे हुए अंगूठे
 तुम्हारी 'तहज़ीब' धूप में सूखती हुई हड्डियों के पर्वत
 तुम्हारी 'तहज़ीब' कन्ने पैकिंग की जली राग्य का हे गाज़ा
 तुम्हारी 'तहज़ीब' ज़हर-ओ-अफ़यून की तिजारत
 तुम्हारी 'तहज़ीब' एशिया की ज़मी पे नंगी पड़ी हुई है

(६)

यह एशिया की ज़मी तमहुन की कोख, तहज़ीब का वतन है
 ज़मी पे तारो का ताज, पैरों में भाग की भोंभनों का नग़मा
 ज़मीन—सदियों पुराना चेहरा
 किसान—सदियों पुराने हाथों में अपने लकड़ी के हल सभाले
 ग़रीब मज़दूर, जलती आखें
 उचाट नादों की तलख़ राते
 थके हुए हाथ, भाप का जोर, गर्म फ़ौलाद की रवानी
 जहाज़, मल्लाह, गीत, तूफ़ान
 कुम्हार, लोहार, चाक, वरतन
 ग्वालिन दूध में नहाई
 अलाव के गिर्द बूढ़े अफ़सानागो, कहानी,
 जवान मांम्रा की गोद में नन्हें नन्हें बच्चों के भोले चेहरे

कल्ल = महल. ज़मी = माथा. तलख़ = कटु. अफ़सानागो = कहानें
 कहने वाले.

लहकते मैदान, गाएँ भैसे
 फिज़ाओं में बांसुरी का लहरा
 हरी भरी खेतियों में शीशे की चूड़ियाँ खनखना रही है
 उदास सहरा पयम्बरों की तरह से खामोश और गम्भीर
 खजूर के पेड़ बाल खोले
 दफों की आवाज़ ढोलको की सदा समन्दर के कहकहे, नारियल के
 पेड़ों की सर्द आहें
 सितार के तार से बरसते हुए सितारे
 अनार का फूल, आम का बौर, सेब-ओ-बादाम के शगूफ़े
 कोठार, खलिहान, खाद के ढेर, क्वारी पगडंडियों की गर्दिश
 बलन्द बांसों के झुंड हँसती धनक के नीचे
 घने जंगल
 पठार, मैदान, रंगज़ारों के गर्म सीने
 गुफाएँ जन्नत की तरह ठंडी
 समन्दरों में कंवल के फूलों की तरह रखे हुए जज़ीरे
 चमकते मूंगों की मुस्कराहट
 वो सीपियों की हंसी, वह संधाल लड़कियों के चमकते दानों की
 तरह मोती
 वो मछलियाँ गोश्त से भरी कश्तियाँ जो पिघली
 सफ़ेद चाँदी में तैरती हैं
 वो लम्बी लम्बी हमीन नदियाँ

जो अपनी मौजों से साहिलों के लरजते हाँठों को चूमती है
 दुल्हन बनी वादियों की नाजुक कमर में भरना के नर्म हलके
 पहलड़ियों की हथेलियों पर धरे हुए नीलगूँ कटोरे
 सितारे मुँह देखते हैं भीलों के आइने में
 हिमालिया के गले में गंगा की और जमना की शोष्य बॉहे
 पहाड़ की आँधियों के माथों पे बर्फ के नीलगूँ दुपट्टे
 बलन्दियों पर खफ़ीफ़ सा इरतआश हलकी सी रागिनी क
 हवा के पैरों में जैसे घुंघरू बंधे हुए हों
 कहीं फ़िज़ाओ में बर्फ़ के फूल उड़ रहे हैं
 कहीं ज्वाला मुखी के शोले
 जो अपनी जुल्फ़ों को पिघले लावे की कंधियों से सँवारते हैं
 हवाओं की उंगलियाँ चनारों के मुख बालों में रगती हैं

ये एशिया है, जवान, शादाब और धनवान एशिया है
 कि जिस के निर्धन ग़रीब बच्चों को भूक के नाग डस रहे हैं
 वो हाँठ जो माँ के दूध के बाद फिर न बाकिफ़ हुए कभी दूध के मजे से
 ज़बाने ऐसी जिन्होंने चक्खा नहीं है गेहूँ की रोटियों को
 वो पीठ जिसने सफ़ेद कपड़ा छुआ नहीं है
 वो उंगलियाँ जो किताब से मस नहीं हुई हैं
 वो पैर जो बूट और सलीपर की शकल पहचानते नहीं हैं
 वो सर जो तकियों की नर्म लज़ज़ से बेख़बर है
 वो पेट जो भूक ही को भोजन समझ रहे है

इरतआश = कपन. शगूँ = कलियाँ. शादाब = फला फूला. मस = स्पर्श.

ये नादिरे-रोज़भार इन्सों
तुम्हे फ़क़त एशिया की जन्नत ही में मिलेंगे
जो तीन सौ साल के 'तमद्दून' के बाद भा 'जानवर' रहे हैं
कहा हो "तहज़ीब" और 'तमद्दून' की रोशनी लेके आने वालों
तुम्हारी 'तहज़ीब' की नुमायश है एशिया में
नज़र उठाओ कर्ग़व आओ
ये कोंद्यों के हुज़ूम दग़ो
ये दग़ो हंज़े का कैं, ये ताऊन की है गिलटी
ये जिस्म क आवले है उस आतिशक़ को गमा
जो एशिया को मिली है, इनआम साम्राज़ी सिपाहियों से
ये पीठ देखो, ये पीठ कितनी हर्सा है जिम पर
तुम्हारे कोड़ों की बढ़िया हैं
ये फ़ासियों पर लटकती लाशें
ये जेल ख़ानों में बन्द इन्सों
ये दिल जो है गोलियों से छलनी
ये आँख की पुतलियाँ जो खून और पीप की तरह बह रही हैं
ये चहरे खड़ों की तरह टूटे
ये हाथ लकड़ी की तरह सूखे
ये पेट मटको की तरह फूले
ये मुफ़्लिसी और यह जहालत की रात बेचाँद और सितारा
ये भूक, ये बेबसी, ये नफ़रत
ये हँसते फोड़े

लटकते घेघे
 दहकते नासूर, चीखते जख्म, रंगते जिस्म, जैमे कीड़े
 तुम्हारी सरमायादार “तहज़ीब” की कहानी सुना रहे हैं
 बुलाओ अपने मुसौविरो और वुत गरो को
 कही ज़माने में इस कदर दर्दनाक चेहरे नहीं मिलेंगे
 तुम्हारी शाहाना यादगारो मे एशिया का
 हर एक कोना भरा हुआ है
 कहीं पे मेहराबे- फ़तह बाँधी
 कहीं रऊनत की लाठ उठाई
 कही पे कांसे के घोड़े डाले
 कही पे पत्थर के वुत बनाए
 मगर ये “तहज़ीब” और “तमद्दुन” की यादगारे कही नहीं हैं
 बुलाओ अपने मुसौविरो और वुतगरो को
 कहो कि इन दर्दनाक चेहरों से एक एक म्युज़ियम सजा दें
 तुम्हारे कारे-अज़ीम को जावदो बना दें

(७)

ज़मीन मोना उगल रही है
 फ़िज़ाएँ चाँदी लुटा रही हैं
 हवाओ में हुन बरस रहा है
 समन्दर अपनी तड़पती मौजों के जाल में मछलियाँ लिये हैं

मुसौविरो = चित्रकार. वुतगर मुर्तिकार. रऊनत = घमंड
 जाविदाँ = अमर.

जमी के सीने पे पेड़, फल, फूल, अनाज, गहराइयों में कानें
 सियाह हीरे, गियह खज़ाने
 हर एक पत्थर की रंग में दाँड़ा हुआ है लोहा
 हर एक परत कायले से पुर है
 ओ तेल के सरबमुह चरमे
 कि जिन में पिघले हुए सितारे भरे हुए हैं
 सुनहरे शहतूत के दरख़्तों पे नर्म रेशम के नन्हे कीड़े
 चमकते पैराहनो, दमकते हुए दुपट्टों पे ख़्वाब पर ख़्वाब बुन रहें
 हसीन पुर जोर आबशारों में बिजलियों की तड़प निहा ह
 हर एक नदी अपने जल की शक्ती से वह रहीं है
 मिलों के पहियों की गर्दिशें, चखियों के नग़मे
 दहकते इंजन के सीने जो आधियों के आगे तने हुए हैं
 मगर हमारे बतन की दौलत
 नदी के पानी की तरह बहती
 किसी भयानक सियह समन्दर में जा रही है
 उदास है एशिया का चेहरा
 बदन है नंगा
 सड़क पे बच्चों का नन्हा नन्हा
 हथेलियों ठीकरो की सूरत पड़ी हुई है
 हजारों बेकार हाथ शानो पे भूलते हैं

पैराहन :- कपड़े, लिबास, आबशार = जल प्रपात.

(८)

कहाँ हो ए एशिया के बेटो ?

तुम्हे ख़बर भी है तुम गुलामों की तरह से नीचे जा चले हो

तुम्हारी कीमत है चन्द डालर

तुम्हें ख़बर भी नहीं मगर तुम

हज़ार पहियों के जंगी रथ में जुते हुए हो

तुम्हारा लोहा पिघल के मौत और जंग का रूप ढालता है

रुई के गालों से कारतूसों के मुँह भरे हैं

तुम्हारे घर बेचराग़, अंधी है लौ दियो की

मगर तुम्हारे शरीफ़ नेता

शरीफ़ आक्ता

तुम्हारी धरती का तेल लोहे के हाथियों को पिला रहे हैं

तुम्हारे मुँह और पेट गेहूँ की रोटियों को तरस रहे हैं

मगर तुम्हारे सुनहरे गेहूँ का चाँदी जैसा सफ़ेद आटा

सियाह बारूद बन गया है

हवाओं के गीत बम के गोलों में दब गए हैं

समन्दरों की हसीन नीलाइयों पे जंगी जहाज़ अपनी

सियाह परछाइयों की चादर बिछा रहे हैं

नज़र उठाओ

फ़िज़ा में शोलों का जाल फैला हुआ है देखो

ज़बान खोलो

और अपने नेताओं, देसी आक्ताओं से ये पूछो

अगर तुम आज़ाद हो तो फिर क्यों बंधे हो लन्दन के अस्तबल में
अगर तुम आज़ाद हो तो न्यूयार्क और पेरिस के गन्दे धूरों पे क्यों
पड़े हो ?

हमारी धरती पे आखिर अमरीकी और अंगरेज़ी लशकरो के पड़ाव
क्यों हैं ?

ये एशिया के अवाम पर जुल्म-ओ-जब्र क्यों है ?

ये जंग किसके खिलाफ़ है ? कौन लड़ रहा है ?

ये साम्राजी निगाहें किस सम्त उठ रही है ?

उधर, जिधर ज़िन्दगी थिरकती है नौ बहारो के पैरहन में

जहाँ पे जुल्म -ओ-सितम नहीं है

जहाँ लड़ाई की कोई तैयारियों नहीं हैं

जहाँ पे बमबारियाँ नहीं है

फ़क़त सितारे है चाँदनी है

सुलूर है, रक्तस है, बहारे है, ज़िन्दगी है

वह सोवियत यूनियन हसीन-ओ-जमील रंगों की मुस्कराहट

जो सारे मशरिक़ को अपने रंगी धनुष की आगोश में लिये है

कहाँ हो ए एशिया के बेटो !

कड़क के बोलो

कहो कि हम नफ़्थ खोरियों के लिये रंगों का लहू न देंगे

कहो कि हम ज़ह घोलने के लिये दिलों के सुबू न देंगे

जब्र = ज़्यादाती, ज़बरदस्ती.

कहो लड़ाई के राजस को हम अपने बच्चों के सर न देंगे
 कहो फि शोलो की नागों को हम अपने आवाद घर न देंगे
 कहो कि ये एशिया की बरती हैं टैंक का रास्ता नहीं है
 उड़ेंगे जिसमें तुम्हारे बमबार अब ये ऐसी हवा नहीं है
 तुम्हें गुज़रना पड़ेगा हरगाम पर तिलंगाना की ज़मी से
 तुम्हारे सर पर पहाड़ बरसेंगे छापा मारो की आस्ती से
 तुम्हारी राहों को चीन और वीत नाम के शेर रोक लेंगे
 तुम्हारी फ़ाँजों को कोरिया के अवाम दोज़ख़ में भोक देंगे
 भँवर के हलके तुम्हारे पैरों में अपनी ज़ंजीर डाल देंगे
 हवाओं के हाथ तुम्हको नाली फ़िज़ा से ऊपर उछाल देंगे
 हम आज बेदार हो चुके हैं तुम्हें अभी तक ख़बर नहीं है ?
 ये बम के गोले उगे हुए हैं हमारे काधों पे सर नहीं है
 डरो हमारी दहकती आग़वा से आग़ की जिनमें नदियाँ हैं
 डरो हमारे तड़पते हाथों से जिनकी जुम्बश में बिजलियाँ हैं
 डरो कि हम एक जहाने-नौ की ज़मी पे तामीर कर रहे हैं
 डरो कि हम खूने-दिल से ख़्वाबों में रंगे ताबीर भर रहे हैं

(६)

उठो उठो एशिया के बेटो ।

मैं तुमको आवज़ दे रहा हूँ

सफ़ेद धोती, सियाह कोट और सियाह टोपी पहनने वाले

मेरे बिरादर ख़फ़ा न होना

मैं पूछता हूँ तुम्हारी टोपी पे मैल क्यों है ।
 तुम्हारा कोट और तुम्हारी धोती फटी हुई है
 मुझी से शरमा रहे हो भाई ।
 जवाब दो, मैं तुम्हारा हमदर्द-ओ-आशना हूँ
 तुम्हारी हालत छिपी नहीं है
 तुम्हारी बेटी के पास स्कूल की किताबें नहीं हैं बीवी के हाथ में चूड़ियाँ
 नहीं हैं
 पुराने जूते की कील तल्लवे में चुभ रही है
 मेरे जवा माल दोस्त हैरान क्यों हो ! मैं अजनबी नहीं हूँ
 तुम्हारा साथी हूँ अब से सौ साल पहले तुम से
 मैं चीन-ओ-बरमा में मिल चुका हूँ
 तुम्हारे हाथों में एक बन्दूक जिसमें पर एक ग्राफी बर्दा
 कि जिस पे गर्द-ओ गुबार की तह जमी हुई थी
 तुम्हारी बर्दा बदल चुकी है
 मगर मेरे दोस्त अपना दुश्मन अभी वही है
 वही पुराना ज़लील, चुराई, साम्राजी
 तुम एशिया के मफूत हो, नौजवा सिपाही
 किसान मांओ के नौनिहाला
 मैं सिर्फ यह कह रहा हूँ अपनी ज़मीन का एहताराम करना
 वतन की दौलत, घरों के दरवाजों के मुहफिज़
 तुम अपनी बहनो के ख़्वाब, बच्चों की मुस्कुराहट के पासबाँ हो

एहताराम = आदर. मुहाफिज़ = रक्षक. गामबां = संतरी.

अरे ये तुम हो !

बताओ तुम अब तलक कहाँ थे !

मैं तुमको एक एक साहिल, एक एक पोर्ट पर ढूँढता फिरा हूँ

मैं तुम से शंघाई में मिला था

ख़बर नहीं कितने साल गुज़रे

अदन के साहिल पे तुम खड़े थे

तुम्हारा बन्दर से मुँह का कप्तान तुमको अकसर

ख़लासी कह कर पुकारता था

फिर एक दिन तुम न जाने किस बात पर यकायक गरज उठे थे

तुम एशिया के तबील साहिल की आबरू हो

समन्दरों पर निगाह रखना

कि दुश्मनो के जहाज़ और डाकुओं के बेड़े

हमारे साहिल के आस पास अब भी तैरते हैं

मेरी बहन ! हाँ, मैं तुमको पट्टिचानता हूँ आओ

करीब आओ

तुम्हारे माथे का खून अब तक थमा नहीं है !

तुम्हारे सीने पे अब भी संगीन का नि.ाँ है

मगर वह सीसे की गर्म गोली

तुम्हारे पहलू को चीर कर जो निकल गई थी

उसे मैं एक एक आदमी को दिखा रहा हूँ

ये देखो मैं इसको हाथ में लेके पूछता हूँ

ये गोली किस मुल्क में बनी है ?

कहाँ से आई है ?

कौन लाया ?

यही है इमदाद जो हमें अपने दोस्त मगरिब के साम्राजी हराम खोरों
से मिल रही है ?

उठो मेरी मा तुम्हारी बेटी मरी नहीं है

वो ज़ख्मी हाथों में सब से आगे

जुलूस में एक सुख भंडा लिये खड़ी है

उठो मेरी मां

तुम अपने सर के सफ़ेद बालों की चाँदनी से

अंधेरी रातों में नूर भर दो

वतन के सीनो को जगमगा दो

तुम्हारे हाथों की भुर्रियाँ मुस्करा रही है

मेरी शरीफ़-ओ-ग़यूर मा अपना मर यमीहाथ अपने बेटों के सर पे
रख दो

हम आखिरी जग लड़ने मैदानों में जा रहे है

तुम्हारी आँखों में अश्क हाथों की भुर्रियाँ मुस्करा रही है

(१०)

जहाँ मैं तूफ़ान आरहा है

कहाँ हो अमरीकी बदमआशों, ये चीन का इन्क़लाब देखो

तुम्हारा मुँह एक ही तमाँचे में फिर गया है जवाब देखो

वो किस तरह मुस्करा रहे हैं शहीद रूहों के ख़्वाब देखो

ग़यूर = स्वाभिमावी, अश्क = आँसू .

चमकती किरनों की जोत पड़ती है एशिया जगमगा रहा है

जहां में तूफ़ान आ रहा है

पुनर्र कर चीन कह रहा है कि एशिया की निजात हूँ मैं

बज़ाहिर एक मुल्क हूँ हकीकत में लेकिन एक कायनात हूँ मैं

जो एस्तालिन के दिल से निकली वो माउ के दिल की बात हूँ मैं

वो बात जिसका हम्रा फ़साना तबील होता ही जा रहा है

जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

ये वो सियासत है जिसने खंजर की नोक से बेड़ियों को काटा

ये वो फ़रासत अटक गया साम्राजियों के गले में कांटा

ये वो सखावत है जिसने खेनों को रोटियों की तरह से बाँटा

ये है वो दाता जो दोनों हाथों से अपनी दौलत छुटा रहा है

जहां में तूफ़ान आ रहा है

अब आज पहले पहल हेसे है गुमों के बेटे दुखों के पाले

वो उंगलियाँ कट गईं हलक से निकाल लेती थीं जो निवाले

फली कुछ इस तरह फ़ुल्ल अब की कि भर गए चावलों के प्याले

किसान खेतों में नाज बोता है और मोती उगा रहा है

जहाँ में तूफ़ान आ रहा है

(११)

ये शाबरी शायरी नहीं है

निजात = मुक्ति. कायनात = सृष्टि. तबील = लम्बा. सियासत = राजनीति. फ़रासत = समझदारी, बुद्धिमानी. सखावत = उदारता. निवाले = कौर.

रज्ज की आवाज़, बादलों की गरज है, तूफ़ान की सदा है
 कि जिमको सुनकर
 पहाड़ आते हैं सब्ज माथों पे बर्फ़ की कलंगियाँ लगाए
 धुएँ के बालों में मृग्य शालों के हार गूँध
 समन्दर आते हैं भाग की भाँकने बनाते
 हवाएँ आती हैं अपने झोंकों की नीलगूँ गोफने घुमाती
 घटाएँ आती हैं बिजलियों पर सवार होकर
 पठार आते हैं अपने काधों पे नदियों की कर्मठ डाले
 चटाने आती हैं अपने गुर्जे-ए-गराँ संभाले
 वो जंगल आते हैं आश्रितों के निशाँ उड़ाते
 वो रेग ज़ारों के गोल अपने दफ़ों पे गते
 बबूल आते हैं अपने काँटों के हाथ उठाए
 दरख्त आते हैं पत्तियों की हरी हरी तालियाँ बजाते
 मनार आते हैं गुंबदों के बलन्द डंकों पे चोट देते
 ज़मीन आती है अपनी ढोलक पे ताल देती
 उजाले आते हैं गर्म सूरज की ढाल उठाए
 अंधेरे आते हैं सर्द तारों के तीर जोड़े
 वो खेत आते हैं अपने पौदों की फ़ौज लेकर
 वो भाड़ भाँकाड़ अपने मीने में छपा मारों के दल छिपाए
 शहीद आते हैं खूँ के होठों से गीत गाते
 सियासी कैदी शिकस्ते-ज़िन्दों के ख़्वाब लेकर

रज्ज = तारीफ़-गीत, गुर्ज = गदा, मनार = मीनार शिकस्ते-ज़िन्दों =
 कारागार के दूटने.

किसान कन्याएँ, जलती आँखों में जलती दोज़ख के बर्म शोले
 जवानियाँ आरिजों की सुखों में रंग-ओ-बुए-मुलाब घोले
 धड़कते सीने शफ़क के आँचल में हुस्न की बिजलियाँ छिपाए
 हथेलियाँ आती हैं हिना के कँवल जलाए
 पियार आते हैं हँसते होंठों के फूल लेकर
 हसीन माँएँ बदन पे फूस्ले-बहार की कोंपलें सजाए
 हुमकते बच्चों की मुट्टियाँ तितलियाँ दबाए
 सितारे पलकों से नूर की कश्तियों को खेते
 किताबें आती हैं गुनगुनाती
 मकान आते हैं आह भरते
 क्लर्क आते हैं अपनी बग़लो में कागज़ी फ़ाइलें दबाए
 हथौड़े आते हैं जंगबाज़ों का दिल हिलाते
 जङ्गल आते हैं राज हंसों का रूप धारे
 वो सिग्नल आते हैं अपने मगरूर सर उठाए
 वो इंजन आते हैं भाप के कहकहे लगाते
 ब्वाएलर आते हैं जहन्नम पे मुस्कराते
 वो पहिये आते हैं साम्राजि हरामखोरो का सर कुचलते
 खनकती रंगीन चूड़ियाँ जैसे कृष्ण के चक्र को धुमाती
 चमकते टीके भवों की तिरछी कर्माँ उठाए
 वो आँखें आती हैं जिन में अपने ग़मों का काजल लगा हुआ है
 वो होंठ आते हैं जिन में कीलें ठुकी हुई हैं

आरिजों = गालों, शफ़क = ऊषा, हिना = मेंहदी, मगरूर = घमंडी,

वो हाथ आते हैं जिनको धोया गया है शबनम के आँसुओं से
 वो हाथ आते हैं जो हत्तों को चला रहे हैं
 वो हाथ आते हैं जो मशीनों को चू रहे हैं
 वो हाथ आते हैं जिन में भंडे उगे हुए हैं
 वो हाथ आते हैं जिन पे नज़में लिखी हुई हैं
 वो हाथ आते हैं जो कहानी मुना रहे हैं
 वो हाथ आते हैं जो सितारे बना रहे हैं
 वो हाथ जो बिजलियों की गर्दन पकड़ रहे हैं
 जो संग-ओ-आहन से अपना पंजा लड़ा रहे हैं
 वो हाथ जो सारियों को रंगों की नांद में डूब दे रहे हैं
 वो हाथ जो अपनी उंगलियों से ज़मी की तकदीर लिख रहे हैं
 अब एशिया की ज़मी पे हाथों का एक जंगल उगा हुआ है
 ये संगे-मर्मर की संगे-असवद की मुठियाँ हैं
 कँवल की कलियाँ, कपास के फूल, बम के और नारियल के गोले
 कहाँ है ए नौ उरूसे-सुबहे-बहार आजा
 हमारी बेताब मुठियों में
 शफ़क़ का सेंदूर

चाँद तारों के फूल

किरणों की सुर्ख़ अफ़शाँ भरी हुई है



संग = पत्थर. आहन = लोहा. संगे-असवद = काला पत्थर. नौ
 उरूस = नई दुल्हन.

जमीलुद्दीन 'आली'

सब गीत मेरे !

ख़ुद बिकवूँ या कोई और लिखे

सब गीत मेरे

कुछ सुनते हैं, कुछ गाते हैं

संगीत मेरे

सायों की तरह बे नूर आँखें

बागों की तरह मसरूर आँखें

कुछ मौत की छाँव में सोई हुई

कुछ शक्ती से भरपूर आँखें

सब गीत मेरे

कोई फुलवारी मुर्झाई हुई

या कोपल हो इतराई हुई

कोई टूटी नाव पुरानी हो

या मौज नई बल खाई हुई

सब गीत मेरे

महलों के करीने हैं इन में

ग़ारों के ख़ज़ीने हैं इन में

कुछ वह दुख जिनसे अशक वने
कुछ दर्द कर्मने है इन में

संगीत मेरे

हर नर्म रमाले प्यार में है
हर जहरीले हाथियार में है
हर हँसते हुए लब पर रङ्गमा
हर आँसू की झनका में है

संगीत मेरे

गुद लिखूँ या कोई और लिखे

सब गीत मेरे

कुछ सुनते है कुछ गाते है

संगीत मेरे



सरदार जाफरी

सोवियत यूनियन

ये सोवियत की सरजर्मा जो फ़ख़्ते रोज़गार है
मुहब्बतों की अन्जुमन जो सब की दोस्तदार है

बदल दिया है मौसमों को जिसने वो हवा है ये
नये सितारे नाचते हैं जिसमें वो फ़ज़ा है ये
जो ज़िन्दगी को मोह ले वो दिलरुबा अदा है ये

ये इस्त्र की ज़मीन है, ये हुस्न का दयार है

मिलो में, खेतियों में, मेहनतों की हुक्मरानियां
टरेक्टरों के गिर्द नाचती हुई जवानियां
सुरूर, कैफ़, शेर, नग्मा, दास्तां, कहानियां

ख़िज़ां का नाम भी नहीं बहार ही बहार है

धिरक रही है ज़िन्दगी फ़राग़तों की छांव में
हसीन गीत तैरते हैं नीलगूँ फ़ज़ाओं में
यहां ग़मों की बोझियां नहीं किसी के पाँव में

न कोई अश्क़बार है न कोई सो गवार है

यहां कोई हराम ख़ोर माल जोड़ता नहीं
यहां कोई किसी की रग से खूँ निचोड़ता नहीं
कोई किसी के बाग़े दिल से फूल तोड़ता नहीं

यहां न सूदख़्तार है न कारख़ानादार है

फ़राग़तों = चिन्ता रहित दशाओं, अवकाशों.

दरज़, फूल, फल, बहार आदमी के वास्ते
जमीन, खेत, कोहसार आदमी के वास्ते
शिकोह-ओ-अज़मत-ओ-धकार आदमी के वास्ते
यहां हर एक शौ पै आदमी का अख्तियार है

ये दुश्मनो के साथ अपना ज़ोर आजमा चुके
ये ज़रगरी की साज़िशों को खाक में मिला चुके
ये लूट और खसोट की बिसात ही उठा चुके
अब उनकी मेहनतों से उनकी खाक लालाज़ार है

न कोलचक पनप सके न डेनकिन उभर सके
न साम्राजवादियों के दिल के घाव भर सके
न पापियो के डूबते हुए जहाज़ तर सके
जमाना सिर्फ़ इस्तराकियत को साज़गार है



वक्कार = इज़ज़त, अख्तियार, दबदबा. कोलचक, डेनकिन = रूस की
क्रांति में इन सेनापतियों द्वारा साम्राजी शक्तियों ने क्रांति को कुचल देने
का विफल प्रयास किया था. इस्तराकियत = साम्यवाद. साज़गार = अनुकूल,
लाभदायक.

रघुपति सहाय 'फिराक'

धरती की करबट

तोड़ा धरती का सजाटा
किसने ? हम मजदूरो ने
डंका बजा दिया आदम का
किसने / हम मजदूरो ने

दुनिया की अंधी नगरी में
जगमग दीप जलाया किसने ?
जग में रंगा रंग चमाचम ?
यह बाज़ार मजाया किसने

ओट में छिपी हुई तहजीबों
का घूँघट सरकाया किसने ?
शरमीली तकदीर की देवी
का आंचल ढलकाया किसने ?

काम चोर सपनों की काया
में शोला भड़काया किसने ?
बदन चोर इस प्रकृति कामिनी
का सीना धड़काया किसने ?

भरत परत को इस धरती के
साथी, खोल दिया है किसने ?
छिपे दफ्तीनों पर कुदरत के
धावा बोल दिया है किसने ?

जीवन के समुद्र मंथन में
हमने भंवर क्या डाले हैं
भव सागर से इन हाथों ने
क्या क्या रतन निकाले हैं

वन उपवन थे, हर काँटे से
हंसता फूल खिलाया किसने ?
पत्थर के पथरीले दिल को
तप तप कर पिघलाया किसने ?

इस ऊसर बंजर धरती पर
धन का ढेर लगाया किसने ?
इस भूकी प्यासी दुनिया में
हुन पर हुन बरसाया किसने ?

हर आफ़त से हर मुश्किल से
मजदूरों की जोड़ रही है
उलटी पलटी आड़ी टेढ़ी
तकदीरों से होड़ रही है

क्या ये वही दुनिया है साथी
कल जो फटे हाल में फिरती थी ?
क्या ये वही बेचारी है जो
बार बार उठ कर गिरती थी ?

ससथी बोल, लहू खौला कर
जीवन रूप रचाया किसने ?
इस नंगी उजड़ी दुनिया को
सज कर दुल्हन बनाया किसने ?

नभचुम्बी शिखरो पर साथी
हम बेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए भिम्भके
ताल ठोंक कर बढ़ आते थे

आकाशो के पातालो के
दिल का चोर निकाला किसने ?
खाली था, भर कर छलकाया
इस जीवन का प्याला किसने ?

अपनी कमर के बूते से हम
पेग चढ़ाते है जीवन की
दो भटको में हिला कर रख दें
साथी चूलें इन्द्रासन की

सरकश पंचभूत का गद्दा
हमने भटक के तोड़ दिया है
जिस किस्मत की मार ग़ज़ब थी
उसका पंजा मोड़ दिया है

दह की हर तख्तीबी क़बूत*
को साँचे में ढाल लिया है
कुदरत के चैलेंज का हमने
कल्ला तोड़ जवाब दिया है

खून पसीने के हिलोर में
तद्बीरे* मुंह देख रही हैं
इम लहराते आईने, में
तकदीरे* मुंह देख रही हैं

* दुनिया की हर एक विनाशकारी शक्ति.

अपने कस बल से सीनो में
तूफ़ानों को बन्द किया है
सधे हुए सौ सौ हाथों से
भूचालों को थाम लिया है

लाख जतन से जीवन खेती
मुरझाने से रोका किसने ?
सूरज की इस अग्नि गेंद को
किसने उछाला ? लोका किसने ?

कई बार रहतीहनिया की
आई को हम टाल चुके हैं
कई बार तक्रदीरे-जहाँ की
आँखों में आँखें डाल चुके है

जब फ़ावो पर फ़ाँके थे
जब कोई उम्मीद नहीं थी
हमने जहाँ उंगलियाँ रख दी
नबजें चलने लगीं दुनिया की

इस अधमरी दलित दुनिया को
अपने लहू से अमर किया
सुन लेना रन बोल उठेगा
मौत को हमने जीत लिया

जिस दम हल्ला बोल दिया है
शरिया, सहारा, काँप उठे है
हम से टक्कर लेकर साथी
परब्रह्म, सागर, हाँप उठे हैं

चौद और सूरज की किरनो से
चादर बुन कर रख देते है
हसी हर्थाड़े की ज़रबों से
लोहा धुन कर रख देते हैं

करके बराबर रख देते है
ऊबड़ खाबड़ पेच-ओ-ख़म
कड़े कोस नरमा देते है
अपने थरती-तोड़ क़दम

ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींद की दुनिया जाग उठती है
डुकरा दे जिस पड़ी शिला को
बन के अहिल्या जाग उठती है

यूँ गुदगुदा दिया है हमने
संग का पहलू फड़क रहा है
यूँ उकसाया है जड़ता को
पत्थर का दिल धड़क रहा है

जान डाल दी तस्वीरों में
यूँ हर ख़त चमकाया हमने
लौ दे उठते हैं वह नुक्ते
चूम लिया है जिनको कलम ने

नाम उभरने का न कभी ले
पेच-ओ-ख़म में निगाह जो डूबे
नक्काशी के अमर मोज़े
मीनाकारी के वह अजूबे

ज़रबों = चोटों. संग = पत्थर. ख़त = रेखा. मोज़े = चमत्कार.

इन हाथों की गुलकारी में
 मुबह्ने बहार सांस लेती है
 हमने दबा दी है वह आँखें
 मिट्टी लौ पर लौ देती है

चौड़ी बुजों को जो देखे
 शत्रुकुल-कमर याद आ जाए
 बुतखानों के चप नगर में
 सेहरे-सामरी गूँस खा जाए

यूँ जगमगा दिया धातों को
 हो ठहराव पे चाल का धोका
 साफ़ आखों को हो जाता है
 जामिद पर सय्याल का धोका

इन्हीं खुरदरे हाथों का जस है
 या सच्चाई बोल उठी है
 देख ज़रा बच्चों के खिलौने
 साथी, मिट्टी बोल उठी है

बेल और बूटों के पर्दे में
 हमने क्या क्या काम किये हैं
 मुँह बन्धी कलियों की गिरहों में
 हमने शोले बाध दिये हैं

शत्रुकुल-कमर = मुहम्मद साहब ने एक बार इशारे से चाँद के दो
 टुकड़े कर दिये थे. सेहरे सामरी - जादूगर का जादू. जामिद = जड़.
 सैयाल = तरल. सच्चाई = शिल्प कला.

महरमे आबे-रवां—छुनती है*

सात तहों से बदन की ज्योत
पदे पदे में रह रह कर
जैसे जागे मन की ज्योत

बारह अब रत्न सोलह सिंभार
गोकुल की राधा सजती है
इस दुनिया के बृन्दावन में
किसकी बंसी बजती है

कोख उजड़ जाए धरती की
फूट जाय मानव का भाग
याद रहे हम उठ जाएँ तो
लुट जाए दुनिया का सुहाग

हाथ हमारा हो घर घर में
लेके चरागे-शाम आया है
बुनियादो से रहा रहा
खून हमारा काम आया है

कड़ी चटानों के, तेशे से
हमने सीने फाड़ दिये है
चार खूँट रहती दुनिया में
हमने भँडे गाड़ दिये है

*शाहजादी जैबुलिसा औरंगजेब के दरबार में ढाका का आबे रवां
सात तह करके पहन कर आई थी तब भी औरंगजेब ने कहा था—
“बेटी तुम नंगी हो.”

इस भरती को छूकर हमने
चाँद सितारों को छेड़ा है
करके बसर काँटों पर साथी
हमने बहारों को छेड़ा है

अकसर इस भरती की छीटे
देव लोक पर पड़ जाती है
आज इसी दुनिया की आँखे
इन्द्रपुरी से लड़ जाती है

अपने इरादों की उठान में
रूहे-तमदुन की बरनाई*
इन्ही हथौड़ों के सरगम में
**तारीखों ने ली अँगड़ाई

मुहिनजदाई और हड़प्पा
लाल किला और ताज महल
देख यलोरा और अजन्ता
कपिलवस्तु का राज महल

रूम, यूनान की वह फनकारी*
मिख देश के वह अहराम
कुस्तुनतुनिया के कंगूरे
कल्ले कै, कल्ले बहराम†

*सभ्यता की आत्मा का जवान होना.

**इतिहासो.

*कलाकारी.

†चक्रवर्ती राजा केकाउस और शाह बहराम के राज महल.

काशी, दिल्ली, इलियम, पीसा‡
 के वह धारहरे मीनार
 उज्जैन और शीराज और गजनी
 अल हमरा के दरो दीवार

नीले सपनों की मिलमिल में‡
 एटलांटिस का वह जल—सेज
 जुग जुगान्तर के विसे को
 पीढ़ी पीढ़ी दिया सहेज

मारीशस, कीनिया, टंगानिका
 लंका, बन्का, सिंगापुर
 यह किसने लहलहा दिया है
 जल थल को नजदीक और दूर

भलक रहा है नगर मास्को
 नव युग का वह जरोसलम
 वह जादू निर्माण कला के
 लेनिनग्राड और नीपरडैम*

भूमंडल पर जुग का जुग से
 रिश्ता नाता जोड़ आए है
 कदम कदम पर बस दुनिया में
 अपनी निशानी छोड़ आए है

- ‡ पीसा नाम का नगर इटली में है जहाँ का तिरछा मीनार मशहूर है.
 ‡ कहा जाता है कि अब से कई हजार बरस पहले इटली में रूम सागर से के तट पर एटलांटिस नामी एक बहुत बड़ा नगर बसा हुआ था, जो अचानक रूम सागर में डूब गया.

सहरा को जो चमन बना दें
ऐसे दीवाने कम होंगे
आँख उठा कर हृद्दे नज़र तक
देखोगे तो हमी हम होंगे

“पत्ता पत्ता, वूटा वूटा
हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने
बाग़ तो सारा जाने है”†

घन घन घन अनगिनत मशीनो
के पहियो का चक्कर खाना
यह घड़ घड़ घड़, यह ज़ीरो बम*
सय्यारो† का मिल कर गाना

दहड़ दहड़ जलते फ़रनेस से
सूरज-मंडल झपक गया है
अन्धकार के सीने में भी
अकसर कौदा लपक गया है

लाख करबटे लेता शोला
बज़्र को भी पिघला देता है
ब्बायलर हौक रहा है गोया
ज्वालामुखी सांसे लेता है

† यह लाइनें महा कवि 'मीर' की हैं.

* रुस में नेपर नदी के बांध पर पानी का सब से बड़ा ख़ज़ाना.

• ज़ीरो बम = ताल सम.

† सय्यारो — नज़्ज़रो.

बरसाती है फूल अंजन के
 लाल अंगारों की बौछारें
 सुनों खनकते कल पुर्जों में
 सौते-सरमदी की भनकारे ‡

यह मशीन की गड़गड़ाहटें
 धरती की छाती हिल जाय
 धुंआँ चिमनियों से उठता है
 गत पर जैसे नाग लहराय

जीवन की काली रातो का
 धरती जहाँ पता देती है
 गाती हुई मशीनों की लय
 वहाँ चराग जला देती है

रेलों की घन गरज, जहाजों
 का वह सागर-फाड़ बढ़ाव
 साफ़ मण्डलाकार फ़ज़ा में
 तैय्यारों का निडर चढ़ाव*

नदियों का मुँह मोड़ दिया है
 वीराना लहराता है
 रेगिस्तानों में अब पानी
 गगन खेलता जाता है

मज़दूरों के करामात हैं
 मज़दूरों के पस्त-ओ-बलन्द
 किस करवट से चन्द्रलोक पर
 फेंकी है बेलाग कमन्द

‡ सौते सरमदी = स्वर्गीय संगीत. * फ़ज़ा = वायुमण्डल, तैयारों = जहाजों.

कर्मयोग की महाशक्ति को
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवन के शेष नाग को
इन हाथों ने नाथ लिया है

हम दुनिया के चलाने वाले
और हमीं पामाल, यह क्या है ?
हम दुनिया को बचाने वाले
और इतने बदहाल, यह क्या है ?

हमको भूका रख कर हमसे
धन कुबेर का काम लिया है
अपनी दशा सोच कर अकसर
हमने कलेजा थाम लिया है

साथी मरता क्या नहीं करता
किस किस पर इल्जाम धरे
जम जम जिये यह प्यारी दुनिया
लेकिन हम बे मौत मरे

अपने पसीने का जम जाना*
धन, पूँजी, सरमायादरी
सब अपने ही लहू से पले हैं
सेठ, महाजन, राज-अधिकारी

सब अपनी ही घमा घमी है
आए दिन जो माल उड़ते हैं
सब अपनी ही लहर बहर है
अपने लहू से गुलाल उड़ते हैं

* "Capital is congealed labour"—Marx.

हमको निधन रख के इन्हो ने
पाट लिये है अपने खज़ाने
हमें उजाड़ के इन सेठा ने
सजा लिये अपने काशाने*

बाग में बस इनको ज़हरीले
कोटे बोना आता है
इनके अनर्थ को देख देख कर
साथी, रोना आता है.

कैसा अपना देस, अपना घर
साथी अपना बस है उतना
फटे नाखुनों में जितना है
टुकड़ा भारत की मिट्टी का

पानी में यह आग लगा दें
सेठ, महाजन, एक काइयाँ
जंग की घातें सुलह की बाते
धमा चौकड़ी उड़ घाइयाँ

जब जब जंग छिड़ी देशों में
जो भी पड़ी हम पर ही पड़ी
भुस में चिड़ी देकर साथी
देख जमालो दूर खड़ी.

अरबों के है वारे न्यारे
दांव भी है दोहरे दोहरे
चाले इनकी बाज़ी इनकी
हम हैं बस शतरंज के मोहरे

*काशाने = बड़े बड़े घर या महल.

यह हमसे इनसाफ़ करेंगे ?
 क्या बकते हो ?—राम कहे
 इनके बही खाते से हमें क्या
 लेना एक न देना दो

यह और उगले अपना मुनाफ़ा ?
 कह मुन कर सब द्वार गए
 नोटों के, सोने चाँदी के
 यह तो पहाड़ डकार गए

नर्म भी पड़ के, गर्म भी पड़ के
 दुनिया [को देते है भरें
 यह जीवन का रथ खींचेंगे ?
 राह के अड़ियल, थान के टरें

काले रुपयों* से बेखटके
 भरते गए यह अपनी तिजोरी
 सब भौचक्के रह जाते थे
 करता कौन इनसे बरजोरी

यह सब मर्दुमख़ोर हैं साथी
 इनके साथ मुरौबत कैसी
 यह दुनिया है इनकी मिलकियत
 इस दुनिया की ऐसी तैसी

निपटो अब बिफरी जनता से
 कश्मी धरनी ले कर चाटो
 मुट्ठी भर भर के दुनिया में
 बोई हवा बवंडर काटो

सङ्गीनों से बन्दूकों से
 तुमने किये हज़ारों बार
 बारी है अब मज़दूरों की
 “इक कचलोहिया आड़ो हमार”

(आल्हा)

दबसठ से कब काम चला है
 लोहा ही लोहे को काटे
 साथी सुना नहीं क्या तूने
 सीधे का मुँह कुत्ता चाटे

खेत्यौनी में खड़ग-खम्ब में
 सब में व्यापे हम हुशियार
 इन्हीं ड्योढ़ियों के खम्बों से
 लेंगे हम नरसिंह औतार

बेकारी, भुकमरी, लड़ाई
 रिशवत और चोर बाज़ारी
 बेबस जनता की यह दुरगत
 सबकी जड़ सरमायादारी

ठोकर पर ठोकर खाके भी
 अपनी मंज़िल से बेग़ाने
 आँख के अंधे नाम नयनसुख
 हमको चले हैं राह बताने

आज बही खाते वालों से
 सदियों का लेखा हम लेगे
 आटे दाल का भाव खुलेगा
 जिस दम जमा खर्च समझेगे

लाल, जवाहर, सोना चाँदी
कोमिटॉग पर किया निष्ठावर
क्यों न हो ? डालर साम्राज का
नाच रहा था भूत जो सर पर

उस दौलत से अमरीका का
जोबन और सँवारा होता
आज अमरीका एक ज़माने की
आँखों का तारा होता

बैंको, मिलो, कारखानों को
हम जो हाथों में ले लेते
हुन बरसा देते साथी हम
देश को सोने से मढ़ देते

यू. एन. ओ. में यूनेस्को में*
रूस पे दोष लगाते जाओ
करके बेहया तक्करीरें तुम
अपनी भोंप मिटाते जाओ

जापान और पच्छिमी जर्मनी
यूनान, इटली, यूगोस्लाविया
कश्मीर और नेपाल और तिब्बत
साउथ कोरिया और मलाया

तोड़ फोड़ में हर्ज नहीं है
कुछ तो करें जब जी ललचाए
चोर अगर चोरी न करे तो
हेराफेरी से भी जाए

चीन को मत तसलीम करो
 यारो ने ढब क्या क्या सोचे
 ठीक तो है, खिसियानी बिल्ली
 कुछ न बने तो खम्मा नोचे

अब फ़ारमूसा पर नज़रे है
 गो यह जगह है निहायत छोटी
 लेकिन अब इसको क्या कीजे
 भागे भूत की बहुत लंगोटी

चीन से जब निकले तो तुमने
 हिन्दी-चीन मे टॉग अड़ाई*
 बट गए नए अखाड़े में तुम
 और जो यहाँ भी मुंह की खाई?

मार्शल एड, एटलांटिक-पेक्ट
 खाने तक पक भरते जाओ
 इसी तरह दुनिया भर में तुम
 गड़बड़, सड़बड़ करते जाओ

वाल स्ट्रीट के सट्टे बाज़ो
 कांप जाओगे इस लशकर से
 हिटलर, च्यांग के उड़ा दिये सर
 जिसने अपनी ठोकर से

जङ्ग से तुमको लाभ हुआ जो
 उसको जोड़ो और शरमाओ
 कण्ठ में अटकें जीत के दावे
 गिनो अगर तुम रूस के घाव

तुमने हिटलर को शिकस्त दी
कहते शर्म नहीं आती ?
इतने दांत तुम्हारे मुँह में
भूट की आंखें हैं मुक जाती

ज़बरदस्त जर्मन फ़ौजों से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीते हुए दुश्मन को भगाते
बर्लिन पहुँचे तुम या रूस ?

निगल लिये जाने पर किसने
पेट अजगर का फाड़ दिया है ?
सब से पहिले राइचसटाग पर
किसने मंड़ा गाड़ दिया है ?

आज रूस फुँक जाने पर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुम पर आंच न आई लेकिन
बाग़ तुम्हारा सूख चला है

दुनिया भर बाज़ार है जिसका
एक मंड़ी हेरा फेरी की
उस अमरीका की यह हालत ?
यह बेकारी, धत तेरी की*

ठंडी लड़ाई आखिर कब तक
एक दुनिया से रहेगी जारी
अमन के सच्चे दिलदारों से
बात न की, तुमने मक मारी

* इस समय अमरीका में एक करोड़ मज़दूर बेकार हैं.

दुम में रस्ता बांध चुके है
 ठोकर देंगे, धक्का देंगे
 उसी घड़ी हम दम लेंगे जब
 चोर को घर तक पहुंचा देंगे

अब क्यो देर लगाये' साथी
 अब तो कमर दुश्मन की ख़म है
 आधी दुनिया जीत चुके हैं
 अब तो मंज़िल चार कदम है

दुनिया नई बसायेंगे हम
 सुन्दर साज सजा देंगे
 धन्ना सेठों के महलों की
 ईंट से ईंट बजा देंगे

दुनिया हाथ नहीं आती है
 दुनिया ले ली जाती है
 किस्मत नहीं बदलती साथी
 किस्मत बदली जाती है

मज़दूरों की दुनिया जागी
 कटते कटते रात कटी
 वह आकाश कलस हिलते हैं
 धरती ने करवट बदली

दुनिया जिसे "आज" कहती है
 संगम कई जुगो का है
 बीता हुआ "कल" औरो का था
 आने वाला "कल" अपना है

सर्वोदय के सुख सपने में
कौन पुकार रहा है साथी ?
जीवन सागर नई दिशा में
ठाठे मार रहा साथी

कोई दिन की बात है साथी
मजदूर अब मजबूर नहीं है
जब हो ज़मीं पर अपनी खुदाई
साथी वह दिन दूर नहीं है

[नई दुनिया]

रूस, चीन की कम्पित किरनें
नवप्रभात की आभा लाईं
नवजुग का संदेशा लाईं

उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम
आगे, पीछे, ऊपर, नीचे
देश देश में दुनिया भर में
तोड़ रही है दम तारीकी
सुर्ख सवेरा होने को है

भारत के आकाश पे साथी
उदयाचल की ओट से साथी
वह रक्तिम पौ फूट रही है

अंगड़ाई तोड़ता एशिया
बंद आंखें मलता अफ़रीक़ा
दमन दलित हबशी अमरीका
बहरी ज़िन्द-से चौक उठे हैं

देश देश में महा क्रान्ति की
 रनचंडी हुंकार रही है
 सौ बल खाती हुई कुचल कर
 या नागिन फूफकार रही है

कारीगर, मज़दूर, किसान
 कड़ियल और बिगड़ेल जवान
 काँधे से काँधा जोड़ेंगे
 दुनिया पर धावा बोलेंगे

धरती का तख़्ता उलटेंगे
 दुनिया में सर्वोदय होगा
 नया समाज आखें खोलेंगे
 नई सभ्यता कायम होगी

ज़रा ज़रा जाग उठेगा
 कतरा कतरा जाग उठेगा
 पत्ता पत्ता जाग उठेगा
 बूटा बूटा जाग उठेगा

कोना कोना जाग उठेगा
 चप्पा चप्पा जाग उठेगा
 तप्पा तप्पा जाग उठेगा
 क़स्बा क़स्बा जाग उठेगा

सूबा सूबा जाग उठेगा
 दरिया दरिया जाग उठेगा
 सहरा सहरा जाग उठेगा
 जीवन सपना जाग उठेगा



सैयद मुत्तलबी

२६ जनकरी

(इसी तारीख को हम आज़ादी से पहले स्वतंत्रता दिवस मनाते थे और इसी तारीख को नव विधान लागू हुआ और भारत स्वतंत्र जनराज बना, यह सब होते हुए भी देश की जो असली हालत है इस कविता में उसकी सच्ची तसवीर खींची गई है—सम्पादक]

है ज़ुलूम वही अंगूर वही रिसता है अभी नासूर वही

बरसात की वह घंघोर घटाएँ, जाड़ो की तनहा रातें
जेल की बहरी दीवारें, मायूस अज़ीज़ों की यादें
अगियार के वह सब जोर-ओ-सितम, वह रंजो महन वह फुरियादें
ए यौमे-मुकद्दस तेरी कसम, भूला नहीं मैं उन यादों को

है ज़ुलूम वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही

और भूल सके कोई कैसे, वह दर्द भरी बिपता सारी
कितनी जानें भेंट चढ़ी, जब मुल्क ने आज़ादी पाई
आई वो किसी की महफ़िल में पर हमको झलक कब दिखलाई
आज़ाबी मिली नवाबों को, राजाओं को, शहज़ादों को

हैं ज़ुलूम वही, अंगूर वही रिसता है अभी नासूर वही

यौमे मुकद्दस = पवित्र दिवस.

आज़ाद हुए है मिल मालिक, आज़ाद हुए धनवान सभी
 आज़ाद हुए सारे टोड़ी दुखिया है मगर इन्सान सभी
 मज़दूर की लूट है उतनी ही, हैं उसके लिये जजमान सभी
 जब जेल वही मक़तल भी वही, फिर कोसिये किन जन्मादों को
 हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही
 ए रावी के जल की धारा, हो याद तुम्हें वो नज़ारा
 वो जोश से भंडा लहराना, जनता की गरज और जयकारा
 वो अहद वो पैमों और वो क़सम, अषना है अभी वो ही नारा
 जब सैद अभी तक है जनता, तो भूलिये क्यों सैयादों को
 हैं ज़ख्म वही, अंगूर वही, रिसता है अभी नासूर वही



टोड़ी = खुशामदी, गुलाम. मक़तल = जहाँ लोग क़त्ल किये जायें.

